घटती घटना

सत्य के साथ...जनहित में बात...

www.ghatatighatana.com **अम्बिकापुर,वर्ष 22, अंक - 303- शनिवार 05- सितम्बर 2026,पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये** RNI Reg.No.- CHHHIN/2004/15050,**डाक पंजीयन. क्रं.** 13/Surguja DN/ 2026-2028

भारत की अंतरिक्ष ताकत ने रचा नया इतिहास,EOS-05 का सफल प्रक्षेपण

GSLV-F17 ने 36 हजार किमी ऊंचाई पर जियोसिंक्रोनस ऑर्बिट में पहुंचाया अत्याधुनिक अर्थ ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट,प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी समेत कई नेताओं ने इसरो को दी बधाई...

नई दिल्ली,04 सितम्बर 2026। भारत ने अंतरिक्ष क्षेत्र में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने शुक्रवार सुबह आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से GSLV-F17 रॉकेट के जरिए देश के पहले इमेजिंग अर्थ ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट EOS-05 का सफल प्रक्षेपण किया। उपग्रह को करीब 36 हजार किलोमीटर की ऊंचाई पर जियोसिंक्रोनस ऑर्बिट में स्थापित किया गया। सफल प्रक्षेपण के बाद देशभर से इसरो की टीम को बधाइयां मिलने लगीं। प्रधानमंत्री मोदी ने इसे देश के लिए गर्व का क्षण बताते हुए कहा कि GSLV-F17 की सफल उड़ान भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र में उत्कृष्टता, नवाचार और बढ़ती क्षमताओं को प्रदर्शित करती है। उन्होंने इसरो और भारतीय उद्योग के बीच बढ़ती साझेदारी को भी देश के अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए महत्वपूर्ण बताया। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि जियोसिंक्रोनस ऑर्बिट में स्थापित EOS-05 भारत की पृथ्वी-अवलोकन क्षमताओं को और मजबूत करेगा। उन्होंने कहा कि इसरो और भारतीय उद्योग के बीच बढ़ता सहयोग स्वदेशी क्षमताओं को मजबूती देने के साथ अंतरिक्ष क्षेत्र में नए अवसरों के द्वार खोल रहा है। केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. जितेन्द्र सिंह ने इस उपलब्धि को अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत की एक और बड़ी कामयाबी बताया। उन्होंने कहा कि EOS-05 अत्याधुनिक अर्थ ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट है, जो विजिबल, इन्फ्रारेड, मल्टी-स्पेक्ट्रल और हाइपर-स्पेक्ट्रल बैंड में उन्नत इमेजिंग क्षमता प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत की अंतरिक्ष क्षमताएं लगातार नई ऊंचाइयां हासिल कर रही हैं। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने सफल प्रक्षेपण को भारतीय अंतरिक्ष वैज्ञानिकों और इंजीनियरों की प्रतिभा तथा तकनीकी क्षमता का प्रमाण बताया। वहीं पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने कहा कि यह उपलब्धि अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में विश्वस्तरीय क्षमताएं विकसित करने की दिशा में भारत की निरंतर प्रगति को दर्शाती है। केंद्रीय संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने भी GSLV-F17 के सफल प्रक्षेपण को भारत की बढ़ती पृथ्वी-अवलोकन क्षमताओं की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धि बताया। विपक्ष की ओर से कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने भी इस उपलब्धि पर वैज्ञानिकों, अंतरिक्ष इंजीनियरों और शोधकर्ताओं को बधाई दी। उन्होंने कहा कि EOS-05 भारत की पृथ्वी को देखने और समझने की क्षमता को और मजबूत करेगा तथा देश के अंतरिक्ष कार्यक्रम को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने वाले वैज्ञानिकों की मेहनत पर गर्व है। EOS-05 की अत्याधुनिक इमेजिंग क्षमता पृथ्वी की सतह से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां जुटाने में उपयोगी होगी। इसके सफल प्रक्षेपण ने एक बार फिर अंतरिक्ष विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र में भारत की बढ़ती क्षमता और वैश्विक स्तर पर मजबूत होती स्थिति को रेखांकित किया है।

उपराष्ट्रपति ने ईओएस-05 सैटेलाइट के सफल प्रक्षेपण पर जताई खुशी

उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन ने शुक्रवार को देश के पहले इमेजिंग सैटेलाइट ईओएस-05 के सफलतापूर्वक प्रक्षेपण पर खुशी जताते हुए भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की टीम को बधाई दी। उपराष्ट्रपति ने एक्स पोस्ट में लिखा,'आज श्रीहरिकोटा से जीएसएलवी-एफ17 ईओएस-05 मिशन के सफल प्रक्षेपण पर इसरो के वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को बधाई। भारत के पहले इमेजिंग सैटेलाइट ईओएस-05 को जियोसिंक्रोनस ऑर्बिट में सफलतापूर्वक स्थापित करना,भारत की अंतरिक्ष यात्रा में एक अहम पड़ाव है। भारत के लिए गर्व का क्षण और देश के अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए एक और शानदार उपलब्धि!

जम्मू-कश्मीर के बडगाम में तलाशी अभियान के दौरान मुठभेड़ में एक आतंकवादी ढेर

बडगाम,04 सितम्बर 2026। बडगाम जिले के अशदार गली इलाके में भारतीय सेना, जम्मू कश्मीर पुलिस और सीआरपीएफ के साथ संयुक्त तलाशी अभियान के दौरान एक आतंकवादी मारा गया है। मौके पर एक एके राइफल के साथ युद्ध में इस्तेमाल होने वाला सामान बरामद किया गया। संयुक्त सुरक्षाबलों ने गुरुवार शाम को आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिलने के बाद घेराबंदी और तलाशी अभियान शुरू किया था, जिसके बाद गोलियों की आवाजें सुनाई दीं। बाद में यह अभियान रात में रोक दिया गया था और शुक्रवार सुबह फिर से शुरू किया गया। सुरक्षाबलों ने संदिग्ध क्षेत्र के चारों ओर कड़ी घेराबंदी कर तलाशी जारी रखी। अभियान में सहायता के लिए अतिरिक्त सुरक्षा कर्मियों को भी क्षेत्र में भेजा गया। सेना के मुताबिक खुफिया जानकारी के आधार पर सेना, पुलिस और सीआरपीएफ ने बडगाम के अशदार गली इलाके में एक संयुक्त तलाशी अभियान शुरू किया। सतर्क जवानों ने संदिग्ध गतिविधि देखी और चुनौती देने पर आतंकवादियों ने गोलीबारी शुरू कर दी, जिसके बाद ज़बरदस्त मुठभेड़ हुई। इस दौरान एक आतंकवादी मारा गया और एक एके राइफल के साथ युद्ध में इस्तेमाल होने वाला अन्य सामान बरामद किया गया। तलाशी अभियान अभी भी जारी है।

मध्यप्रदेश के धार में भोजशाला के पीछे निर्धारित भूमि पर हुई जुमे की नमाज, गर्भगृह में हुआ हनुमान चालीसा का पाठ

धार, 04 सितम्बर 2026। मध्य प्रदेश के धार जिला मुख्यालय स्थित ऐतिहासिक भोजशाला को लेकर चल रहे विवाद के बीच लगातार छठे शुक्रवार को उच्चतम न्यायालय के निर्देश पर निर्धारित की गई भूमि सर्वे नंबर 612 पर जुमे की नमाज अदा की गई। वहीं, भोजशाला के गर्भग्रह में हिन्दू समाज के लोगों ने हनुमान चालीसा का पाठ किया। कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच दोनों आयोजन शांतिपूर्ण तरीके से पूरे हुए। नएस्थान तलाशें उच्चतम न्यायालय द्वारा दी गई अंतरिम व्यवस्था के तहत शुक्रवार को भोजशाला के पीछे स्थित स्थल पर नमाज के लिए मुस्लिम समाज के लोग पहुंचे।

महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजीनगर के अस्पताल में लगी आग 9 नवजातों को बचाया गया

छत्रपति संभाजीनगर,04 सितम्बर 2026। महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजीनगर स्थित आकाशवाणी चौराहे के पास एशियन सिटी केयर अस्पताल में शुक्रवार तड़के करीब तीन बजे अचानक आग लग गई। आग लगने के समय अस्पताल में 58 मरीजों का उपचार चल रहा था। इनमें नौ बच्चे भी शामिल थे। आग की सूचना मिलते ही अस्पताल के कर्मचारियों ने तत्परता दिखाते हुए सभी मरीजों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। प्रारंभिक जांच में आग लगने की वजह बिजली के तारों में शॉर्ट सर्किट होने की आशंका जताई गई है। माना जा रहा है कि आग अस्पताल के भंडार कक्ष से शुरू हुई होगी। हालांकि, आग लगने के वास्तविक कारण का पता लगाने के लिए जांच जारी है। आग लगने के बाद अस्पताल में अफरा-तफरी की स्थिति बन गई। अस्पताल के कर्मचारियों ने सबसे पहले गहन चिकित्सा कक्ष में भर्ती मरीजों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया। नौ बच्चों समेत गंभीर मरीजों को तत्काल दूसरे अस्पतालों में भेजा गया। बच्चों को घाटी अस्पताल और एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जबकि अन्य मरीजों को भी आवश्यकता के अनुसार दूसरी चिकित्सा सुविधाओं में स्थानांतरित किया गया। घटना की जानकारी मिलते ही मरीजों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने के लिए करीब 15 से 20 एंबुलेंस मौके पर पहुंचीं। जिन मरीजों को तत्काल चिकित्सा सहायता की आवश्यकता थी, उन्हें प्राथमिकता के आधार पर दूसरे अस्पतालों में भेजा गया। अस्पताल की सुरक्षा व्यवस्था को तत्काल सक्रिय किया गया और कर्मचारियों ने आग बुझाने का प्रयास शुरू कर दिया।

पीएम मोदी ने मेलोनी को दी बधाई,सबसे लंबे समय तक इटली की प्रधानमंत्री रहने का रिकॉर्ड

नई दिल्ली, 04 सितम्बर 2026। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी को यूरोपियन देश के युद्ध के बाद के इतिहास में सबसे लंबे समय तक प्रधानमंत्री रहने पर बधाई दी और आने वाले सालों में भी उनकी सफलता की कामना की। पीएम मोदी ने मेलोनी की इस कामयाबी पर बधाई देते हुए, दोनों देशों के बीच विशेष रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने के लिए उनकी सरकार की कोशिशों की तारीफ की। उन्होंने दोनों देशों के लोगों के लिए एक अच्छा भविष्य बनाने के लिए करीबी सहयोग जारी रखने की इच्छा जताई। एक्स पर एक पोस्ट में पीएम मोदी ने कहा, इटली के युद्ध के बाद के इतिहास में सबसे लंबे समय तक लगातार सेवा करने वाले प्रधानमंत्री बनने पर मेरे दोस्त प्रधानमंत्री मेलोनी को बधाई। यह मील का पत्थर इटली के लोगों के उनके नेतृत्व पर भरोसे और विश्वास को दिखाता है। उनकी दोस्ती भारत-इटली विशेष रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने में भी मददगार रही है और मैं अपने देशों के लोगों के लिए एक अच्छा भविष्य बनाने के लिए हमारे करीबी सहयोग को जारी रखने की उम्मीद करता हूं। उन्होंने कहा, आने वाले सालों में उनकी लगातार सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएं। खास बात यह है कि जॉर्जिया मेलोनी की सरकार इटैलियन रिपब्लिक के युद्ध के बाद के इतिहास में सबसे लंबे समय तक चलने वाली सरकार बन गई, जिसने पूर्व पीएम सिल्वियो बर्लुस्कोनी के कार्यकाल को पीछे छोड़ दिया।

दिल्ली में कॉकरोच जनता पार्टी का धरना....कार्यकर्ता के पिता से पिटाई का मामला

कॉकरोच जनता पार्टी कार्यकर्ता के पिता को पीटने वाला स्वतंत्र हिरासत में,दिल्ली पुलिस ने बुलंदशहर से पकड़ा

नई दिल्ली,04 सितम्बर 2026। कॉकरोच जनता पार्टी कार्यकर्ता नीशू आजाद के पिता के साथ मारपीट करने वाले स्वतंत्र भारद्वाज उत्तर प्रदेश के बुलंद शहर से पकड़े गए। फिलहाल दिल्ली पुलिस ने उन्हें हिरासत में ले लिया है। पकड़े जाने से पहले स्वतंत्र ने हसनपुर में मीडिया से करीब 3 मिनट तक बात की और कहा- 'मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। चाहे पूरा विपक्ष एकजुट हो मेरा बाल बांका नहीं कर सकता।

' स्वतंत्र की गिरफ्तारी की मांग को लेकर कॉकरोच जनता पार्टी ने शुक्रवार को दिल्ली के संसद मार्ग थाने में 3 घंटे प्रदर्शन किया। हालांकि पुलिस के आश्वासन के बाद धरना खत्म हुआ। दरअसल नीशू का आरोप था कि 23 जून को जंतर-मंतर पर प्रदर्शन के दौरान उनके पिता संजय के साथ मारपीट की गई। कॉकरोच जनता पार्टी कार्यकर्ता नीशू आजाद के पिता के साथ मारपीट मामले में कॉकरोच जनता पार्टी ने आज दिल्ली के पार्लियामेंट स्ट्रीट थाने में प्रदर्शन किया था। कॉकरोच जनता पार्टी की मांग थी कि आरोपी स्वतंत्र भारद्वाज के खिलाफ तुरंत कार्रवाई हो। पुलिस और कॉकरोच जनता पार्टी प्रतिनिधियों के बीच करीब 3 घंटे बैठक चली। दरअसल नीशू का आरोप था कि 23 जून को जंतर-मंतर पर प्रदर्शन के दौरान उनके पिता संजय के साथ मारपीट की गई। इस बीच स्वतंत्र का एक पॉडकास्ट वीडियो वायरल हुआ, जिसमें वह संजय पर हमला करने की बात कबूल करता नजर आया। हालांकि, उसने कहा कि उसने ऐसा सेल्फ डिफेंस में किया था। इस पर सौरव दास ने सवाल उठाया कि जब आरोपी खुद हमला करने की बात स्वीकार कर रहा है तो पुलिस कार्रवाई क्यों नहीं कर रही है। इस धरने में कांग्रेस, निर्दलीय सांसद, पप्पू यादव, वाम दलों के छात्र नेता एवं भीम आर्मी के कार्यकर्ता शामिल हुए। निर्दलीय सांसद पप्पू यादव पीड़िता निशू आज़ाद और उनके समर्थकों के साथ वहां बैठे। इस दौरान प्रदर्शनकारियों ने दिल्ली पुलिस और केंद्र सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। प्रदर्शनकारियों का आरोप है कि निशू आजाद के पिता पर दो महीने पहले जानलेवा हमला किया गया था, जिसमें उनके सिर में गंभीर चोट आई थी। घटना के वक्त निशु आज़ाद ने दिल्ली पुलिस से इंसाफ और दोषियों की गिरफ्तारी की गुहार लगाई थी।

चिराग ने कहा- स्वतंत्र भारद्वाज का दावा गलत, मैंने शिकायत दर्ज की

केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने जंतर-मंतर प्रदर्शन से जुड़ी घटना पर एक पॉडकास्ट में स्वतंत्र भारद्वाज के उनके और कपिल मिश्रा का नाम लिए जाने पर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा, 'यह घटना बेहद गंभीर है। जिस तरह एक व्यक्ति खुले तौर पर यह स्वीकार कर रहा है कि उसने किसी को इतनी बुरी तरह पीटा कि उसकी मौत भी हो सकती थी,यह गंभीर मामला है। पॉडकास्ट पर इस तरह की बात खुलेआम स्वीकार करने के बाद भी अगर उसके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं होती है, तो मेरा मानना है कि यह देश और लोगों के सामने बेहद गलत उदाहरण पेश करेगा।' उन्होंने कहा, 'मामले की गंभीरता को देखते हुए और क्योंकि उस व्यक्ति ने कई नेताओं के साथ मेरा नाम भी गलत तरीके से इस्तेमाल किया है, मैंने उसके खिलाफ आधिकारिक शिकायत दर्ज कराई है। साथ ही, मैंने दिल्ली पुलिस से इस मामले की निष्पक्ष जांच करने का आग्रह किया है।'

'डिजिटल अरेस्ट' सिंडिकेट के खिलाफ सीबीआई का 20 राज्यों में छापा,तीन को गिरफ्तार किया

नई दिल्ली,04 सितम्बर 2026। केंद्रीय जांच ब्यूरो ने 'डिजिटल अरेस्ट' के खतरे के पीछे काम करने वाले सिंडिकेट के खिलाफ़ देशव्यापी अभियान शुरू किया है। एजेंसी ने विभिन्न राज्यों से जुड़े कई मामलों पर बड़ी कार्रवाई की है। इनमें से तीन मामलों में सीबीआई ने देशभर के 20 राज्यों में 89 जगहों पर बड़े पैमाने पर और समन्वित तलाशी अभियान चलाया। पूरे अभियान में तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है। समयऔर कैलेंडर इन 3 मामलों में से एक मामला बीआईटीएस पिलानी से जुड़ा है। इसमें पीड़ित को 3 महीने तक डिजिटल अरेस्ट में रखा गया और पुलिस अधिकारी बनकर आए स्कैमर्स ने उससे 7.67 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी की। एक अन्य मामले में भी स्कैमर्स ने गुजरात राज्य में पीड़ित को 3 महीने तक डिजिटल अरेस्ट में रखा और पुलिस अधिकारी बनकर 19.24 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी की। तीसरा मामला कर्नाटक राज्य से जुड़ा है, जिसमें पीड़ित को एक महीने तक डिजिटल अरेस्ट में रखा गया और उससे 15.45 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी की गई। सीबीआई का कहना है कि अभियान के दौरान धोखाधड़ी से हासिल पैसे का पता लगाने, सिंडिकेट के पीछे के लाभार्थियों और संचालकों की पहचान करने और सबूत नष्ट होने से पहले उन्हें ज़ब्त करने के लिए एकसाथ कार्रवाई की गई। ऑपरेशन के दौरान 3 आरोपितों को गिरफ्तार किया गया। तलाशी के दौरान हुई पूछताछ से धोखाधड़ी के पैसे को प्राप्त करने, उसकी लेयरिंग (कई खातों में घुमाने) और उसे आगे भेजने में उनकी खास और अहम भूमिका का पता चला। हरियाणा के रहने वाले आकाश के खाते में धोखाधड़ी की रकम में से 1.95 करोड़ रुपये आए थे।

भारत-फ्रांस अंतरिक्ष सहयोग पर द्विपक्षीय वर्चुअल बैठक,अंतरिक्ष साझेदारी और मजबूत करने पर चर्चा

नई दिल्ली,04 सितम्बर 2026। केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने शुक्रवार को फ्रांस के उच्च शिक्षा, अनुसंधान एवं अंतरिक्ष मंत्री प्रो. फिलिप बैप्टिस्ट के साथ द्विपक्षीय वर्चुअल बैठक की। दोनों नेताओं ने भारत-फ्रांस अंतरिक्ष साझेदारी को और मजबूत करने पर चर्चा की। बैठक में मानव अंतरिक्ष उड़ान, उन्नत अंतरिक्ष तकनीक, अंतरिक्ष अनुसंधान और उद्योग सहयोग को बढ़ाने पर विशेष जोर दिया गया। दोनों देशों के बीच यह बातचीत 9-10 सितंबर को पेरिस में होने वाले इंटरनेशनल स्पेस समिट और 7-9 सितंबर को आयोजित होने वाले बेंगलुरु स्पेस एक्सपो से पहले हुई है। अंतरिक्ष विभाग ने शुक्रवार को विज्ञप्ति जारी कर बताया कि इसरो के चेयरमैन और अंतरिक्ष विभाग के सचिव को पेरिस समिट में भारत के भविष्य के मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम और लो अर्थ ऑर्बिट पर उद्घाटन मुख्य वक्तव्य देने के लिए आमंत्रित किया गया है। भारतीय प्रतिनिधिमंडल अंतरिक्ष में डिजाइन एवं निर्माण तकनीक, स्पेस कनेक्टिविटी और इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन से आगे अंतरिक्ष अन्वेषण जैसे विषयों पर भी अपनी बात रख सकता है।

दिल्ली में भारी बारिश...इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर पानी भरा,उड़ानें प्रभावित

जबलपुर में होमगार्ड्स की मोटरबोट डूबी,यूपी के 23 जिलों में बाढ़,16 हजार का रेस्क्यू

नई दिल्ली,04 सितम्बर 2026। दिल्ली-एनसीआर में शुक्रवार दोपहर से तेज बारिश हो रही है। मौसम विभाग ने ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। ज्यादातर जगहों पर भारी बारिश के साथ 60 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवा चल सकती है। दोपहर में भारी बारिश से इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर पानी भर गया। बारिश के चलते उड़ानों पर भी असर पड़ा। अहमदाबाद, मुंबई और पोर्ट ब्लेयर से आने वाली उड़ानें देरी से दिल्ली पहुंचीं। एयरपोर्ट परिसर के कई हिस्सों में पानी जमा होने से पैसेंजर्स को परेशानी हुई। उधर, उत्तर प्रदेश में लगातार हो रही बारिश से 23 जिलों में बाढ़ जैसे हालात बने हुए हैं। वाराणसी और चित्रकूट सबसे ज्यादा प्रभावित हैं। अब तक 16 हजार से अधिक लोगों को रेस्क्यू किया जा चुका है। मध्य प्रदेश में मंदाकिनी और नर्मदा नदी खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। मोरडूंगरी में एक युवक बह गया। मौसम विभाग ने प्रदेश में अगले 48 घंटों के लिए भारी बारिश की चेतावनी जारी की है। जबलपुर के ग्वारीघाट में पेट्रोलिंग के लिए गई होमगार्ड्स की मोटरबोट डूब गई। बिहार के 16 जिलों में बाढ़ से करीब 5 लाख लोग प्रभावित हैं। गंगा समेत 8 प्रमुख नदियां खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। भारतीय सेना के जवानों ने शुक्रवार को जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में मेंढर नाले में पाकिस्तान की तरफ बह रही एक किशोरी को बचाया। यह घटना दोपहर करीब 1:30 बजे हुई, जब फॉरवर्ड पोस्ट पर तैनात संतरी ने 14 से 16 साल की एक अनजान लड़की को मेंढर नाले में बेहोशी की हालत में बहते हुए देखा। बलनोई बटालियन के एक सेना जवान ने तुरंत नदी में छलांग लगाई और लड़की को पानी से बाहर निकाला। बचाई गई लड़की की पहचान बलनोई की रहने वाली गुलसैद की बेटी उज़मा कौसर के तौर पर हुई है। उसके परिवार को सूचना दे दी गई है।

संपादकीय

तकनीक की लत के शिकार होते बच्चे

इन दिनों दुनिया भर में बच्चों के बढ़ते स्क्रीन टाइम पर चिंता जताई जा रही है। आस्ट्रेलिया ने सबसे पहले 16 साल तक के बच्चों पर स्कूल में मोबाइल ले जाने और टिकटाक, इंस्टाग्राम,फेसबुक,यूट्यूब आदि के इस्तेमाल पर रोक लगाई। ब्राजील,इंडोनेशिया,मलेशिया,चीन आदि देशों ने भी थोड़े-बहुत फेरबदल के साथ ऐसा किया है। फ्रांस, ब्रिटेन,स्पेन,कनाडा,पुर्तगाल,इटली,दक्षिण कोरिया आदि देश भी ऐसा कर रहे हैं या तैयारी में हैं।

इस मामले में भारत में हिमाचल सरकार ने स्कूलों में मोबाइल ले जाने पर पाबंदी लगा दी है। कर्नाटक की सरकार 16 साल तक के बच्चों के लिए डिजिटल मीडिया पर बैन और स्मार्टफोन के इस्तेमाल पर लगाम कसेगी। आश्चर्यजनक रूप से अमेरिका में ऐसा नहीं किया गया है। इसका कारण शायद यह है कि तमाम बड़ी टेक कंपनियां अमेरिकी ही हैं। इन्होंने ही ऐसे एल्गोरिदम विकसित किए हैं,जो बच्चों को फोन और डिजिटल मीडिया की लत लगा देते हैं। इससे इन्हें भारी मुनाफा होता है। पूंजी के मालिकों को वही भगवान लगती है, दुनिया के बच्चों का क्या होता है, यह दुनिया जाने। टेक कंपनियों के मालिक यह जानते हैं कि बच्चों पर मोबाइल स्क्रीन और उन पर देखे जाने वाले तमाम कार्यक्रमों का क्या असर पड़ता है। इसलिए वे अपने बच्चों को मोबाइल से दूर रखते हैं। है न कमाल। एक तरफ यह सिखाया गया है कि तकनीक ही असली भगवान है। अगर बच्चों ने जल्द से जल्द इसे नहीं सीखा तो सफलता और जीवन की रेस में पिछड़ जाओगे और दूसरी तरफ उन्हें इसी तकनीक का लती बनाया जा रहा है। पिछले दिनों एक बड़ी टेक कंपनी के मालिक ने अपनी दूसरी बेटी के जन्म पर खुशी प्रकट करते हुए एक पत्र में लिखा कि बच्ची बाहर खेलेगी। फूलों की खुशबू को महसूस करेगी। पत्तों को देखेगी।

ऐसी ही एक और बड़ी टेक कंपनी के कर्ता-धर्ता अपने बच्चे को मोबाइल के पास भी नहीं फटकने देते। एक और बड़ी टेक कंपनी के सर्वेसर्वा ने 11 साल की उम्र तक अपने बेटे को फोन से दूर रखा। इसी तरह कंप्यूटर की दुनिया में बहुत नाम कमाने वाली कंपनी के बड़े भारतीय अफसर ने अपने बच्चों को 14 साल की उम्र तक फोन का इस्तेमाल नहीं करने दिया। एक और टेक कंपनी के प्रमुख अपने बच्चों के स्क्रीन टाइम को लेकर समय के बहुत पाबंद हैं। एआइ से जुड़े एक दिग्गज अपने बच्चों के जीवन में एआइ की घुसपैठ जल्दी नहीं कराना चाहते। साफ है कि ये लोग चाहते हैं कि इनके बच्चे मिट्टी की सुगंध महसूस करें। प्रकृति को जीवन का हिस्सा बनाएं। हमेशा भगदड़ में रहने के मुकाबले अकेले रहना भी सीखें।

आज अमेरिका समेत पश्चिमी देशों में ऐसे बहुत से पार्क हैं,जहां बच्चों को विशेष रूप से मिट्टी में खेलने के लिए ले जाया जाता है। कहते हैं कि इससे बच्चों का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहता है। इसकी तगड़ी फीस भी देनी पड़ती है। यही नहीं वहां बच्चे ऐसे स्कूलों में भी पढ़ते हैं, जहां मोबाइल फोन के इस्तेमाल पर पाबंदी है। एक समय अपने यहां भी मिट्टी में खेलने को जीवन का आवश्यक अंग माना जाता था, लेकिन बैक्टीरिया और रोगों का डर दिखाकर बच्चों से दूर कर दिया गया। सोचने की बात यह है कि अगर आप धनकुबेर हैं,तो आपके लिए अलग नियम हैं और दूसरों के लिए अलग। आपके बच्चे मोबाइल,कंप्यूटर, टीवी, डिजिटल मीडिया से दूर रहें और दूसरे बच्चों को यह सिखाया जाए कि यदि जीवन में ये चीजें नहीं, तो कुछ नहीं।

आप हर रेस में पिछड़ जाएंगे। यह सब पढ़ते हुए आमजन को मूर्ख बनाने के कितने ही तरीके याद आ रहे थे। बहुत पहले बड़ी-बड़ी अभिनेत्रियां एक खास ब्रांड के साबुन का विज्ञापन करती थीं। इस साबुन का विज्ञापन करने वाली किसी भी हीरोइन ने शायद ही कभी इसका इस्तेमाल किया हो। चाकलेट का विज्ञापन बहुत से अभिनेता-अभिनेत्रियां करते हैं। कई साल पहले एक अभिनेत्री ने कहा था कि उसके बच्चे ने आज तक चाकलेट नहीं खाई। यदि वह कोई अच्छा काम करता है, तो उसे पुरस्कार के रूप में गुड़ दिया जाता है।

यह मार्केटिंग का ही असर है कि लोग बच्चों को तमाम जंक फूड खिलाने में शान समझते हैं। आजकल बच्चे भारतीय भोज्य पदार्थों के मुकाबले स्कूल में लंच के लिए भी ऐसे ही हाई कैलोरी खाने की चीजों को पसंद करते हैं। ऐसी विज्ञापनबाजी के कारण ही भारत के पारंपरिक मिठाई उद्योग पर खतरा मंडरा रहा है। कई खेती करने वाले लोग कह चुके हैं कि वे अपने खेतों में दो तरह की फसलें उगाते हैं। एक वे जिनमें जरा भी कीटनाशक नहीं डाला जाता। वे परिवार के खाने के लिए होती हैं। दूसरी तरह की खेती ऐसी है, जिसमें भरपूर मात्रा में कीटनाशक डाला जाता है, क्योंकि वे बेचने के लिए होती हैं।

यानी हम बचें,बाकी किसी और का क्या होता है, इससे हमें क्या मतलब। कहने को तो यह कहा जाता है कि सब बराबर हैं। जो हम खाते हैं, उससे बेहतर अतिथि को खाने को देते हैं या दूसरों के बच्चों को अपना बच्चा मानें, लेकिन जब दुनिया भर के लोगों में फैले अपने-पराए की भावना नजर आती है तो ये सारी बातें कोरी किताबी लगने लगती हैं। एक तरफ चैरिटी की बातें की जाती हैं और यह कहा जाता है कि हम सब बराबर हैं, मगर अफसोस है कि मुनाफे के लिए हर तरह की तरकीबें अपनाई जा रही हैं और लोगों की सेहत से भी खिलवाड़ किया जा रहा है।

शिक्षा के धंधे में नैतिकता का स्तर और छात्रों का भविष्य

प्रितम भि गेडाम
नई दिल्ली

प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

कहने को सभी शिक्षा ज्ञान मंदिर को पवित्र पेशे के रूप में देखते है, लेकिन क्या आज व्यापारीकरण के युग में यह वहीं मंदिर रहा है,जहां क्रांतिज्योति सावित्री बाई फुले शिक्षा की ज्ञानज्योत जलाने के लिए विपरीत विचारों, कुरीतियों वाले पूरे समाज से घृणा और द्वेष सहन करती रही थी। महात्मा ज्योतिराव फुले ने सामाजिक बहिष्कार, अपमान और विरोध की परवाह किए बिना शिक्षा को वंचितों की मुक्ति का माध्यम बनाया,राजर्षि शाहू महाराज ने शिक्षा में सामाजिक न्याय और अवसरों की समानता को राज्य की जिम्मेदारी माना,महर्षि धोंडो केशव कर्वे ने स्त्री-शिक्षा को अपने जीवन का ध्येय बनाया; डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन और मुक्ति की आधारशिला माना,पद्मश्री डॉ. एस. आर. रंगनाथन ने पुस्तकालयों को ज्ञान तक समान पहुँच और बौद्धिक लोकतंत्र का माध्यम बनाया और डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने ज्ञान को विकसित और आत्मनिर्भर भारत की शक्ति के रूप में देखा। ऐसे सभी महापुरुषों और समाजसुधारकों की दृष्टि में शिक्षा कोई बिकाऊ वस्तु नहीं,बल्कि व्यक्ति और समाज को बेहतर बनाने वाली सार्वजनिक नैतिक जिम्मेदारी थी।

आज उसी व्यवस्था के सामने एक असहज प्रश्न खड़ा है–क्या शिक्षा धीरे-धीरे ज्ञान और सामाजिक परिवर्तन के मिशन से हटकर फीस,मुनाफा,ब्रांड, परीक्षा-परिणाम और रोजगार के बाजार में बदलती जा रही है? यदि शिक्षा के नाम पर अनावश्यक आर्थिक बोझ,नियुक्तियों में कथित धनबल, राजनीतिक अथवा प्रशासनिक हस्तक्षेप और शिक्षकों की असुरक्षा जैसी प्रवृत्तियाँ बढ़ती है,तो संकट केवल संस्थागत व्यवस्था का नहीं, बल्कि शिक्षा के मूल नैतिक चरित्र का हैं। ऐसी स्थिति में हमें यह पुनर्विचार करना होगा कि जिन महापुरुषों ने शिक्षा को समानता,स्वाभिमान, ज्ञान और सामाजिक मुक्ति का साधन बनाया था, क्या हम उसी विरासत को आगे बढ़ा रहे है या अनजाने में शिक्षा को एक ऐसी व्यवस्था में बदल रहे है,जहाँ विद्यार्थी ग्राहक, शिक्षक कर्मचारी और ज्ञान एक उत्पाद बनता जा रहा है?

आजकल सोशल मीडिया और खबरों में शिक्षा संस्थांनों की अनेक अनुचित व्यवहार की अत्यधिक बढ़ती खबरें इसकी पवित्रता कलंकित कर रही हैं। महाराष्ट्र राज्य के सरकारी अनुदानित महाविद्यालयों में पदभरती के नाम पर प्रोफेसर के रेट की बात सबको पता है, अखबारों में कुछ दिन खबरें आती है, फिर सब सामान्य हो जाता हैं। शिक्षकों का मानसिक उत्पी न और आत्महत्या की घटनाएं भी लगातार बढ़ी हैं। शिक्षा व्यवस्था में भ्रष्टाचार,भर्ती घोटाले,डिग्री खरीदी,परीक्षा पेपर लीक,उत्तर पुस्तिकाओं में हेर-फेर,सरकारी खर्च में अनियमितता,सामग्री खरीद-फरोख्त में गड़बड़ी और कमज़ोर वित्तीय जवाबदेही ये सब बताते हैं कि शिक्षा के कामकाज में कई स्तरों पर गड़बड़ी हो सकती हैं। हर क्षेत्र में कार्यरत साधारणत सभी कर्मचारियों को पता होता है कि,अपने विभाग में कहा अनुचित या भ्रष्ट कार्य होते है,लेकिन अधिकतम इस बारे में विरोध करना पसंद नहीं करते। जैसा चल रहा है चलने दो,यह रुख अपनाते है, लेकिन इस रुख का सीधा परिणाम संपूर्ण व्यवस्था प्रणाली,समाज और देश पर पड़ता है,जिसके गंभीर परिणाम मासूम जनता को सदियों तक झेलने पे सकते हैं। विकसित देशों की शिक्षा संस्थान समान गुणवत्ता पर केंद्रित होती है,जहां अमीर-गरीब और निजी-सरकारी कर्मचारियों के बच्चे बिना किसी भेदभाव के एक ही स्कूल में पढ़ते हैं। जिस देश ने गुणवत्तापूर्ण उन्नत शिक्षा, सुदृढ़ स्वास्थ्य सुविधा और रोजगार सृजनशीलता को महत्वपूर्ण माना,वही प्रगति पथ पर आगे बे कर विकसित हुए हैं। विश्व में छोटे-छोटे देश जिनमे से किसी के पास खेती के लिए जमीन नहीं,पर्याप्त जल सुविधा नहीं,प्राकृतिक आपदाओं से घिरे रहते है, फिर भी वह अपने बेहतर शिक्षा प्रणाली द्वारा उन्नत तकनीक के दम पर विकसित हुए हैं। मनुष्य के संपूर्ण जीवन की आधारशिला की नींव उसकी शिक्षा पर निर्भर होती है, शिक्षा की गुणवत्ता और कौशल ही उसके भविष्य की नीति तय करती हैं। अर्थात इसका असर व्यक्ति के साथ ही उसके आने वाली पीढ़ी पर भी पढता है,जीवन के हर प्रसंग, कार्यकलापों में शिक्षा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष हस्तक्षेप जरूर करती हैं।

विदेशों में सामाजिक समरसता का ज्ञान बच्चों को स्कूल में ही दिया जाता है,नन्हे विद्यार्थियों को पढाई के विविध विषयों के साथ में घर की साफ-सफाई, बड़े-बुजुर्गों की मदद करना,अपना काम स्वयं करना, घर में अभिभावकों के काम में हांथ बटाना,महिलाओं की इज्जत करना,असहाय की मदद करना, समाजकार्य करना,पौधे लगाना, पर्यावरण की रक्षा करना,हस्तकला,शिल्पकला, छोटे-मोठे उपकरण सुधारना;ऐसे अनेक विषय उन्हें व्यावहारिक तौर पर स्कूल में पढ़ाये जाते हैं। इसमें सिखाया जाता है कि,कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता, सभी काम महत्वपूर्ण और समान हैं। जिस पर उन्हें शैक्षिक अंक भी प्रदान किये जाते हैं। यह तरीका विद्यार्थियों को एक कौशलपूर्ण,विकसित,सशक्त, जिम्मेदार,संस्कारी और समझदार नागरिक बनाने पर जोर देता है,जो कि यह हर देश के लिए बहुत जरुरी हैं। जब यहां बच्चे रील देखने में सबसे ज्यादा समय गवांते है,तब वहां बच्चे किसी एक काम में व्यावसायिक तौर पर कौशलपूर्ण तरीके से पारंगत हो चुके होते हैं।

देश में अधिकतम सरकारी कर्मचारी बच्चों की पढाई के लिए महंगे निजी शिक्षा संस्थानों को प्राथमिकता देते हैं। बेहतर वेतन के बावजूद खुद सरकारी स्कूली शिक्षक अपने बच्चों को अपनी ही स्कूल में पढ़ाना पसंद नहीं करते। अधिकतम निजी स्कूलों के शिक्षक कम वेतन पर कार्यरत होकर भी बेहतर परिणाम दर्शाते है, तो सरकारी संस्थानों को क्या हो जाता हैं? केंद्रीय, नवोदय विद्यालय शिक्षा में अच्छा प्रदर्शन करते है,लेकिन इन स्कूलों की संख्या बहुत कम है,इनमें शिक्षक गुणवत्ता,पदभरती, कार्यकलाप अद्यावत होते है,इसके मुकाबले अनेक राज्य सरकारों की स्कूलों के हालात बुरे नजर आते हैं। ग्रामीण क्षेत्र,दुर्गम भाग,पिछड़े इलाके के सरकारी स्कूल बारिश के मौसम में सजा देनेवाले संस्था बन जाते है,बेहतर शिक्षा सुविधा मिलना तो दूर अपनी स्कूल तक पहुंचने में नन्हे छात्र कीचड़,झाड़ियां, खड्डेनुमा सड़क,कही-कही तो उफनते नदी-नाले पार करके जान जोखिम में डालकर स्कूल पहुंचते हैं। कई स्कूल खंडहर नजर आते है,आधारभूत सुविधाओं की जानकारी ही नहीं हैं। गरीबों की ऐसी खस्ता हालत की है कि, प्राथमिक स्कूल में दाखिला लेनेवाले करीब 40 प्रतिशत विद्यार्थी कक्षा 12 तक कभी पहुंचते नहीं। नीति आयोग की रिपोर्ट के मुताबिक,साल 2017-18 से 2022-23 के बीच देश के 92 हजार सरकारी स्कूल बंद हुए। एक लाख से ज्यादा स्कूल एक शिक्षक के भरोसे हैं। शिक्षक कभी साधारण नहीं होता। प्रलय और निर्माण उनकी गोद मे पलते हैं। शिक्षक अपने कलागुणों,ज्ञान,शिक्षा से छात्रों में नए सशक्त और विकसित समाज की नींव रखते हुए देश के भविष्य के शिल्पकार की भूमिका साकार करते हैं। शिक्षा केवल अंक, रैंक,डिग्री और रोजगार नहीं होती बल्कि चरित्र,सुजान सुसंस्कृत नागरिक, रचनात्मक,आलो चनात्मक विचार एवं सामाजिक जिम्मेदारी का अहसास भी बेहद अहम होता है,शिक्षा की यही मुख्य नैतिकता होती हैं। अगर आज शिक्षा विद्यार्थी का आकलन करके उसके कलागुणों को निखारकर योग्य कौशलपूर्ण सक्षम करके जीवन के लिए बेहतर भविष्य निर्माण करवाने में कमजोर है,तो ऐसी शिक्षा देश में केवल डिग्रीधारियों की जनसंख्या बढ़ाने का काम करेंगी,जो होता आ रहा है, नीति आयोग ने भी अभी अपनी रिपोर्ट में यही बताया कि,युवाओं के पास डिग्री है कौशल नहीं। शिक्षा को केवल बाज़ार का उत्पाद न मानकर, एक सामाजिक अधिकार और सार्वजनिक ज़िम्मेदारी के रूप में देखना चाहिए।

शिक्षक दिवस

प्रोफेसर शामलाल कौशल
रोहतक, हरियाणा

शिक्षक को राष्ट्र निर्माता कहा जाता है। शिक्षक वह दिया है जो कि अपने विद्यार्थियों के अंधेरे मन में ज्ञान का प्रकाश करता है। कहां भी जाता है कि गुरु गोविंद दोनों खड़े, किसके लागूं पांव,बलिहारी उस गुरु के जिस गोविंद दिए मिलाए। पौराणिक काल से ही गुरु की महिमा का बखान किया जाता रहा है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के गुरु वशिष्ठ तथा महर्षि विश्वामित्र थे। महाभारत काल में कौरवों और पांडवों के गुरु द्रोणाचार्य तथा कृपाचार्य थे। गुरु वह कारीगर है जो कि अपने शिष्य को तराश कर एक आदर्श व्यक्ति बनाने की कोशिश करता है। श्री कृष्ण जी महर्षि संदीपनी के आश्रम में शिक्षा ग्रहण करने के लिए गए थे। इस तरह हम प्राचीन काल से ऐसे ऐसे गुरुओं के बारे में पढ़ने आ रहे हैं जिन्होंने अपने शिष्यों को अवतारी पुरुष बनाया।

वर्तमान संदर्भ में हम शिक्षक दिवस की बात कर रहे हैं। हमारे देश में भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिन को लेकर हर साल 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के तौर पर मनाते आ रहे हैं। डॉक्टर डॉक्टर राधाकृष्णन उच्च कोटि के शिक्षक थे। जब उनके शिष्यों ने उनके जन्मदिन को मनाने की बात कही तो उन्होंने समाज में शिक्षकों को सम्मान दिलाने हेतु अपने जन्मदिन को शिक्षक दिवस के तौर पर मनाए जाने की बात कही।

डॉक्टर सर्वपल्ली ली राधाकृष्णन का जन्म 5 सितंबर, 1888 को तमिलनाडु के तिरुत्तरी में हुआ। वह दर्शनशास्त्र हिन्दु धर्म के बहुत बड़े विद्वान थे। वह पश्चिमी तथा पूर्वी सभ्यता दोनों को जोड़ना चाहते थे। वह महान दार्शनिक, शिक्षक तथा शिक्षाविद् थे। उन्होंने मद्रास, मैसूर तथा कोलकाता यूनिवर्सिटी में शिक्षक के तौर पर विद्यार्थियों को पढ़ाया। उनकी दिलचस्पी. Indian philosophy मे थी।1954 में उनको भारत रत्न से अलंकृत किया गया। धर्म और प्रगति को लेकर 1975 में उनको टेंपलटन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

उनके ज्ञान तथा उच्च कोटि के शिक्षक के तौर पर उनको ब्रिटिश शासन काल में नाइटहुड SIR की उपाधि से अलंकृत किया गया। डॉक्टर राधाकृष्णन का विचार था कि एक अच्छा टीचर विद्यार्थी का हाथ थामता है,दिमाग खोलता है और दिल को छूता है। डॉ राधाकृष्णन 1952 से 1962 तक देश के उपराष्ट्रपति तथा 1962 से 1967 तक देश के दूसरे राष्टपति बने। उन्हें philosopher president भी कहा जाता है। 1975 से वह अपने वेतन का 75 प्रतिशत प्रधानमंत्री राहत कोष में दान कर दिया करते थे और इनकम टैक्स देने के बाद उन्हें केवल₹1900 प्रति मास वेतन के तौर पर मिलते थे। डॉ राधाकृष्णन ने 30 से ज्यादा पुस्तकें लिखी हैं और 100 से ज्यादा शोध पत्र लिखें हैं। उनकी सबसे ज्यादा प्रसिद्ध पुस्तक The Hindu view of life है।17 अप्रैल,1975 को उनका निधन हो गया। 1962 से लेकर आज तक 5 सितंबर को हर साल पूर्व राष्ट्रपति डॉ राधाकृष्णन के जन्मदिन को शिक्षक दिवस के तौर पर मनाया जाता है। इस दिन देश के विभिन्न शिक्षकों को उनके समर्पण और कर्तव्य निष्ठा को लेकर सम्मानित भी किया जाता है,सेमिनार होते हैं, भाषण होते हैं, शिक्षकों को उपहार भी दिए जाते हैं। सचमुच शिक्षक राष्ट्र निर्माण का कार्य करते हैं। एक अनुभवी, तथा अपने व्यापक ज्ञान के सहारेशिक्षक अपने विद्यार्थियों को अच्छे नागरिक, अच्छे राजनेता,अच्छे प्रशासक, अच्छे उद्योगपति तथा अच्छे प्रशासक बन सकता है। एक अच्छा शिक्षक अपने विद्यार्थियों को केवल किताबी ज्ञान ही नहीं देता बल्कि कठिन परिश्रम, ईमानदारी,नैतिकता, बड़े बुजुर्गों के प्रति मान सम्मान करना, जरूरतमंदों की सहायता करना, देशभक्ति का पाठ भी पढ़ाता है।

लेकिन आजकल उसी प्रकार के शिक्षक कम देखने को मिलते हैं जो कि विद्यार्थियों के लिए आदर्श व्यक्ति बन सके। शिक्षकों में ज्ञान की कमी है,नैतिकता की कमी है, कुछ शिक्षक विद्यालय में नहीं पढ़ाते, बच्चों को प्राइवेट ट्यूशन के लिए मजबूर करते हैं। आजकल विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के जो पेपर लीक होने लगे हैं उनमें कहीं ना कहीं शिक्षकों की मिली भगत की बू आती है जो कि निंदनीय है। शिक्षकों को चरित्रवान तथा विद्यार्थियों के लिए आदर्शवादी होना चाहिए तभी ही वह अपने राष्ट्र निर्माता का काम कर सकेंगे। लेकिन सारे टीचर एक जैसे नहीं होते। आज भी अधिकांश टीचर अपने काम को ईमानदारी तथा समर्पण भावना से करते हैं। शिक्षकों को उचित वेतन मिलने चाहिए। अगर समाज उन्हें उचित मान सम्मान देगा तो वह अपने कर्तव्य को पारंपरिक ढंग से निभा सकेंगे। हर साल 5 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाना और उनको सम्मानित करना समाज में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को ही दर्शाता है।

आसिया फ़ारूक़ी : बच्चों की आंखों में इंद्रधनुषी स्वप्न सजाती शिक्षिका

प्रमोद दीक्षित मलय
बांदा,उत्तरप्रदेश

वह अप्रैल के दूसरे पखवारे की एक तेज दोपहर थी। सूरज आग के गोले बरसा रहा था। सड़क और गलियों को पार करता खादी का अंगौछा सिर पर बांधे मैं फतेहपुर के प्राथमिक विद्यालय अस्ती के लोहे के बड़े फाटक को पारकर घने पेड़ की छाया में बाइक खड़ी किया ही था कि ठीक बायीं ओर सीमेंटेड ईंटों के छोटे से मैदान के पार राज्य अध्यापक पुरस्कार 2019 एवं वर्ष 2023 का राष्ट्रीय अध्यापक पुरस्कार प्राप्त गौरवर्णी आकर्षक व्यक्तित्व एवं संकल्पशक्ति की धनी शिक्षिका आसिया फ़ारूक़ी को बारामदे में खड़े पाया जो बच्चों के साथ किसी गतिविधि में सहभागी थीं। बाईक की आवाज से सभी की लय टूटी और नजरें मेरी ओर मुड़ गईं। एक अपरिचित को विद्यालय में देख उनकी आंखों में सवालों के चिह्न उभर आये थे। शिक्षिका बारामदे से उतरतीं कि मैं उन तक पहुंच गया। नमस्कार की मुद्रा में दो जोड़ी हाथ परस्पर जुड़ गये थे। मैंने परिचय देकर आने का उद्देश्य बताया। हम प्राथमिक विद्यालय अस्ती, नगर क्षेत्र फतेहपुर के प्रधानाध्यापक कक्ष में बैठ चुके थे और कांच के दो स्वच्छ गिलासों में रसोइया बड़े आदर के साथ पानी रख गई। कक्ष की हर दीवार विद्यालय के प्रति शिक्षिका की मेहनत,समर्पण,लगन एवं आत्मीयता का ललित गान सुना रही थीं। व्यक्तिगत और विद्यालय की उपलब्धियों के प्रमाणपत्र,सम्मान एवं प्रशस्ति पत्र, शील्ड एवं ट्राफियां बहुत करीने से दीवारों और आलमारियों में सजे हुए थे। मैंने लगभग आधे गिलास पानी से गला तर करके सवाल किया कि इस बदलाव की शुरुआत कहां से और कैसे हुई।

आसिया फ़ारूक़ी थोड़ी देर चुप रहीं, मानो विद्यालय विकास की कहानी का वह सिरा खोज रही हों जहां से मिशन शुरू हुआ था। समय की चादर की सलवटों को हटा सामने की खिड़की से चमकते आसमान पर नजरें टिकाए वह बोलीं,विद्यालय का पहला दिन बहुत डरावना एवं हतोत्साहित करने वाला था। पूरे परिसर में कूड़े का ढेर और उसमे भूख का हल तलाशते जानवरों के झुंड, बारामदे में बैठे अपना भविष्य नशे के धुंए में उड़ाते दिशाहीन युवा। पहला दृष्टि में विद्यालय तो कहीं दिखा ही नहीं। तभी अंदर से एक संकल्प जगा, इस कूड़े के ढेर से ही ऐसा विद्यालय उगाना है जिसकी सुगंध से सारा समाज महक जाए, जिसके प्रकाश से युवा जीवन की सही राह खोज सकें,शिक्षा के गारे से बच्चों की मजबूत बुनियाद निर्मित हो और युवा लड़कियां एवं महिलाएं हुनर के साथ स्वावलंबी बन परिवार का सामर्थ्य बनें।

इस बीच रसोइया गरमागरम पकौड़ों की प्लेट रख गई। एक करारी पकौड़ी चटनी में डुबाकर मुंह में रखी और पूछा,आज का यह चमकता हुआ परिवेश देखकर कोई भी अंदाजा नहीं लगा सकता कि यहां कभी गंदगी, दुर्गंध और कूड़े का जमावड़ा रहा होगा। इस चुनौती से कैसे जीतीं? आसिया के चेहरे पर गम्भीरता के भाव उमड़े, आंखें स्थिर सी हुईं और माथे पर लकीरें उभरीं। वह दार्शनिक अंदाज में बोलीं,सवाल जीत-हार का नहीं बल्कि चुनौतियों से जूझने की दृढ़ता का है। ऊंचाई पर चढ़ने के रास्ते कभी आसान नहीं होते पर संकल्प के धनी चोटियों के शीश झुका ही देते हैं। एक अकेली शिक्षिका के लिए लड़ना सहज नहीं था पर कदमों को ठहरना पसंद न था। घरों का कूड़ा डालने और यहां जमघट लगाने से मना करने पर धमकियां मिलीं,ईट-पत्थर मारे गये, स्कूटी पंक्चर की गई,हैंड पम्प खराब किया,रास्ता रोका गया पर जिद थी परिवेश बदलने की,तो ट्रैक्टरों से कूड़ा समतल करवाया,गड्ढे भरवाये। ऊपर से मिट्टी डलवाई। पानी भरवाया। ईंटें मंगवा कर क्यारियां बनवाईं,बेल और फूलों के पौधे रोपे,वृक्षारोपण किया। भवन की मरम्मत कर पेंट-पुताई कराई तो लगा विद्यालय सांसें लेने लगा है। लगातार अभिभावकों से सम्पर्क करके नामांकन कराया,सहयोग हेतु वालिंटियर तैयार किए।वह आगे बोलतीं कि मेरे सवाल ने उनकी दिशा मोड़ दी,वालिंटियर वाली बात मैं समझा नहीं?वह मुस्कुराईं जैसे पहाड़ी झरना हंस पड़ा हो,जब मैं यहां वर्ष में आई तो 7-8 बच्चे ही थे, आज 250 से ऊपर हैं। जब विद्यालय और बच्चों को प्रति समर्पण,आत्मीयता और मधुरता का भाव और अपने काम से प्यार हो तो नये-नये विचार पनपते हैं। नामांकन बढ़ा लेकिन मुझ एकल शिक्षिका के लिए पांच कक्षाएं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ संभालना कठिन था तो समाज से आह्वान किया कि स्नातक उत्तीर्ण लड़कियां स्वेच्छा और सीखने-सिखाने के भाव से वालिंटियर के रूप में विद्यालय में समय दे सकती हैं। खुश हूं कि दो-तीन लड़कियां आगे आईं।वह लगातार बोले जा रही थीं, उनके पास विद्यालय बदलाव के किस्सों की पोटली थी। मैं कोई भी सवाल करता तो वह पोटली से उसका उत्तर वाला किस्सा निकाल लेतीं।

उनके पास मानो हर सवाल का जवाब हाजिर था। चुनौतियों की आंच से उनका प्रदीप्त चेहरा चमक रहा था,जिसके आभामंडल में उनके किए कार्य चमचमा रहे थे। अस्ती की महिलाओं को रोजगार से जोड़ने के लिए सिलाई,बुनाई,कढ़ाई, साफ्ट ट्वायज एवं पपेट निर्माण, सजावटी सामान बनाने हेतु हरेक साल अलग-अलग कार्यशालाएं की। महिलाओं को मशीन और कच्चा माल उपलब्ध कराया। आज वे लड़कियां और महिलाएं आर्थिक रूप से समर्थ हो परिवार की सहायक बनी हैं। समाज द्वारा प्रति वर्ष 500 से अधिक साफ्ट ट्वायज,झोले और अन्य सजावटी सामान खरीदा जाता है। विद्यालय के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम की ड्रेस सिलना,झालर,पर्दे,डोर मैट बना सहयोग करती हैं। मुस्लिम आबादी होने के कारण काम करना कठिन था। जागरूकता के लिए विद्यालय में सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं की गोष्ठियों द्वारा जीवन में बालिका शिक्षा का महत्व,महिलाहिंसा,पुलिसमदद, एम्बुलेंस,फायर ब्रिगेड,हेल्पलाइन नंबर और सरकारी योजनाओं की जानकारी दी। फलतः 90 ड्राप आउट बालिकाओं का नामांकन हुआ। इस कार्य हेतु राज्य स्तर पर मिशन शक्ति पुरस्कार मिला। विद्यालय के ग्रूप में 70 से अधिक कला,क्राफ्ट,योग,संगीत आदि में कुशल सहयोगी महिलाएं और लड़कियां जुड़ी हैं जो समय-समय पर वालिंटियर के रूप में काम करती हैं।कक्ष के वातावरण में उनकी मेहनत, कर्तव्यनिष्ठा और जिजीविषा की कहानियां तैर रही थीं। उनका बोलना जारी था,बाल मेला में माता अभिभावक बच्चों के साथ स्टाल लगाती हैं। विद्यालय में सर्व धर्म सद्भाव हेतु हर त्योहार मनाते हैं। हिंदू-मुस्लिम सभी बच्चे एक-दूसरे के साथ खुशियां बांटते हैं। ईद की सेवइयां हैं तो होली की गुझिया भी। बालिका शिक्षा के बढ़ावा हेतु पांचवीं कक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली दो बालिकाओं को हरेक वर्ष मार्च में साइकिल उपहार देते हैं ताकि आगे की पढ़ाई सुगम हो सके।अभिभावकों,विद्यार्थियों, वालिंटियर में से सर्वोच्च सहयोगी को पुरस्कृत करते हैं। आगे वह कक्षाओं को दिखाते हुए कहती हैं कि सीखने-सिखाने के लिए खुशियों भरा माहौल आवश्यक है। शिक्षक की नौकरी एक जिम्मेदारी है-समाज निर्माण की। कक्षाओं में भारत का भविष्य पल रहा है, हम शिक्षकों को उन्हें सही दिशा देनी है। बच्चे संभावनाओं से भरे हुए खिलते हुए पुष्प हैं, उनकी सुगंध चहुंओर बिखेरने में शिक्षकों का मदद करना कर्तव्य है। इसलिए प्रत्येक शनिवार को ग्रीन और रेड ड्रेस के साथ बच्चे नो बैग डे मना कला-क्राफ्ट और बागवानी का काम करते हैं। सब्जियों की क्यारियों की देख भाल एवं परिसर स्वच्छ करते हैं, यह भी तो सीखना ही है।

शिक्षा के तपस्वियों को नमन

शिक्षक दिवस पर आज उन तपस्वियों को याद करें,जिन्होंने जीवन भर ज्ञान की ज्योति जलाकर अंधियारे पथ को रोशन किया। जब कोई शिक्षक धरा का आँगन छोड़कर अनंत यात्रा पर जाता है, लगता है जैसे-किसी पुस्तक का एक अमूल्य अध्याय अचानक मौन हो जाता है।

बच्चू लाल जी दीक्षित

शब्दों के साधक,व्यंग्य की धार से समाज को आईना दिखाने वाले, कलम को कर्म और साहित्य को साधना मानने वाले तपस्वी। उन्होंने शब्दों को जोड़ा, शब्द साधकों को जोड़ा,'मंथन साहित्यिक परिवार' के माध्यम से साहित्य की एक ऐसी लौ जलाई, जिसकी रोशनी में कई कलमों ने चलना सीखा।

डॉ. दशरथ जी मसानिया

रेडियो से तकनीक तक के बदलते दौर के साक्षी, ज्ञान को केवल पढ़ाया नहीं, नवाचार से उसे जीवन में उतारने की राह दिखाई। उनकी कलम में नव-सृजन की बेचैनी थी, नई सोच का उजास था, और विद्यार्थियों के भविष्य के लिए एक नई दिशा गढ़ने का संकल्प था।

कल्याण सिंह राजपूत 'केसर'

तकनीकी युग के शिक्षक, जिनकी कलम ने समय की धड़कनों को सुना, समाचार-पत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज की, और गीत-ग़ज़ल के सुरों में अपने मन की बात कही। उनकी बातों में भोलापन ऐसा कि अपने दिल की हर बात हर किसी को कह दें। ज्यादा लाख

लपेट नहीं पाते ऐसी की सामने वाले के दिल में अपना घर सहज ही बना लें। तीनों अलग-अलग काल के तीन उजले अध्याय थे–एक में अनुभव की गहराई,दूसरे में परिवर्तन की चेतना, तीसरे में भविष्य की उड़ान थी। भूत, वर्तमान और भविष्य मानो शिक्षक के इन तीन रूपों में एक साथ दिखाई देते थे।आज वे हमारे बीच नहीं, पर उनकी बातें हैं, उनकी कलमें हैं, उनकी सीख है, उनके विचार हैं, और उन विचारों से जन्म लेते असंख्य नए शब्द हैं। शिक्षक चले जाते हैं, पर उनकी शिक्षा नहीं जाती, दीपक बुझ जाता है पर उसकी रोशनी आगे बढ़ते हाथों में जिंदा रहती है। इसलिए आज उत्सव के शोर से पहले उन मौन तपस्वियों को नमन करें, जिन्होंने अपना जीवन पीढ़ियों को गढ़ने में लगा दिया।

संजय एम. तराणेकर,
इन्दौर मध्यप्रदेश

सूचना

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।

सम्पादक

95 साल पुराने राधा वल्लभ मंदिर में आधी रात गूंजा 'नंद के आनंद भयो'

बाल गोपाल का जन्म होते ही गूंजे बधाई गीत,पालकी में विराजे लड्डू गोपाल,दर्शन के लिए उमड़ा भक्तों का सैलाब

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,04 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

शहर के 95 साल पुराने राधा वल्लभ मंदिर में शुक्रवार की आधी रात जैसे ही भगवान श्रीकृष्ण का जन्म हुआ,पूरा मंदिर परिसर बधाई गीतों और जयकारों से गूंज उठा। राज परिवार द्वारा वर्ष 1931 में बनवाए गए इस प्राचीन मंदिर में विधि-विधान से जन्मोत्सव मनाया गया। बाल कृष्ण के लिए आकर्षक पालकी सजाई गई थी, जिसे श्रद्धालुओं ने झुलाकर जन्मोत्सव की खुशी मनाई। जन्माष्टमी को लेकर सुबह से ही मंदिर में श्रद्धालुओं के पहुंचने का सिलसिला शुरू हो गया था। शाम होते ही भक्तों की भीड़ बढ़ गई। श्रद्धालुओं ने परिवार के साथ मंदिर पहुंचकर पूजा-अर्चना की। महिलाओं ने भजन-कीर्तन किया। मंदिर को फूल मालाओं और आधुनिक लाइटिंग से आकर्षक ढंग से सजाया गया था। मंदिर के पुजारी राम नरेश द्विवेदी ने बताया कि रात 12 बजे राज पुरोहित द्विपेश पांडेय ने भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव की पूजा कराई। इसके बाद बाल गोपाल को पालकी में विराजमान कर झुलाया गया। पूरी रात भजन-कीर्तन चलता रहा। इस अवसर पर सिंघाड़े और नारियल से विभिन्न व्यंजन भी तैयार किए गए।

निर्जला व्रत रखकर किया जन्म का इंतजार

जन्माष्टमी पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने निर्जला व्रत रखा और रात 12 बजे भगवान के जन्म का इंतजार किया। घरों में भी भगवान बाल गोपाल का विशेष पूजन किया गया। दूध, दही और शहद से अभिषेक के बाद बाल कृष्ण का आकर्षक श्रृंगार किया गया और उन्हें सजे हुए झूलों में झुलाया गया।

शहर में जगह-जगह फूटी मटकी

जन्माष्टमी का उल्लास शहर के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी नजर आया। विभिन्न संगठनों ने मटकी फोड़ प्रतियोगिताएं आयोजित कीं। बच्चों और युवाओं ने उत्साह के साथ इसमें हिस्सा लिया। डीजे की धुन पर युवा नाचते-गाते नजर आए। कई स्थानों पर विजेताओं के लिए पुरस्कार भी रखे गए थे।

फांसी से मौत पर उठे सवाल,परिजनों ने जताई हत्या की आशंका

शव घर पहुंचने के बाद दिखे चोट के निशान,दुष्कर्म के बाद हत्या का आरोप,आईजी के निर्देश पर दोबारा हुआ पोस्टमार्टम

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,04 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

सूरजपुर जिले के भटगांव थाना क्षेत्र में घरेलू काम करने वाली आदिवासी किशोरी की फांसी पर लटकी लाश मिलने के मामले में परिजनों ने मौत को लेकर गंभीर सवाल उठाए हैं। उनका आरोप है कि किशोरी की दुष्कर्म के बाद हत्या की गई और घटना को फांसी का रूप देने की कोशिश की गई। शव घर पहुंचने के बाद शरीर पर चोट के निशान और प्राइवेट पार्ट में सूजन देखने का दावा करते हुए परिजनों ने दोबारा पोस्टमार्टम की मांग की। करौंधा निवासी श्रवण जायसवाल के घर किशोरी घरेलू काम करती थी। वह बलरामपुर जिले की रहने वाली थी और छह भाई-बहनों में एक थी। पिता की मौत हो चुकी है। परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण एक महिला ने उसे श्रवण जायसवाल के घर घरेलू काम के लिए रखा था। किशोरी वहीं रहकर काम करती थी। मंगलवार शाम श्रवण जायसवाल के घर में किशोरी का शव फांसी के फंदे पर लटका मिला। सूचना मिलने पर परिजन भटगांव अस्पताल पहुंचे। बुधवार को पोस्टमार्टम के बाद पुलिस ने शव परिजनों को सौंप दिया। शव घर ले जाने के बाद अंतिम संस्कार की तैयारी के दौरान परिजनों ने शरीर पर चोट के निशान देखे। इसके बाद उन्होंने मौत की परिस्थितियों पर संदेह जताते हुए पुलिस की कार्रवाई पर भी सवाल उठाए।

शव लेकर आईजी कार्यालय पहुंचे परिजन : परिजन गुरुवार देर शाम शव को पिकअप में लेकर आईजी कार्यालय पहुंचे और मामले की निष्पक्ष जांच के साथ दोबारा पोस्टमार्टम कराने की मांग की। परिजनों की मांग पर आईजी के निर्देश से शुक्रवार को मेडिकल कॉलेज अस्पताल में डॉक्टरों की चार सदस्यीय टीम ने शव का दोबारा पोस्टमार्टम किया। पोस्टमार्टम के बाद परिजन शव लेकर बलरामपुर जिले स्थित अपने गृह ग्राम रवाना हो गए। घटना के चार दिन बाद किशोरी का अंतिम संस्कार किया गया। अब दूसरी पोस्टमार्टम रिपोर्ट से ही यह स्पष्ट हो सकेगा कि किशोरी की मौत फांसी लगाने से हुई या उसके पीछे कोई अन्य वजह थी। पुलिस जांच और पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई करेगी।

आंगनबाड़ी भवन की मरम्मत में भ्रष्टाचार का आरोप

बिना काम कराए 33,375 आहरण का दावा,जर्जर भवन में बैठ रहे मासूम

-सुदामा राजवाड़े-

कुसमी/बलरामपुर,04 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)। विकासखंड कुसमी के ग्राम पंचायत इदरीकला के पूर्व टोला स्थित आंगनबाड़ी केंद्र में मरम्मत कार्य के नाम पर वित्तीय अनियमितता के आरोप सामने आए हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि आंगनबाड़ी भवन की मरम्मत के लिए स्वीकृत 33,375 की राशि का आहरण कर लिया गया,लेकिन मौके पर मरम्मत कार्य दिखाई नहीं दे रहा है। ग्रामीणों ने मामले की निष्पक्ष जांच कर जिम्मेदारों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

जर्जर भवन में नौनिहालों की सुरक्षा पर सवाल : पूर्व टोला का आंगनबाड़ी भवन वर्तमान में जर्जर स्थिति में बताया जा रहा है। भवन की दीवारों का प्लास्टर जगह-जगह उखड़ रहा है और सीलन के कारण स्थिति खराब है। ग्रामीणों के अनुसार भवन की छत और अन्य हिस्सों की हालत भी चिंताजनक है। ऐसे में आंगनबाड़ी केंद्र में आने वाले छोटे बच्चों,गर्भवती महिलाओं और धात्री माताओं की सुरक्षा को लेकर सवाल खड़े हो रहे हैं।

कागजों में मरम्मत,मौके पर काम नहीं होने का आरोप : ग्रामीणों के मुताबिक शासन स्तर से भवन के जीर्णोद्धार/मरम्मत के लिए ?33,375 की राशि स्वीकृत की गई थी। आरोप है कि सरपंच और सचिव की मिलीभगत से मरम्मत कार्य पूर्ण दर्शाकर राशि का आहरण कर लिया गया,जबकि भवन की मौजूदा स्थिति में अपेक्षित मरम्मत कार्य नजर नहीं आता। हालांकि,इन आरोपों की आधिकारिक पुष्टि जांच के बाद ही हो सकेगी। ऐसे में राशि कब और किस प्रक्रिया के तहत आहरित हुई,किस एजेंसी अथवा व्यक्ति को भुगतान किया गया तथा कार्य की माप-पुस्तिका एवं उपयोगिता संबंधी दस्तावेजों में क्या दर्ज है,इसकी जांच महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

ग्रामीणों ने की जांच और राशि वसूली की मांग : ग्रामीणों ने जिला प्रशासन एवं जनपद पंचायत कुसमी के अधिकारियों से मामले की स्थल जांच कराने की मांग की है। उनका कहना है कि यदि जांच में वित्तीय अनियमितता अथवा शासकीय राशि के दुरुपयोग की पुष्टि होती है तो जिम्मेदारों के खिलाफ नियमानुसार अनुशासनात्मक एवं कानूनी कार्रवाई की जाए तथा राशि की वसूली की जाए।

चोरी के शक में युवकों पर एयरगन से फायर,गर्दन में छर्रे लगने से एक घायल

आश्रम के ग्राउंड में बैठे थे दोनों युवक,फादर ने गेट बंद कर दौड़ाया;पुलिस ने गिरफ्तार कर एयरगन जब्त की

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,04 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

रिंग रोड नमनाकला स्थित खीस्त मिलन आश्रम में चोरी के संदेह में दो युवकों पर एयरगन से फायर करने का मामला सामने आया है। शुक्रवार दोपहर आश्रम के फादर विनोद तिर्की ने ग्राउंड में बैठे दो युवकों पर एयरगन से गोली चला दी। भागने के दौरान एक युवक आयुष सोनकर के गर्दन में छर्रे लग गए, जिससे वह घायल हो गया। घटना के बाद युवकों ने डायल-112 पर सूचना दी। शिकायत के आधार पर कोतवाली पुलिस ने फादर को गिरफ्तार कर एयरगन जब्त कर ली है। बताया गया कि खटिकपारा निवासी एजाज सोनकर और आयुष सोनकर शुक्रवार दोपहर आश्रम के ग्राउंड में बैठे थे। दोनों के वहां धूम्रपान करने की बात सामने आई है। इसी दौरान फादर विनोद तिर्की की नजर उन पर पड़ी। उन्हें आशंका हुई कि दोनों युवक चोरी की नीयत से आश्रम परिसर में घुसे हैं। इसके बाद उन्होंने एयरगन निकालकर दोनों पर फायर कर दिया।

गेट बंद कर दिया, डायल-112 को दी सूचना : एयरगन देखकर दोनों युवक भागने लगे। इसी दौरान आयुष की गर्दन में छर्रे लग गए। घायल युवक का आरोप है कि फादर ने गड़ासा लेकर भी उन्हें दौड़ाया। इसके बाद आश्रम का मुख्य गेट बंद कर दिया गया। दोनों युवकों ने डायल-112 पर फोन कर पुलिस को घटना की सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों को आश्रम परिसर से बाहर निकाला। आयुष को अस्पताल ले जाया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद उसे छुट्टी दे दी गई। घायल आयुष की रिपोर्ट पर पुलिस ने फादर विनोद तिर्की को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने उसके कब्जे से एयरगन भी बरामद की है। युवकों का आरोप है कि फायरिंग के बाद आश्रम के लोगों ने एयरगन को छिपाने का प्रयास किया और कपड़े में लपेटकर कार से ले जाया गया। हालांकि पुलिस ने फादर के पास से गड़ासा बरामद नहीं किया है।

आर्म्स एक्ट में कार्रवाई : कोतवाली प्रभारी एसआई अखिलेश सिंह ने बताया कि फादर ने युवकों के चोरी की नीयत से आश्रम में घुसने के संदेह में एयरगन से फायर किया था। आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है और एयरगन जब्त कर उसके खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत कार्रवाई की गई है।

पति व बच्चों के साथ जमीन में सोई महिला की सर्पदंश से मौत

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,04 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

प्रतापपुर थाना क्षेत्र के ग्राम पंपापुर में शुक्रवार की अहले सुबह सांप ने महिला को डस लिया। महिला पति व बच्चों के साथ जमीन में बिस्तर लगाकर सोई थी। उसे इलाज के लिए प्रतापपुर से रेफर करने पर मिशन अस्पताल में भर्ती कराया गया था। यहां उसकी मौत हो गई। जानकारी के अनुसार फुलकेन टेकाम पति मलकुराम टेकाम उम्र 31 वर्ष प्रतापपुर थाना क्षेत्र के ग्राम पंपापुर की रहने वाली थी। इसका पति का कहना है कि 3 सितंबर की रात को खाना खाने के बाद पत्नी व बच्चों के साथ कमरे में जमीन पर बिस्तर लगाकर सोया था। शुक्रवार की अहले सुबह करीब 4 बजे इसकी पत्नी फुलकेन उठकर बताई की पीठ में कुछ काट लिया है। पति ने बच्चों को हटाकर देखा तो बिस्तर में करैत सांप था और महिला के पीठ में डसने का निशान था। परिजन उसे इलाज के लिए प्रतापपुर अस्पताल ले गए। यहां डॉक्टर ने उसकी स्थिति को गंभीर देखते हुए अंबिकापुर रेफर कर दिया। परिजन उसे अंबिकापुर मिशन अस्पताल में भर्ती कराया। यहां कुछ देर इलाज चलने के बाद महिला की मौत हो गई।

जहरीले जीव के काटने से पीड़ित युवक की मौत

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,04 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

कोरिया जिले के बैकुंठपुर में सोने के दौरान जहरीले जीव ने किशोर के दाहिने कान के बगल में कर्द में काट लिया था। गंभीर स्थिति में उसे अंबिकापुर मेडिकल कॉलेज अस्पताल लाया गया। यहां जांच के दौरान डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। जानकारी के अनुसार संतोष पनिका पिता रंगलाल पनिका उम्र 17 वर्ष कोरिया जिले के बैकुंठपुर थाना क्षेत्र के सत्तीपारा का रहने वाला था। इसकी दादी 3 सितंबर को अस्पताल में भर्ती थी। संतोष अस्पताल में खाना पहुंचाने के बाद घर में आकर सो गया था। रात करीब 3 बजे उसके दाहीने कान के बगल में गर्दन में कुछ काटने का एहसास हुआ। वह इसकी जानकारी परिजन को दी। परिजन ने बिस्तर में देखा तो कुछ नहीं दिखाई दिया। इसके बाद उसकी तबियत बिगडऩी शुरू हो गई। उसे बैकुंठपुर अस्पताल में भर्ती कराए। यहां प्राथमिक उपचार के बाद उसे अंबिकापुर मेडिकल कॉलेज अस्पताल रेफर कर दिया। यहां जांच के दौरान डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया।

शिक्षक दिवस पर 96 शिक्षकों का होगा सम्मान

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,04 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

शासकीय कन्या उमावि में 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षक सम्मान समारोह आयोजित किया गया है। कार्यक्रम में सरगुजा जिले के सेवानिवृत, मृत एवं निजी विद्यालय सहित लगभग 96 शिक्षकों का सम्मान किया जाएगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संभागीय आयुक्त नरेंद्र दुग्गा होंगे। जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता आईजी दीपक झा करेंगे।

डिजिटल अरेस्ट के नाम पर डराएं तो फोन काट दें,पुलिस ने वरिष्ठ नागरिकों को बताए साइबर ठगी से बचने के तरीके

सियान गुड़ी में 50 बुजुर्गों को साइबर अपराधों की जानकारी,पेंशन,केवाईसी,फर्जी कस्टमर केयर और ऑनलाइन निवेश के नाम पर होने वाली ठगी से किया सावधान

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,04 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

साइबर ठग अब ऑनलाइन ठगी के लिए वरिष्ठ नागरिकों को भी निशाना बना रहे हैं। कभी पुलिस, सीबीआई, ईडी या ट्राई का अधिकारी बनकर डराया जाता है तो कभी पेंशन,केवाईसी अपडेट और बैंक खाता बंद होने का झांसा देकर निजी जानकारी हासिल की जाती है। ऐसे अपराधों से बचाने के लिए सरगुजा पुलिस द्वारा चलाए जा रहे 'साइबर जागृति अभियान' के तहत स्थानीय सियान गुड़ी में वरिष्ठ नागरिकों के लिए विशेष जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। डीआईजी एवं एसएसपी सरगुजा राजेश अग्रवाल के निर्देशन और अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रितेश चौधरी के नेतृत्व में आयोजित कार्यक्रम में करीब 50 वरिष्ठ नागरिक शामिल हुए। पुलिस अधिकारियों और साइबर विशेषज्ञों ने बुजुर्गों को साइबर ठगी के नए तरीकों की जानकारी देने के साथ उनसे बचाव के व्यावहारिक उपाय भी बताए। कार्यक्रम में सियान गुड़ी की संचालिका रीता अग्रवाल, 'नवा बिहान' संस्था के अजय तिवारी एवं मंगल पांडे, पुलिस विभाग से उप निरीक्षक अभय तिवारी तथा साइबर सेल से अनुज जायसवाल और अमन पुरी उपस्थित रहे।

'डिजिटल अरेस्ट' से डरें नहीं, यह कानूनी प्रावधान ही नहीं : साइबर जागरूकता कार्यक्रम में डिजिटल अरेस्ट को लेकर वरिष्ठ नागरिकों को विशेष रूप से सावधान किया गया। बताया गया कि साइबर ठग पुलिस, सीबीआई, ईडी या अन्य सरकारी एजेंसी का अधिकारी बनकर वीडियो कॉल करते हैं। इसके बाद किसी अवैध पार्सल,सिम कार्ड या बैंक खाते का हवाला देकर गिरफ्तारी का डर दिखाया जाता है और घर के किसी कमरे में रहने तथा किसी से संपर्क नहीं करने का दबाव बनाया जाता है। पुलिस ने स्पष्ट किया कि 'डिजिटल अरेस्ट' नाम की कोई कानूनी गिरफ्तारी व्यवस्था नहीं है। किसी सरकारी एजेंसी द्वारा वीडियो कॉल के माध्यम से गिरफ्तारी करने या पैसे मांगने की बात पर भरोसा नहीं करना चाहिए। ऐसा कॉल आने पर तुरंत फोन काटकर परिवार या पुलिस को सूचना देने की सलाह दी गई।

पेंशन और जीवन प्रमाण पत्र के नाम पर भी ठगी : वरिष्ठ नागरिकों को पेंशन और डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र के नाम पर होने वाली धोखाधड़ी से भी सावधान किया गया। साइबर ठग पेंशन बंद होने या जीवन प्रमाण पत्र अपडेट कराने के नाम पर लिंक भेजकर बैंक संबंधी जानकारी हासिल करने की कोशिश करते हैं। पुलिस ने कहा कि पेंशन या बैंक से संबंधित किसी भी समस्या के लिए संबंधित कार्यालय या बैंक शाखा से सीधे संपर्क करें। फोन पर किसी अनजान व्यक्ति को बैंक संबंधी जानकारी नहीं दें।

बिजली बिल से लेकर केवाईसी तक,डर दिखाकर खाली कर रहे खाते : फर्जी कस्टमर केयर के नाम पर होने वाली ठगी के बारे में भी बुजुर्गों को जानकारी दी गई। ठग बिजली कनेक्शन काटने, सिम बंद होने,बैंक खाता फ्रीज होने या केवाईसी अपडेट नहीं होने का डर दिखाकर ओटीपी,बैंक डिटेल या अन्य जानकारी मांगते हैं।

पुलिस ने सलाह दी कि अनजान नंबर से भेजे गए लिंक पर क्लिक न करें और किसी के कहने पर कोई ऐप डाउनलोड न करें। ऐसा करने से मोबाइल या बैंकिंग संबंधी जानकारी साइबर ठगों के हाथ लग सकती है।

सरगुजा सेवा समिति की नई कार्यकारिणी गठित,पीजी कॉलेज मैदान में होगा भव्य विजयादशमी महोत्सव

रावण दहन के साथ होगी भव्य आतिशबाजी, संभाग स्तरीय लोकनृत्य व रामचरितमानस गायन प्रतियोगिता,भगवान श्रीराम की शोभायात्रा निकलेगी

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,04 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

सरगुजा सेवा समिति ने आगामी विजयादशमी महोत्सव की तैयारियों को लेकर संगठन को नए सिरे से सक्रिय करते हुए नवीन कार्यकारिणी का गठन किया है। समिति की अध्यक्ष श्रीमती रजनी रविशंकर त्रिपाठी के निवास पर आयोजित बैठक में वरिष्ठ पदाधिकारी अखिलेश सोनी की उपस्थिति में पुरानी कार्यकारिणी को भंग कर आगामी सत्र के लिए नई कार्यकारिणी की घोषणा सर्वसम्मति से की गई। नई कार्यकारिणी में श्रीमती रजनी रविशंकर त्रिपाठी को पुनः अध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी गई है। राजेश अग्रवाल,अनिल सिंह मेजर,ललन प्रताप सिंह,मंजूषा भगत और चन्द्रशेखर तिवारी को संरक्षक बनाया गया है। अखिलेश सोनी,भारत सिंह सिसोदिया, विद्यानंद मिश्रा,राजीव विश्वकर्मा, प्रयागराज साहू,राजेश कश्यप,महेंद्र अग्रवाल और विशाल गोस्वामी को उपाध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गई है। संजय अग्रवाल और मधुसूदन शुक्ला महासचिव होंगे। आकाश गुप्ता,शुभम अग्रवाल और मधु चौदाहा को सचिव बनाया गया है। जयंत जैन,नरेंद्र टुटेजा,दीपक अग्रवाल, नीरज अग्रवाल,देवेंद्र सिंह,वीर सोनी, अमन गुप्ता और अविनाश मंडल सह-सचिव होंगे। दीपक सोनी कोषाध्यक्ष तथा पीयूष कुमार त्रिपाठी को प्रचार-प्रसार प्रमुख सह मीडिया प्रभारी की जिम्मेदारी संभालेंगे।

पीजी कॉलेज मैदान में फिर सजेगा दशहरा का भव्य मंच : बैठक में इस वर्ष भी विजयादशमी महोत्सव को भव्य स्वरूप में आयोजित करने का निर्णय लिया गया। आयोजन पीजी कॉलेज ग्राउंड में होगा। अंबिकापुर में इस मैदान पर होने वाला सार्वजनिक रावण दहन लंबे समय से दशहरा उत्सव का प्रमुख आकर्षण रहा है। पूर्व वर्षों में यहां रावण के साथ मेघनाद और कुंभकर्ण के पुतलों का दहन तथा आतिशबाजी देखने बड़ी संख्या में शहर और आसपास के लोग जुटते रहे हैं। इस वर्ष भी आयोजन में विशाल रावण दहन और भव्य आतिशबाजी मुख्य आकर्षण रहेगी। इसके साथ ही धार्मिक और सांस्कृतिक परंपरा को व्यापक मंच देने के लिए संभाग स्तरीय लोकनृत्य प्रतियोगिता और संभाग स्तरीय रामचरितमानस गायन प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। पूर्व के आयोजनों में भी इन दोनों प्रतियोगिताओं के विजेता दलों को सम्मानित किया जाता रहा है।

भगवान श्रीराम की निकलेगी भव्य शोभायात्रा : विजयादशमी के अवसर पर भगवान श्रीराम,लक्ष्मण और वीर हनुमान की भव्य शोभायात्रा भी निकाली जाएगी। शोभायात्रा नगर के प्रमुख मार्गों से होते हुए पीजी कॉलेज मैदान पहुंचेगी,जहां धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के बाद रावण दहन होगा। अंबिकापुर में दशहरा आयोजन से पहले श्रीराम की शोभायात्रा निकालने की परंपरा रही है। समिति ने आयोजन को व्यवस्थित और भव्य बनाने के लिए तैयारियां शुरू करने का निर्णय लिया है। आने वाले दिनों में कार्यकारिणी की बैठक कर सदस्यों को अलग-अलग जिम्मेदारियां सौंपी जाएंगी। आयोजन में बड़ी संख्या में शहरवासियों और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से लोगों के पहुंचने की संभावना को देखते हुए व्यवस्थाओं को लेकर भी कार्ययोजना तैयार की जाएगी।

वीवीआईपी उद्घाटन के बाद 'गायब' हुआ पर्यटक वाहन!

गुरु घासीदास राष्ट्रीय उद्यान में बड़े फर्जीवाड़े की बू, जांच की मांग

तस्वीर में वाहन... अब कहां है?

तत्कालीन मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने किया था लोकार्पण
जून 2022, रामगढ़ (कोरिया)

पर्यटकों के लिए उपलब्ध कराया गया था वाहन, अब इसकी मौजूदगी पर सवाल

मुख्यमंत्री, गृह मंत्री, प्रभारी सचिव, कलेक्टर, एसपी, डीएफ़ओ समेत कई बड़े अधिकारी थे मौजूद, अब रिकॉर्ड और वास्तविक स्थिति पर उठे सवाल

फीता कटा,फोटो खिंची...फिर कहां चला गया पर्यटक वाहन?

मुख्यमंत्री ने किया लोकार्पण,अब वाहन की तलाश! गुरु घासीदास राष्ट्रीय उद्यान में बड़ा सवाल

फीता कटते ही वाहन की कहानी खत्म? गुरु घासीदास राष्ट्रीय उद्यान में पर्यटक वाहन पर सवाल

लोकार्पण मंच पर चमका पर्यटक वाहन,बाद में कहां हुआ 'अदृश्य'?

फोटो में वाहन मौजूद,जमीन पर गायब! पर्यटक वाहन की 'गुमशुदगी' पर जांच की मांग

मुख्यमंत्री के हाथों उद्घाटन... अब वाहन का अता-पता नहीं! किसके पास है सरकारी सुविधा?

लोकार्पण की तस्वीर बनी,पर्यटक वाहन नहीं! गुरु घासीदास राष्ट्रीय उद्यान में फर्जीवाड़े की बू

फीता कटा तो वाहन सरकारी,अब पूछे तो ठिकाना गायब! गुरु घासीदास में बड़ा सवाल...

तत्कालीन मुख्यमंत्री भूपेश बघेल,गृह मंत्री ताम्रध्वज साहू,प्रभारी सचिव एस.प्रकाश समेत प्रशासन और वन विभाग के आला अधिकारियों की मौजूदगी में हुआ था लोकार्पण...

अब कोरिया जन सहयोग समिति ने पूछा– वाहन खरीदा गया था तो कहां है, किराए पर था तो भुगतान किसे हुआ?

राजन पाण्डेय

कोरिया,04 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)। सरकारी कामकाज में लोकार्पण का अपना ही जादू है, मंच सजा,कुर्सियां लगीं,माइक चालू हुआ,बड़े-बड़े नाम मंच पर पहुंचे,फीता कटा और कैमरे ने इतिहास को कैद कर लिया,उसके बाद अगर सुविधा जनता को दिखाई दे तो ठीक,नहीं दिखाई दे तो कम से कम लोकार्पण की तस्वीर तो रिकॉर्ड में सुरक्षित रहती ही है। गुरु घासीदास राष्ट्रीय उद्यान से जुड़े कथित पर्यटक वाहन का मामला कुछ ऐसा ही सवाल खड़ा कर रहा है,दावा है कि जून 2022 में रामगढ़ में तत्कालीन मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के 'भेंट-मुलाकात' कार्यक्रम के दौरान वन विभाग से जुड़े पर्यटक वाहन का लोक अर्पण कराया गया था,उस कार्यक्रम में तत्कालीन गृह मंत्री ताम्रध्वज साहू, प्रभारी सचिव एस.प्रकाश,कलेक्टर,पुलिस अधीक्षक, डीएफओ तथा वन विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की मौजूदगी की बात सामने आई है, अब असली कहानी यहीं से शुरू होती है।

जिस वाहन का लोकार्पण इतने बड़े मंच पर हुआ, वह आज कहां है?–यही वह सवाल है, जिसका जवाब अब कोरिया जन सहयोग समिति मांग रही है,और सवाल सिर्फ यह नहीं कि वाहन कहां खड़ा है,सवाल यह भी है कि वह आया कैसे था,किस पैसे से आया था, किसके नाम था,किसे सौंपा गया कितने दिन चला, कितने पर्यटकों को घुमाया और उससे कितनी आमदनी हुई? यानी मामला अब लोकार्पण से निकलकर लॉगबुक तक पहुंच गया है।

अगर वाहन खरीदा गया था तो 'खरीद की कुंडली' खोलिए–मामले की जांच में पहला सवाल होना चाहिए कि वाहन खरीदा गया था या नहीं,यदि वाहन खरीदा गया था तो उसके लिए वित्तीय स्वीकृति किस अधिकारी ने दी? राशि किस मद से जारी हुई? कुल लागत कितनी थी? वाहन किस कंपनी अथवा एजेंसी से खरीदा गया? क्या खरीद प्रक्रिया में निर्धारित नियमों का पालन किया गया? बिल किसके नाम पर बना? भुगतान किस खाते से हुआ? वाहन किसके नाम पर पंजीकृत हुआ? क्या इसे वन विभाग की संपत्ति के रूप में दर्ज किया गया या ईको विकास समिति की? और सबसे महत्वपूर्ण–स्टॉक रजिस्टर में आज भी वह वाहन मौजूद है या नहीं? अगर कागज में वाहन मौजूद है तो भौतिक रूप से भी उसका मिलना चाहिए,यदि भौतिक सत्यापन में वाहन नहीं मिलता,तो सवाल और गंभीर हो जाता है।

और अगर किराए का वाहन था तो फिर 'लोकार्पण' का हिसाब अलग होगा–दूसरी संभावना यह हो सकती है कि कार्यक्रम में वाहन किराए पर लेकर प्रस्तुत किया गया हो, अगर ऐसा था तो फिर सवाल यह नहीं कि वाहन खरीदा कहां से गया,बल्कि यह होगा कि किससे किराए पर लिया गया? कितने समय के लिए लिया गया? किराया कितना तय हुआ? किस अधिकारी ने अनुमति दी? किस मद से भुगतान हुआ? किसे भुगतान किया गया? क्या इसके लिए निविदा या निर्धारित प्रक्रिया अपनाई गई? क्या वाहन केवल मुख्यमंत्री के कार्यक्रम के लिए उपलब्ध कराया गया था? यदि हां,तो उसे पर्यटक वाहन के रूप में प्रस्तुत करने का आधार क्या था? और अगर बाद में भी पर्यटन के लिए इस्तेमाल किया गया तो उसकी अवधि और भुगतान का रिकॉर्ड कहां है? यानी वाहन खरीद का मामला हो या किराए का–दोनों रास्ते दस्तावेजों तक पहुंचते हैं।

लोकार्पण के बाद 'पर्यटक' कहां और वाहन कहां?–पर्यटक वाहन का उद्देश्य पर्यटक को सुविधा देना है, लेकिन अगर पर्यटक ही वाहन को तलाशता रह जाए तो योजना का उद्देश्य उलट जाता है,कल्पना कीजिए–पर्यटक गुरु घासीदास क्षेत्र में पहुंचता है और पूछता है, 'साहब,पर्यटक वाहन कहां मिलेगा?'जवाब आता है– 'वाहन तो है।' पर सवाल...'कहां है?'जवाब–'रिकॉर्ड में होगा।' फिर अगला सवाल...'चलता है?' जवाब– 'कभी चला होगा।' यही वह स्थिति है, जिसे अब दस्तावेजों से साफ करना होगा,क्योंकि सरकारी योजना का मूल्यांकन उद्घाटन की भीड़ से नहीं,उपयोगिता और परिणाम से होता है।

ईको विकास समिति लोलकी के खाते की जांच जरूरी–वाहन पर ईको विकास समिति लोलकी का नाम अंकित होने की बात सामने आई है, इसलिए जांच में समिति की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता, यदि वाहन समिति को सौंपा गया था तो उसका सुपुर्दगी पत्र कहां है? क्या समिति के पास वाहन की चाबी और दस्तावेज थे? क्या समिति ने वाहन चलाने के लिए चालक रखा? क्या पर्यटकों से शुल्क लिया गया? क्या समिति के बैंक खाते में उस आय की राशि जमा हुई? क्या ईंधन और रखरखाव का खर्च समिति के खाते से हुआ? क्या समिति की बैठक में वाहन संचालन का हिसाब प्रस्तुत किया गया? यदि इन सवालों के जवाब रिकॉर्ड में हैं तो पूरा मामला कुछ ही दस्तावेजों में साफ हो सकता है। अगर रिकॉर्ड ही नहीं है, तो फिर जांच का दायरा और बढ़ना स्वाभाविक है।

वीवीआईपी मंच की चमक से बढ़ी जवाबदेही–इस मामले में सबसे महत्वपूर्ण बात यही है कि कथित तौर पर वाहन का लोक अर्पण कोई सामान्य कार्यालयीन कार्यक्रम नहीं था,तत्कालीन मुख्यमंत्री,गृह मंत्री,प्रभारी सचिव,कलेक्टर,एसपी,डीएफओ और वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों की मौजूदगी वाले कार्यक्रम में किसी सुविधा का लोकार्पण हुआ था तो स्वाभाविक रूप से उसका महत्व भी सामान्य विभागीय संपत्ति से अधिक था, इसलिए सवाल भी सामान्य नहीं हो सकता,क्या लोकार्पण से पहले वाहन की जांच हुई थी? क्या वाहन उसी दिन विभाग की संपत्ति था? क्या वाहन का पंजीयन हो चुका था? क्या इसे ईको विकास समिति को विधिवत सौंपा गया था? लोकार्पण के बाद इसकी निगरानी किस अधिकारी की जिम्मेदारी थी? और सबसे बड़ा सवाल...अगर वाहन जनता के लिए था तो जनता से दूर क्यों हो गया?

'तस्वीर बनाम हकीकत' की जांच जरूरी–इस पूरे प्रकरण में सबसे दिलचस्प विरोधाभास यही है कि लोकार्पण की तस्वीर एक ठोस चीज है,तस्वीर कहती है...वाहन मंच पर था,अब रिकॉर्ड को बताना होगा...उसके बाद क्या हुआ? क्योंकि किसी वाहन का अस्तित्व केवल फोटो खिंचने से साबित नहीं होता। उसका वास्तविक अस्तित्व उसके दस्तावेज और भौतिक सत्यापन से साबित होता है,इसलिए स्वतंत्र जांच में लोकार्पण की तस्वीर के साथ-साथ वाहन का पंजीयन, चेसिस-इंजन नंबर, स्टॉक रजिस्टर और भौतिक सत्यापन सबसे अहम कड़ियां होंगी।

कोरिया जन सहयोग समिति ने खोला सवालों का पिटारा–मामले को लेकर कोरिया जन सहयोग समिति ने गंभीर आपत्ति जताई है,समिति के कार्यकारी अध्यक्ष अधिवक्ता जयचन्द सोनपाकर एवं पुष्पेंद्र राजवाड़े ने मामले की निष्पक्ष एवं उच्चस्तरीय जांच की मांग की है, समिति के अनुसार गुरु घासीदास राष्ट्रीय उद्यान के संचालक को औपचारिक ज्ञापन सौंपकर पूरे मामले की जांच की मांग की जाएगी,समिति का जोर इस बात पर है कि वाहन की खरीद अथवा किराए,भुगतान,संचालन, आय-व्यय और वर्तमान स्थिति का पूरा रिकॉर्ड सामने आना चाहिए,यदि जांच में वाहन की खरीद प्रमाणित होती है तो उसकी वर्तमान भौतिक मौजूदगी की जांच हो,यदि वाहन किराए का था तो किराया और भुगतान की प्रक्रिया सामने आए,यदि वाहन पर्यटकों के लिए चलाया गया तो उसकी लॉगबुक और आय का हिसाब सामने आए, और यदि वाहन लंबे समय से अनुपयोगी पड़ा है तो उसका रखरखाव और वर्तमान स्थिति बताई जाए।

समिति ने दी आंदोलन की चेतावनी–समिति पदाधिकारियों ने चेतावनी दी है कि यदि मामले में त्वरित जांच कर जिम्मेदारी तय नहीं की गई तो आंदोलन किया जाएगा, समिति का कहना है कि यह मामला केवल एक वाहन तक सीमित नहीं है,यदि जांच शुरू होती है तो राष्ट्रीय उद्यान में पूर्व में हुए अन्य वित्तीय एवं निर्माण संबंधी कार्यों की कथित अनियमितताओं को भी जांच के दायरे में लाने की मांग की जाएगी,हालांकि इन व्यापक आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि जांच के बाद ही हो सकती है। इसलिए फिलहाल सबसे ठोस सवाल उसी वाहन से जुड़े रिकॉर्ड का है।

जांच हुई तो खुलेंगे ये दस्तावेज:-

- वाहन की प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति।
- खरीद अथवा किराए का आदेश।
- निविदा/खरीद प्रक्रिया से जुड़े दस्तावेज।
- बिल और भुगतान वाउचर।
- वाहन का पंजीयन प्रमाणपत्र।
- चेसिस और इंजन नंबर।
- स्टॉक रजिस्टर।
- ईको विकास समिति को सुपुर्दगी पत्र।
- वाहन की लॉगबुक।
- ईंधन खर्च का रिकॉर्ड।
- चालक की नियुक्ति/भुगतान संबंधी रिकॉर्ड।
- पर्यटकों से प्राप्त शुल्क का हिसाब।
- समिति के बैंक खाते का संबंधित अवधि का विवरण।
- वाहन के रखरखाव एवं मरम्मत का रिकॉर्ड।
- नवीनतम भौतिक सत्यापन रिपोर्ट।

इन दस्तावेजों की एक-एक कड़ी जुड़ते ही यह पता लगाया जा सकता है कि वाहन वास्तव में पर्यटन सुविधा बना या केवल लोकार्पण की एक दिवसीय 'सरकारी कहानी' बनकर रह गया।

अब 'फीता काटने' से आगे की कहानी चाहिए–सरकारी परियोजनाओं में सबसे आसान काम उद्घाटन करना है। कठिन काम है–उसे वर्षों तक चलाना, उसका हिसाब रखना और जनता तक उसका लाभ पहुंचाना,गुरु घासीदास-तमोर पिंगला क्षेत्र में ईको-पर्यटन और स्थानीय रोजगार को बढ़ावा देने की सरकारी सोच के बीच पर्यटक वाहन जैसी सुविधाओं का महत्व और बढ़ जाता है, सरकार स्वयं पर्यटक वाहन संचालन को स्थानीय रोजगार से जोड़ने की बात कह चुकी है, ऐसे में कथित पर्यटक वाहन का वर्तमान पता स्पष्ट न होना महज प्रशासनिक जिज्ञासा नहीं है, यह सवाल है कि सरकारी योजना जमीन पर कितनी उतरी?

अब विभाग को देना होगा 'पांच सवालों' का जवाब:-

- पहला–वाहन खरीदा गया था या किराए पर लिया गया था?
- दूसरा–यदि खरीदा गया था तो किस मद से और कितनी राशि में?
- तीसरा–यदि किराए का था तो किसे और कितना भुगतान किया गया?
- चौथा–जून 2022 के बाद वाहन कितने समय तक पर्यटकों के लिए चला?
- पांचवां–आज वाहन किसके कब्जे में और किस स्थान पर है?

इन पांच सवालों के जवाब यदि दस्तावेजों के साथ मिल जाते हैं तो मामला खत्म,लेकिन अगर जवाब के बजाय फाइलें घूमने लगें,अधिकारी एक-दूसरे की ओर देखने लगें और वाहन का पता लगाने के लिए सरकारी मशीनरी को जंगल-जंगल भटकना पड़े,तो सवाल और बड़ा हो जाएगा,क्योंकि लोकार्पण की तस्वीर में वाहन साफ दिखाई देता है–अब जनता सिर्फ यह देखना चाहती है कि वह तस्वीर के बाहर आज कहां खड़ा है,और यदि वाहन मौजूद है तो सामने आए,यदि नहीं है तो उसके गायब होने की जवाबदेही तय हो,फीता काटने वाले मंच की तस्वीर बहुत हो चुकी–अब वाहन के पहियों का हिसाब चाहिए।

अटल विहार में अब हरियाली के साथ सुरक्षा और सुविधाओं का भी विस्तार

'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत मंत्री राजेश अग्रवाल ने किया पौधरोपण,बाउंड्रीवाल और ओपन जिम का लोकार्पण

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,04 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

सरगवां स्थित अटल विहार आवासीय योजना में बुधवार को पर्यावरण संरक्षण और कॉलोनी के विकास से जुड़ा कार्यक्रम आयोजित किया गया। 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत पर्यटन, संस्कृति, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व मंत्री राजेश अग्रवाल ने पौधरोपण किया। इस दौरान कॉलोनी में नवनिर्मित बाउंड्रीवाल और ओपन जिम का भी लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता छत्तीसगढ़ गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मंडल के अध्यक्ष अनुराग सिंह देव ने की। मंत्री राजेश अग्रवाल ने कहा कि पेड़ केवल पर्यावरण संतुलन बनाए रखने का माध्यम नहीं हैं,बल्कि आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य से भी जुड़े हैं। 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के माध्यम से प्रकृति संरक्षण को मातृशक्ति के सम्मान से जोडने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने कॉलोनीवासियों से इस वर्ष लगाए गए पौधों की जिम्मेदारी लेने और नियमित रूप से उनकी देखभाल करने की अपील की। उन्होंने पिछले वर्ष कॉलोनी में लगाए गए पौधों की स्थिति का भी जायजा लिया और उनके बेहतर विकास पर प्रसन्नता जताई। उन्होंने कहा कि पौधे लगाने के साथ उनकी सुरक्षा और संरक्षण भी उतना ही जरूरी है।

अन्य कॉलोनियों में भी चलेगा अभियान : कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अनुराग सिंह देव ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण को केवल एक दिन के कार्यक्रम तक सीमित नहीं रखा जाएगा। गृह निर्माण मंडल की अन्य आवासीय योजनाओं और कॉलोनियों में भी चरणबद्ध तरीके से पौधरोपण अभियान चलाया जाएगा। इसका उद्देश्य आवासीय क्षेत्रों में हरित क्षेत्र बढ़ाने के साथ उन्हें स्वच्छ,सुंदर और पर्यावरण अनुकूल बनाना है। उन्होंने कॉलोनीवासियों से पौधों की देखभाल को सामूहिक जिम्मेदारी बनाने की अपील की। उन्होंने पिछले वर्ष लगाए गए पौधों के बेहतर विकास पर संतोष जताया।

38.59 करोड़ की लागत से विकसित हुई योजना : गृह निर्माण मंडल के अंबिकापुर आयुक्त एमडी पनारिया ने बताया कि अटल विहार योजना सरगवां का विकास 9.70 एकड़ भूमि पर किया गया है। योजना में 38 करोड़ 59.22 लाख रुपए की लागत से विभिन्न विकास कार्य कराए गए हैं। यहां कुल 251 भवनों का निर्माण किया गया है। इनमें 14 एचआईजी, 12 सीनियर एमआईजी, 40 जूनियर एमआईजी, 63 एलआईजी और 122 ईडब्ल्यूएस भवन शामिल हैं। योजना के तहत बाउंड्रीवाल और डब्ल्यूएमएम सड़क का शेष निर्माण कार्य भी पूरा हो गया है। बाउंड्रीवाल बनने से कॉलोनी की सुरक्षा व्यवस्था मजबूत होने के साथ बाहरी और असामाजिक तत्वों के अनधिकृत प्रवेश पर भी नियंत्रण की उम्मीद है। वहीं ओपन जिम की सुविधा से कॉलोनीवासियों को व्यायाम के लिए बेहतर स्थान मिलेगा।

बच्चों ने प्रस्तुतियों से दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश : कार्यक्रम में कॉलोनी के बच्चों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। कुमारी स्तुति पाठक ने शिव स्तुति प्रस्तुत की। महर्षि विद्या मंदिर की किंजल एवं साथियों ने चारों युगों पर आधारित वैदिक नृत्य प्रस्तुत किया। तुर्वी साहू और पीहू ने 'एक पेड़ मां के नाम' विषय पर भाषण दिया। आराध्या सिन्हा और आरुष पाण्डेय ने पर्यावरण सुरक्षा पर प्रस्तुति दी। कुमारी शिवलोचनी राजवाड़े के निर्देशन में तन्मय एवं ग्रुप ने 'सेव ट्री' झांकी प्रस्तुत की, जिसे दर्शकों ने सराहा।

अतिथियों का किया सम्मान : कॉलोनी की बाउंड्रीवाल निर्माण की स्वीकृति में अध्यक्ष अनुराग सिंह देव के प्रयासों के लिए कॉलोनीवासियों ने उनका सम्मान किया। कार्यक्रम में महापौर मंजूषा भगत,जिला पंचायत अध्यक्ष निरूपा सिंह, भाजपा प्रदेश महामंत्री अखिलेश सोनी,भाजपा जिलाध्यक्ष भारत सिंह सिसोदिया, नगर निगम सभापति हरमिन्दर सिंह टिन्नी, पार्षद डॉ. शिवमंगल सिंह सहित जनप्रतिनिधि, अधिकारी और बड़ी संख्या में कॉलोनीवासी मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन राज्यपाल पुरस्कृत व्याख्याता अजय कुमार चतुर्वेदी ने किया। आभार प्रदर्शन कॉलोनी अध्यक्ष प्रमोद श्रीवास्तव ने किया।

सेवा संकल्प अभियान की हुंकार,भाजपा कोरिया ने कसी कमर

- सेवा से जनसंपर्क तक : भाजपा कोरिया की जिला कार्यशाला में बनी अभियान की रूपरेखा
- घर-घर पहुंचेगा सेवा संकल्प का संदेश, भाजपा कोरिया ने शुरू की तैयारियां
- सेवा संकल्प अभियान को सफल बनाने भाजपा कार्यकर्ताओं ने लिया संकल्प
- संगठन से जनभागीदारी तक,सेवा संकल्प अभियान के लिए भाजपा कोरिया तैयार
- सेवा, समर्पण और जनभागीदारी के साथ चलेगा अभियान,भाजपा ने बनाई रणनीति
- 17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक सेवा का अभियान,भाजपा कोरिया ने तैयार किया रोड मैप
- सेवा संकल्प अभियान की तैयारी तेज, जिला कार्यशाला में कार्यकर्ताओं को मिला मंत्र
- सेवा संकल्प अभियान को लेकर भाजपा कोरिया की जिला कार्यशाला संपन्न
- 17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक जिलेभर में होंगे सेवा,जनसंपर्क और जनभागीदारी के कार्यक्रम
- **प्रदेश महामंत्री अखिलेश सोनी ने कार्यकर्ताओं से मोदी के 25 वर्षों की जनसेवा और सरकार की योजनाओं को घर-घर तक पहुंचाने का किया आह्वान**

सेवा संकल्प अभियान की हुंकार, भाजपा कोरिया ने कसी कमर

मोदी की 25 वर्षों की सेवा यात्रा को जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान

कार्यशाला को संबोधित करते हुए प्रदेश महामंत्री अखिलेश सोनी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने सार्वजनिक जीवन का लंबा समय समाज और राष्ट्र की सेवा के लिए समर्पित किया है, मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री के रूप में उनके 25 वर्षों के सार्वजनिक जीवन को उन्होंने सुशासन, गरीब कल्याण, विकास और राष्ट्र निर्माण की यात्रा बताया, उन्होंने कार्यकर्ताओं से कहा कि सेवा संकल्प अभियान को केवल संगठन का कार्यक्रम नहीं माना जाना चाहिए,बल्कि इसे व्यापक जनसेवा और जनभागीदारी के अभियान के रूप में आगे बढ़ाया जाना चाहिए, सोनी ने कहा कि 17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक जिले में होने वाले कार्यक्रमों के माध्यम से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सेवा एवं समर्पण की भावना, केंद्र और राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं तथा विकसित भारत के संकल्प को घर-घर तक पहुंचाने का प्रयास किया जाए, उन्होंने जिला संगठन से लेकर मंडल और बूथ स्तर तक कार्यकर्ताओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने पर जोर दिया, भाजपा के राष्ट्रीय अभियान की रूपरेखा में भी सेवा गतिविधियों के साथ सरकारी योजनाओं से वंचित लोगों तक पहुंचने,युवाओं को जोड़ने और डिजिटल माध्यमों के जरिए अभियान को व्यापक बनाने पर जोर दिया गया है।

-संवाददाता-

बैकुंठपुर,04 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)। भारतीय जनता पार्टी जिला कोरिया द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सार्वजनिक जीवन के 25 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर प्रस्तावित सेवा संकल्प अभियान को लेकर जिला स्तरीय कार्यशाला आयोजित की गई,कार्यशाला में अभियान की रूपरेखा, संगठनात्मक तैयारियों तथा जिला, मंडल और बूथ स्तर तक कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारियों पर विस्तार से चर्चा की गई, भाजपा की ओर से आयोजित यह अभियान 17 सितंबर से 17 अक्टूबर 2026 तक चलेगा,राष्ट्रीय स्तर पर घोषित इस अभियान का उद्देश्य प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 25 वर्षों के सार्वजनिक जीवन,सेवा और जनकल्याण से जुड़े कार्यों को जनता तक पहुंचाने के साथ केंद्र एवं राज्य सरकार की योजनाओं को समाज के अंतिम व्यक्ति तक ले जाना है,भाजपा ने इस बार पारंपरिक सेवा कार्यक्रमों को व्यापक जनसंपर्क और जनभागीदारी से जोड़ने की तैयारी की है,बैकुंठपुर में आयोजित जिला कार्यशाला में प्रदेश महामंत्री अखिलेश सोनी,बैकुंठपुर विधायक भैयालाल राजवाड़े,जिला संगठन प्रभारी ललन प्रताप सिंह,भाजपा जिलाध्यक्ष देवेंद्र तिवारी,प्रदेश कार्यसमिति सदस्य कृष्ण बिहारी जायसवाल,जिला पंचायत अध्यक्ष मोहित पैकरा,किसान मोर्चा प्रदेश उपाध्यक्ष अनिल अग्रवाल,जिला पंचायत उपाध्यक्ष वंदना राजवाड़े,सरगुजा सहकारी बैंक उपाध्यक्ष जगदीश साहू,जिला महामंत्री एवं अभियान के जिला संयोजक पंकज गुप्ता तथा जिला महामंत्री कपिल जायसवाल सहित बड़ी संख्या में पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे।

सरकार की योजनाओं को जनता तक पहुंचाएं : **भैयालाल राजवाड़े**-बैकुंठपुर विधायक भैयालाल राजवाड़े ने कहा कि भाजपा का प्रत्येक कार्यकर्ता सेवा और समर्पण की भावना के साथ समाज के बीच काम करता है,उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार और मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार समाज के विभिन्न वर्गों के कल्याण के लिए कार्य कर रही है,उन्होंने कार्यकर्ताओं से सरकार की योजनाओं और उपलब्धियों की जानकारी लोगों तक पहुंचाने का आह्वान किया। साथ ही सेवा संकल्प अभियान के दौरान आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने की बात कही,राजवाड़े ने कहा कि संगठन के कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी केवल कार्यक्रम आयोजित करने तक सीमित नहीं है,बल्कि सरकार की योजनाओं का लाभ पात्र लोगों तक पहुंचाने में भी सहयोग करना है।

जिला,मंडल और बूथ स्तर पर बनेगी कार्ययोजना-जिला संगठन प्रभारी ललन प्रताप सिंह ने कार्यकर्ताओं से संगठनात्मक एकजुटता और बेहतर समन्वय के साथ अभियान को गति देने का आह्वान किया,उन्होंने कहा कि अभियान की सफलता के लिए जिला स्तर से लेकर मंडल और बूथ स्तर तक कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी स्पष्ट होनी चाहिए,उन्होंने कहा कि प्रत्येक क्षेत्र में स्थानीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रमों को जनभागीदारी से जोड़ा जाए,अभियान का उद्देश्य तभी पूरा होगा,जब संगठन के पदाधिकारी और कार्यकर्ता समाज के प्रत्येक वर्ग के बीच पहुंचकर लोगों को कार्यक्रमों से जोड़ेंगे।

पूरी ताकत और समन्वय से अभियान सफल बनाएंगे : देवेंद्र तिवारी-भाजपा जिलाध्यक्ष देवेंद्र तिवारी ने कहा कि कोरिया जिले के कार्यकर्ता पूरी ताकत,अनुशासन और आपसी समन्वय के साथ सेवा संकल्प अभियान को सफल बनाएंगे,उन्होंने कहा कि जिले के नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यकर्ता समाज के बीच पहुंचकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सेवा,समर्पण और राष्ट्र निर्माण की भावना को जन-जन तक पहुंचाएंगे,तिवारी ने कहा कि अभियान को केवल संगठनात्मक गतिविधियों तक सीमित नहीं रखा जाएगा,इसे जनसेवा और जनभागीदारी का व्यापक माध्यम बनाने का प्रयास किया जाएगा,जिला, मंडल और बूथ स्तर तक प्रत्येक कार्यकर्ता को अपनी जिम्मेदारी के अनुरूप सक्रिय भूमिका निभानी होगी।

कार्यकर्ताओं की एकजुटता को संगठन की सबसे बड़ी ताकत बताया-प्रदेश कार्यसमिति सदस्य कृष्ण बिहारी जायसवाल ने कहा कि संगठन की वास्तविक शक्ति उसके कार्यकर्ताओं की एकजुटता में होती है,उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं से सामूहिक भावना के साथ अभियान में जुटने का आह्वान किया,उन्होंने कहा कि सेवा संकल्प अभियान के उद्देश्यों को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए संगठन के प्रत्येक स्तर पर समन्वित प्रयास आवश्यक है,कार्यशाला में इस बात पर भी जोर दिया गया कि अभियान के दौरान होने वाले कार्यक्रमों में अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी सुनिश्चित की जाए और स्थानीय स्तर पर सेवा गतिविधियों को प्राथमिकता दी जाए।

17 सितंबर से शुरू होकर 17 अक्टूबर तक चलेगा अभियान-भाजपा के राष्ट्रीय कार्यक्रम के अनुसार इस वर्ष प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सार्वजनिक जीवन के 25 वर्ष पूरे होने के अवसर पर अभियान का दायरा सामान्य सेवा पखवाड़े की तुलना में बढ़ाया गया है। भाजपा ने 17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक महीनेभर चलने वाले कार्यक्रमों की योजना बनाई है,अभियान में सेवा, जनसंपर्क,सरकारी योजनाओं की जानकारी, युवाओं की भागीदारी और विभिन्न सामाजिक गतिविधियों को शामिल किया जा रहा है। राष्ट्रीय रूपरेखा में 'सेवा सेतु' जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से सरकारी योजनाओं से वंचित लोगों को आवश्यक दस्तावेज और योजनाओं से जोड़ने की पहल भी शामिल है। युवाओं के लिए इनोवेशन गतिविधियों और डिजिटल माध्यमों से सहभागिता बढ़ाने की भी योजना है,इसी व्यापक अभियान को कोरिया जिले में प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए जिला कार्यशाला में पदाधिकारियों को जिम्मेदारियां सौंपने और कार्यक्रमों की तैयारियों पर चर्चा की गई।

मंडल और मोर्चों की भी रहेगी सक्रिय भूमिका-कार्यशाला में जिला पदाधिकारियों के साथ विभिन्न मंडलों, मोर्चों और प्रकोष्ठों के पदाधिकारियों ने भाग लिया। भाजपा युवा मोर्चा, किसान मोर्चा,महिला मोर्चा,ओबीसी मोर्चा, अनुसूचित जाति मोर्चा,अनुसूचित जनजाति मोर्चा और अल्पसंख्यक मोर्चा के पदाधिकारियों की मौजूदगी रही, भाजयुमो जिलाध्यक्ष सतेन्द्र राजवाड़े,जिला महामंत्री साक्षी सिंह,किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष शिवचरण साहू,महिला मोर्चा जिला महामंत्री पुष्पलता राजवाड़े,ओबीसी मोर्चा जिलाध्यक्ष कृष्णा प्रजापति,अजा मोर्चा जिलाध्यक्ष दिलराज रवि, अजजा मोर्चा जिलाध्यक्ष विमलचंद चेरवा तथा अल्पसंख्यक मोर्चा जिलाध्यक्ष अशरफ खान सहित विभिन्न पदाधिकारी उपस्थित रहे,जिला कार्यशाला में जिला उपाध्यक्ष अशोक जायसवाल,बसंत राय,राजेश सिंह,अनिल साहू,रविशंकर राजवाड़े और चुन्नी पैकरा,नगर निकाय के जनप्रतिनिधि,जिला मंत्री,कोषाध्यक्ष,मीडिया एवं सोशल मीडिया टीम के पदाधिकारी भी शामिल हुए।

बूथ स्तर तक पहुंचेगा अभियान-कार्यशाला में इस बात पर विशेष जोर दिया गया कि किसी भी बड़े संगठनात्मक अभियान की सफलता तभी मानी जाएगी जब उसका प्रभाव बूथ स्तर तक दिखाई दे,इसी उद्देश्य से मंडल पदाधिकारियों और बूथ स्तर के कार्यकर्ताओं को अभियान से जोड़ने की रणनीति पर चर्चा की गई, कार्यकर्ताओं से कहा गया कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में कार्यक्रमों की तैयारी अभी से शुरू करें और स्थानीय स्तर पर लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करें,जिले के ग्रामीण और नगरीय दोनों क्षेत्रों में सेवा गतिविधियों को लेकर कार्ययोजना तैयार करने की बात कही गई।

सेवा गतिविधियों के साथ डिजिटल माध्यमों पर भी जोर-इस बार भाजपा ने अभियान में युवाओं और डिजिटल माध्यमों को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया है,राष्ट्रीय स्तर पर 'सेवा मेरा योगदान' जैसी पहल के जरिए लोगों को सेवा गतिविधियों में भाग लेने और डिजिटल माध्यम से अपनी सहभागिता दर्ज कराने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है, कोरिया जिले में भी संगठन स्तर पर सोशल मीडिया और डिजिटल माध्यमों का उपयोग कर अभियान के कार्यक्रमों को व्यापक स्तर पर लोगों तक पहुंचाने की तैयारी की जा रही है, इससे अभियान के कार्यक्रमों को केवल स्थानीय आयोजन तक सीमित रखने के बजाय व्यापक जनसंपर्क से जोड़ने की कोशिश होगी।

जनभागीदारी बढ़ाने पर विशेष जोर-कार्यशाला में पदाधिकारियों से कहा गया कि सेवा संकल्प अभियान के कार्यक्रमों में अधिक से अधिक लोगों को जोड़ा जाए, भाजपा नेताओं ने कहा कि सेवा कार्यों का उद्देश्य तभी सार्थक होगा,जब आम नागरिक भी उसमें सहभागी बने, जिला संगठन ने मंडल और बूथ स्तर के पदाधिकारियों से अपने क्षेत्रों की जरूरतों के अनुसार सेवा गतिविधियों की पहचान करने तथा स्थानीय स्तर पर लोगों के साथ संवाद स्थापित करने को कहा,इस दौरान अभियान के लिए दायित्व निर्धारण,कार्यक्रमों की रूपरेखा, संगठनात्मक समन्वय और जनसंपर्क की रणनीति पर भी चर्चा हुई।

बड़ी संख्या में पदाधिकारी और कार्यकर्ता रहे मौजूद-कार्यशाला में जिले के विभिन्न क्षेत्रों से भाजपा पदाधिकारी, मंडल अध्यक्ष एवं पदाधिकारी,मोर्चा-प्रकोष्ठों के पदाधिकारी,नगरीय निकाय के जनप्रतिनिधि और कार्यकर्ता पहुंचे,मंडलों से अनिल खटिक,रमन गुप्ता, हरिओम साहू,दीपा विश्वकर्मा,मुन्नाराम चक्रधारी,सचिन मलिक,रणविजय सिंह,मैनेजर राजवाड़े,रामाशंकर सिंह, बसंत पाल,संजय चिकनजुरी,सुशीला साहू, राकेश पैकरा, रामलखन यादव, सच्चिदानंद द्विवेदी, सत्यम साहू, किशोर सिरदार, दिनेश कुमार साहू,सुरेश कुमार सिरदार,राजाराम राजवाड़े,बालकृष्ण देवांगन और सुरेश राजवाड़े सहित अनेक पदाधिकारी मौजूद रहे,इसके अलावा संगठन के विभिन्न प्रकोष्ठों और मोर्चों से जुड़े पदाधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं ने भी कार्यशाला में भाग लिया।

संगठन ने शुरू की जमीनी तैयारी

कार्यशाला के माध्यम से भाजपा कोरिया ने सेवा संकल्प अभियान को लेकर अपनी जिला स्तरीय तैयारियों की औपचारिक शुरुआत कर दी है,अब अभियान को मंडल और बूथ स्तर तक ले जाने की जिम्मेदारी स्थानीय संगठन पर होगी,जिला संगठन की ओर से कार्यकर्ताओं से कहा गया कि अभियान के प्रत्येक कार्यक्रम को प्रभावी बनाने के लिए पहले से तैयारी की जाए और इसमें आम लोगों की सहभागिता बढ़ाई जाए,कार्यशाला का संचालन जिला महामंत्री कपिल जायसवाल ने किया,अभियान के जिला संयोजक एवं जिला महामंत्री पंकज गुप्ता ने आभार व्यक्त किया,17 सितंबर से शुरू होने वाले महीनेभर के इस अभियान में कोरिया जिले में सेवा,जनसंपर्क और जनभागीदारी को किस तरह जमीन पर उतारा जाता है,अब संगठन की तैयारियों की वास्तविक परीक्षा इसी पर होगी।

लोकार्पण से पहले ही करोड़ों के अस्पताल की दीवारों में दरारें !

पुट्टी से ढकने की कोशिश या गुणवत्ता पर पर्दा? खड़गवां के नवनिर्मित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के निर्माण पर गंभीर सवाल

-राजेन्द्र शर्मा-

खड़गवां,04 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)। विकासखंड खड़गवां में करोड़ों रुपए की लागत से तैयार किया जा रहा नया सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भवन लोकार्पण से पहले ही विवादों के घेरे में आ गया है, निर्माणाधीन भवन की दीवारों में जगह-जगह दिखाई दे रही दरारों ने निर्माण की गुणवत्ता को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं, जिस भवन को क्षेत्र की स्वास्थ्य सुविधाओं को मजबूत करने की बड़ी सौगात के रूप में देखा जा रहा था,उसके पूर्ण होने से पहले ही दीवारों पर दरारें नजर आने से स्थानीय लोगों की चिंता बढ़ गई है।

बताया जा रहा है कि भवन अभी पूरी तरह तैयार नहीं हुआ है और इसके लोकार्पण की प्रक्रिया भी बाकी है। इसके बावजूद कई हिस्सों में दीवारों पर दरारें दिखाई देने लगी हैं, इन दरारों को रिपेयरिंग और पुट्टी के माध्यम से ढकने का प्रयास किए जाने की बात सामने आ रही है, यही स्थिति अब सबसे बड़ा सवाल खड़ा कर रही है कि यदि निर्माण की गुणवत्ता बेहतर है तो भवन तैयार होने से पहले ही मरम्मत की जरूरत क्यों पड़ रही है?

दरारें दिखीं तो पुट्टी से शुरू हुआ 'इलाज'- स्वास्थ्य केंद्र जैसे महत्वपूर्ण सार्वजनिक भवन में दीवारों की मजबूती और निर्माण गुणवत्ता सबसे अहम मानी जाती है, ऐसे भवन का इस्तेमाल प्रतिदिन बड़ी संख्या में मरीजों और उनके परिजनों द्वारा किया जाना है,ऐसे में निर्माण पूरा होने से पहले ही दीवारों में दरारें दिखाई देना सामान्य बात मानकर नजरअंदाज नहीं किया जा सकता, स्थानीय स्तर पर चर्चा यह भी है कि दरारें सामने आने के बाद उन्हें तकनीकी रूप से ठीक करने के बजाय पुट्टी अथवा सतही रिपेयरिंग के जरिए छिपाने का प्रयास किया जा रहा है, यदि ऐसा किया जा रहा है तो यह केवल भवन की बाहरी सुंदरता का सवाल नहीं, बल्कि निर्माण की वास्तविक गुणवत्ता की जांच का विषय है,आखिर दरारें किस कारण से आईं और उनकी गहराई कितनी है, इसका तकनीकी परीक्षण हुआ या नहीं–इन सवालों का जवाब सामने आना जरूरी है।

करोड़ों का निर्माण,लेकिन निगरानी पर सवाल- नवनिर्मित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण परियोजना है,ऐसे में निर्माण कार्य की निगरानी किस विभागीय अधिकारी अथवा तकनीकी टीम की जिम्मेदारी थी, यह भी सार्वजनिक होना चाहिए,निर्माण के दौरान इस्तेमाल की गई सामग्री, निर्माण प्रक्रिया और निर्धारित तकनीकी मानकों का पालन हुआ या नहीं, इसकी जांच भी आवश्यक है,यदि भवन में निर्माण के शुरुआती दौर में ही दरारें उत्पन्न हो रही हैं तो इसकी वजह केवल पुट्टी लगाकर छिपाने से समाप्त नहीं होगी,जरूरत इस बात की है कि दरारों के वास्तविक कारण का तकनीकी परीक्षण कराया जाए और यह पता लगाया जाए कि कहीं निर्माण सामग्री, नींव, प्लास्टर,सीमेंट-कंक्रीट अथवा अन्य तकनीकी पहलुओं में कोई कमी तो नहीं रही।

पुराना भवन जर्जर,नए भवन पर भी उठे सवाल- खड़गवां का सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहले से ही जर्जर भवन की समस्या से जूझता रहा है, पुराने भवन की स्थिति को देखते हुए नए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र से क्षेत्र के लोगों को काफी उम्मीदें हैं, लोगों को उम्मीद थी कि नया भवन बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं के साथ सुरक्षित और मजबूत आधार भी उपलब्ध कराएगा, लेकिन नए भवन के लोकार्पण से पहले ही दरारें दिखाई देने की खबर ने इन उम्मीदों पर सवाल खड़े कर दिए हैं, स्थानीय लोगों का कहना है कि पुराने भवन की परेशानियों से छुटकारा पाने के लिए नया भवन बनाया जा रहा है, लेकिन यदि नया निर्माण भी शुरुआती दौर में ही मरम्मत मांगने लगे तो आने वाले समय में इसकी स्थिति को लेकर सवाल उठना स्वाभाविक है।

लोकार्पण से पहले तकनीकी जांच की मांग- करोड़ों रुपए की लागत से बन रहे स्वास्थ्य केंद्र का मामला केवल एक भवन की दीवारों तक सीमित नहीं है, यह सीधे तौर पर सरकारी धन, निर्माण गुणवत्ता और आम जनता की सुरक्षा से जुड़ा विषय है, इसलिए स्थानीय लोगों की मांग है कि लोकार्पण से पहले भवन की तकनीकी जांच कराई जाए, सवाल सीधा है–करोड़ों रुपए खर्च कर तैयार हो रहे अस्पताल की दीवारें लोकार्पण से पहले ही दरारों का संकेत क्यों दे रही हैं? यदि दरारें सामान्य हैं तो विभाग तकनीकी रिपोर्ट के जरिए स्थिति स्पष्ट करे और यदि निर्माण में कमी है तो जिम्मेदारी तय की जाए, अब देखना यह है कि स्वास्थ्य मंत्री के क्षेत्र में बन रहे इस महत्वपूर्ण स्वास्थ्य भवन की शिकायतों और सामने आ रही दरारों को विभाग गंभीरता से लेकर जांच कराता है या फिर पुट्टी की एक और परत के साथ निर्माण की गुणवत्ता पर उठ रहे सवालों को भी ढक दिया जाता है।

ठेकेदार के प्रभाव की चर्चा,विभाग की भूमिका पर निगाह

निर्माण कार्य से जुड़े ठेकेदार के प्रभाव और दबंगई को लेकर भी स्थानीय स्तर पर चर्चाएं होने की बात सामने आ रही है, हालांकि इन दावों की स्वतंत्र पुष्टि आवश्यक है,ऐसे में संबंधित विभाग की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है कि वह किसी भी दबाव से अलग हटकर निर्माण की गुणवत्ता का निष्पक्ष तकनीकी परीक्षण कराए,सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भवन का लोकार्पण करने से पहले इसकी गुणवत्ता की स्वतंत्र जांच हो,यदि जांच में निर्माण संबंधी कमी सामने आती है तो केवल पुट्टी लगाकर उसे छिपाने के बजाय दोष दूर कराया जाए और जिम्मेदार व्यक्ति अथवा संस्था की जवाबदेही तय की जाए।

आग्रह पर डॉक्टर ने दिखाई संवेदनशीलता

अस्पताल के सामने बदहाल सड़क पर रातोंरात शुरू कराया सुधार कार्य
बारिश में बार-बार बह जाता था...डाला गया मटेरियल,जनहित की परेशानी सामने आई तो गायत्री हॉस्पिटल संचालक ने तत्काल कराया सुधार..

-संवाददाता-

अंबिकापुर,04 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)। शहर की सड़कों की बदहाली के बीच कई बार छोटी-सी पहल भी आम लोगों के लिए बड़ी राहत बन जाती है। बनारस रोड स्थित गायत्री हॉस्पिटल के सामने लंबे समय से खराब सड़क और जगह-जगह फैली गिट्टी-डस्ट के कारण लोगों को आवाजाही में परेशानी हो रही थी। बारिश के बाद स्थिति और खराब हो जाती थी। इसी परेशानी को लेकर अस्पताल संचालक डॉ. रितेश गुप्ता से जनहित में सड़क को गिट्टी-डस्ट डालकर दुरुस्त कराने का आग्रह किया गया। देर रात किए गए इस आग्रह पर उन्होंने सकारात्मक पहल करते हुए अगले ही दिन सड़क की मरम्मत का काम शुरू करा दिया।

बनारस रोड पर पीजी कॉलेज मैदान के सामने स्थित गायत्री हॉस्पिटल के सामने की सड़क का हिस्सा बारिश और लगातार आवागमन के कारण खराब हो गया था। गायत्री अस्पताल में आने वाले मरीजों, उनके परिजनों और राहगीरों को भी इस हिस्से से गुजरने में परेशानी का सामना करना पड़ रहा था। अस्पताल के सामने की सड़क होने के कारण मरीजों की आवाजाही के लिहाज से भी यह स्थान महत्वपूर्ण है।

पहले भी कई बार डाली गई थी गिट्टी-डस्ट

सड़क को लेकर बातचीत के दौरान डॉ. रितेश गुप्ता ने बताया कि इस हिस्से में पहले भी तीन से चार बार फिलिंग कराई जा चुकी है, लेकिन प्रत्येक बार बारिश होने पर डाला गया मटेरियल बहकर सड़क के किनारे चला जाता है। इसके कारण कुछ समय बाद सड़क की स्थिति फिर खराब हो जाती है। इसके बावजूद आम लोगों की परेशानी को देखते हुए उन्होंने तत्काल सड़क की फिलिंग और मरम्मत कराने की पहल की। इससे अस्पताल आने-जाने वाले मरीजों और स्थानीय लोगों को फिलहाल राहत मिली है।

सरकारी व्यवस्था का इंतजार किए बिना की पहल

सड़क की मरम्मत को लेकर आमतौर पर संबंधित विभाग की ओर उम्मीद की जाती है,लेकिन कई बार छोटी समस्याओं के समाधान में समय लग जाता है। ऐसे में स्थानीय स्तर पर सक्षम लोगों और संस्थानों द्वारा जनहित में स्वैच्छिक पहल की जाए तो लोगों को तत्काल राहत मिल सकती है। डॉ. रितेश गुप्ता द्वारा अस्पताल के सामने सड़क की मरम्मत कराया जाना इसी तरह की पहल के रूप में देखा जा रहा है। सड़क पर गिट्टी-डस्ट डालकर उसे आवागमन के योग्य बनाने का काम कराया गया है।

सामाजिक जिम्मेदारी का संदेश

जनहित से जुड़े ऐसे छोटे प्रयास शहर की बड़ी समस्याओं के बीच सकारात्मक संदेश देते हैं। जरूरत के समय केवल समस्या बताने के बजाय अपने स्तर पर समाधान की पहल करना सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को मजबूत करता है। खासकर अस्पताल,स्कूल,बाजार और सार्वजनिक स्थलों के आसपास ऐसी छोटी-छोटी व्यवस्थाओं का सीधा लाभ आम नागरिकों को मिलता है।

CMYK

महादेव के नाम पर भाजपा में महाभारत!

'सोनेश्वर महादेव' या 'कल्याणेश्वर'? कौन सा नाम, किसका दावा

सोनहत में मंदिर निर्माण को लेकर भाजपा के दो गुट आमने-सामने, महादेव चौक पर नारेबाजी से तनाव

शिला पूजन और पूजा को लेकर आरोप-प्रत्यारोप | पुलिस ने संभाला मोर्चा | मंदिर बनेगा या राजनीतिक श्रेय का मंच?

- 'सोनेश्वर महादेव' या 'कल्याणेश्वर'? मंदिर से पहले नाम की जंग
- शिवलिंग एक,नाम दो सोनहत में महादेव पर सियासी घमासान!
- 'सोनेश्वर महादेव' बनाम 'कल्याणेश्वर' मंदिर बनने से पहले ही नाम,जमीन और श्रेय की सियासत आमने-सामने...
- मंदिर बनने से पहले ही भिड़े दो गुट, महादेव चौक पर शक्ति प्रदर्शन
- महादेव की आड़ में श्रेय की सियासत? सोनहत में भाजपा के दो गुट आमने-सामने
- आस्था का मंदिर या श्रेय की सियासत? सोनहत में नाम को लेकर घमासान
- शिवलिंग एक,नाम दो सोनहत में मंदिर को लेकर भाजपा में तकरार
- 'सोनेश्वर' बनाम 'कल्याणेश्वर' महादेव के नाम पर आमने-सामने भाजपा के दावेदार
- फीता और शिलापूजन से पहले ही नामकरण की जंग,सोनहत में बढ़ा सियासी तनाव
- 104 गांवों के जनसहयोग का दावा, विधायक की भूमिका पर दूसरा पक्ष-मंदिर पर आमने-सामने
- महादेव चौक बना सियासी अखाड़ा, मंदिर के नाम और श्रेय पर दो गुट भिड़े

समिति कौन बनाएगा? चंदा कौन लेगा? खर्च का हिसाब कौन देगा? और सबसे बड़ा सवाल

क्या मंदिर जनता की आस्था से बनेगा या राजनीतिक श्रेय की होड़ से? महादेव के नाम पर दो गुट आमने-सामने आना अपने आप में विडंबना है। जिस स्थान पर घंटियां बजनी थीं,वहां नारेबाजी हुई,जहां शंख और मंत्र गूंजने थे, वहां राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप सुनाई दिए। जहां श्रद्धालुओं को एक साथ खड़ा होना था,वहां समर्थक दो तरफ खड़े दिखाई दिए,मंदिर बने–इसमें किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। सवाल सिर्फ इतना है कि मंदिर की पहली ईंट रखने से पहले कहीं राजनीतिक दीवार तो खड़ी नहीं हो रही? सोनहत की जनता अब शायद यही चाहती है कि महादेव के नाम पर विवाद समाप्त हो, सभी पक्ष बैठें और सर्वसम्मति से मंदिर का नाम, निर्माण समिति,भूमि और वित्तीय व्यवस्था तय करें,क्योंकि अंततः महादेव किसी गुट के नहीं होते,और अगर मंदिर सचमुच जनता की आस्था का है, तो उसका रास्ता भी जनसहमति से ही निकलना चाहिए–नारेबाजी,शक्ति प्रदर्शन और श्रेय की लड़ाई से नहीं।

–राजन पाण्डेय–

सोनहत/कोरिया,04 सितंबर 2026 (घटती-घटना)।

जिस भगवान के सामने जाकर लोग अपने सारे विवाद भूलने की उम्मीद रखते हैं, उसी महादेव के नाम पर सोनहत में ऐसा विवाद खड़ा हो गया कि भगवान का मंदिर बनने से पहले ही राजनीति का अखाड़ा तैयार हो गया,मामला शिव मंदिर का है,आस्था का है,जनसहयोग का है,जमीन का है और सबसे बढ़कर मंदिर के नाम का है,लेकिन घटनाक्रम को देखकर लगता है कि फिलहाल सबसे बड़ा सवाल यह नहीं कि मंदिर में शिवलिंग किस दिशा में स्थापित होगा,बल्कि यह है कि शिलापट्ट पर नाम किसका चलेगा।

सोनहत के महादेव चौक पर शुक्रवार को इसी विवाद ने खुलकर राजनीतिक रूप ले लिया, प्रस्तावित शिव मंदिर के निर्माण और नामकरण को लेकर भाजपा से जुड़े दो पक्ष आमने-सामने आ गए, दोनों ओर से नारेबाजी हुई, विवाद बढ़ा और हल्की धक्का-मुक्की की स्थिति बनने के बाद पुलिस को हस्तक्षेप करना पड़ा,पुलिस के अनुसार मामला किसी दूसरे धर्म से जुड़े विवाद का नहीं,बल्कि भाजपा से जुड़े स्थानीय लोगों के बीच आपसी मतभेद और वर्चस्व का है, यानी बाहर से देखने पर मामला मंदिर का है,लेकिन भीतर से कहानी नाम,जमीन,पहल और श्रेय की दिखाई दे रही है।

महादेव एक,नाम दो...'सोनेश्वर' या 'कल्याणेश्वर'?- विवाद का सबसे बड़ा केंद्र मंदिर का नाम है, एक पक्ष प्रस्तावित मंदिर को 'श्री सोनेश्वर महादेव' के नाम से स्थापित करने की बात कर रहा है,इस पक्ष का कहना है कि मंदिर निर्माण में सोनहत क्षेत्र के 104 गांवों के लोगों की भागीदारी होगी और मंदिर किसी व्यक्ति अथवा राजनीतिक गुट की संपत्ति नहीं होगा, दूसरी ओर 'कल्याणेश्वर' नाम सामने आया है, इस पक्ष का कहना है कि मंदिर के लिए भूमि विधायक के माध्यम से उपलब्ध कराई गई है और समिति के समन्वय से मंदिर के नामकरण एवं स्थापना की प्रक्रिया आगे बढ़ रही है,यहीं से सवाल पैदा हुआ–मंदिर महादेव का है, लेकिन नाम पर इतनी खींचतान क्यों? एक तरफ जनसहयोग का दावा है,दूसरी तरफ जमीन उपलब्ध कराने में विधायक की भूमिका का दावा, एक पक्ष कहता है कि जनता मंदिर बनाएगी,दूसरा कहता है कि जमीन और स्थापना की प्रक्रिया में विधायक की भूमिका महत्वपूर्ण है, अर्थात मंदिर की नींव अभी पूरी तरह पड़ी भी नहीं और श्रेय की नींव काफी गहरी दिखाई देने लगी है।

जन्माष्टमी पर पूजा से शुरू हुआ विवाद- शुक्रवार को जन्माष्टमी के अवसर पर प्रस्तावित मंदिर स्थल पर पूजा-पाठ को लेकर दोनों पक्ष आमने-सामने आ गए, सनातन गौरव मंच से जुड़े कार्यकर्ताओं का कहना है कि वे जन्माष्टमी के अवसर पर पूजा करने पहुंचे थे, लेकिन उन्हें पूजा करने से रोकने का प्रयास किया गया, दूसरी तरफ आरोप लगाया गया कि कुछ लोग मंदिर निर्माण की घोषणा और शिला पूजन की तैयारी के साथ पहुंचे थे और इसी वजह से विरोध हुआ, कुछ ही देर में मामला पूजा से निकलकर नारेबाजी तक पहुंच गया,समर्थक आमने-सामने हुए और स्थिति तनावपूर्ण होती चली गई,ऐसे में पुलिस को मौके पर पहुंचना पड़ा, पुलिस ने दोनों पक्षों को समझाइश दी और स्थिति को नियंत्रित किया। दोनों पक्षों को आपस में बैठकर विवाद का समाधान करने की सलाह दी गई, यहां एक सवाल जरूर खड़ा होता है...अगर महादेव के मंदिर की शुरुआत ही दो पक्षों के बीच नारेबाजी से हो रही है, तो आगे मंदिर की व्यवस्था किस तरह चलेगी?

मनोज साहू बोले...104 गांवों की जनता बनाएगी मंदिर-भाजपा नेता मनोज साहू ने मंदिर निर्माण को जनसहयोग से जोड़ते हुए कहा कि 104 गांवों के लोग इस संबंध में एकत्र हुए हैं, उनका कहना है कि लंबे समय तक इंतजार के बाद अब जनता ने स्वयं मंदिर निर्माण की जिम्मेदारी उठाने का निर्णय लिया है,मनोज साहू के अनुसार जन्माष्टमी के अवसर पर महज एक घंटे में एक लाख रुपये के सहयोग का दावा किया गया,उनका कहना है कि इससे जनता की आस्था और मंदिर निर्माण को लेकर लोगों की इच्छा स्पष्ट होती है,उनका कहना है कि मंदिर किसी व्यक्ति अथवा राजनीतिक गुट की इच्छा से नहीं,बल्कि सोनहत की जनता की श्रद्धा और सहयोग से बनना चाहिए,उन्होंने 'श्री सोनेश्वर महादेव' मंदिर के नाम पर किसी व्यक्ति या राजनीतिक गुट की दावेदारी स्वीकार नहीं करने की बात कही, यहीं से विवाद और स्पष्ट हो जाता है,क्योंकि यदि एक पक्ष कह रहा है कि मंदिर जनता का होगा और दूसरा पक्ष निर्माण की प्रक्रिया में विधायक की भूमिका बता रहा है, तो फिर तय कौन करेगा कि मंदिर का स्वरूप क्या होगा और अंतिम नाम क्या होगा?

संदीप जायसवाल का आरोप—नामकरण की प्रक्रिया में हस्तक्षेप-जनपद उपाध्यक्ष संदीप जायसवाल ने मनोज साहू और उनके साथियों पर मंदिर के नामकरण के नाम पर पहुंचकर शिला पूजन करने का प्रयास करने का आरोप लगाया, उनका कहना है कि इस संबंध में पुलिस को सूचना दी गई थी,उन्होंने यह भी कहा कि मंदिर का नामकरण विधायक द्वारा समिति के साथ समन्वय बनाकर कराया जा रहा है, यानी उनके पक्ष में मंदिर का नाम और स्थापना कोई अचानक लिया गया फैसला नहीं,बल्कि समिति के स्तर पर चल रही प्रक्रिया का हिस्सा है,अब सवाल यह है कि यदि समिति के माध्यम से नामकरण की प्रक्रिया चल रही थी तो क्या सभी स्थानीय पक्षों को इसकी जानकारी थी? यदि सहमति थी तो विवाद क्यों हुआ? और यदि सहमति नहीं थी तो मंदिर निर्माण की प्रक्रिया आगे कैसे बढ़ाई जाएगी?

अब फैसला किसका...जनता का...समिति का या राजनीतिक नेतृत्व का?

पूरे मामले में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यही है कि मंदिर का अंतिम निर्णय कौन करेगा? क्या 104 गांवों के प्रतिनिधियों की बैठक होगी? क्या ग्राम स्तर पर सहमति ली जाएगी? क्या मंदिर निर्माण समिति का विधिवत गठन होगा? क्या समिति में दोनों पक्षों को प्रतिनिधित्व मिलेगा? क्या मंदिर के नाम पर सर्वसम्मति बनाई जाएगी? क्या भूमि की स्थिति सार्वजनिक की जाएगी? क्या निर्माण के लिए धनराशि का पारदर्शी हिसाब रखा जाएगा? यदि मंदिर जनसहयोग से बनेगा तो चंदे का हिसाब भी सार्वजनिक होना चाहिए। यदि भूमि किसी जनप्रतिनिधि के प्रयास से मिली है तो उसकी प्रक्रिया भी स्पष्ट होनी चाहिए, यदि समिति निर्माण की जिम्मेदारी संभालती है तो उसकी संरचना और अधिकार भी सामने आने चाहिए, क्योंकि मंदिर बनने के बाद विवाद समाप्त नहीं होता–तब दानपेटी, समिति, प्रबंधन और चढ़ावे की व्यवस्था जैसे सवाल भी सामने आते हैं,इसलिए शुरुआत ही पारदर्शी होना जरूरी है।

राजेश गुप्ता बोले...जमीन विधायक के माध्यम से मिली-सोनहत के उपसरपंच राजेश गुप्ता ने मंदिर के लिए जमीन विधायक के माध्यम से उपलब्ध होने की बात कही। उनका कहना है कि मंदिर की स्थापना की प्रक्रिया भी विधायक के माध्यम से हुई है और मंदिर स्थानीय लोगों की सहमति से बनना चाहिए,उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ लोग महादेव के नाम पर राजनीति और प्रदर्शन कर रहे हैं, उनके बयान के बाद विवाद का एक और पहलू सामने आता है–भूमि किसके प्रयास से मिली? क्योंकि मंदिर निर्माण में जमीन सबसे पहली आवश्यकता है,यदि भूमि विधायक के माध्यम से उपलब्ध हुई है तो उस प्रक्रिया का दस्तावेज क्या है? भूमि किसके नाम है? क्या भूमि मंदिर के लिए विधिवत हस्तांतरित हुई है? क्या समिति का गठन हुआ है? और मंदिर निर्माण के लिए अनुमति एवं अन्य औपचारिकताएं पूरी हुई हैं? इन सवालों के जवाब सामने आने पर जमीन और निर्माण की वास्तविक प्रक्रिया स्पष्ट हो सकती है।

आशा देवी सोनपाकर...महादेव किसी की राजनीतिक जागीर नहीं-जनपद अध्यक्ष आशा देवी सोनपाकर ने विवाद के बीच कहा कि महादेव का मंदिर किसी की राजनीतिक जागीर नहीं हो सकता,उनका कहना है कि जिस आस्था के लिए सोनहत की जनता धन, सामग्री और श्रम देने को तैयार है,उस आस्था को किसी व्यक्ति विशेष के प्रभाव तक सीमित नहीं किया जाना चाहिए,यह बयान विवाद के मूल बिंदु को सीधे छूता है,मंदिर यदि सार्वजनिक आस्था का केंद्र बनना है तो उसमें अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी होनी चाहिए। लेकिन यदि निर्माण के शुरुआती दौर में ही दो गुट यह तय करने लगें कि मंदिर हमारा और नाम हमारा, तो फिर सामूहिक आस्था का उद्देश्य राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में बदलने का खतरा पैदा हो जाता है।

शिव कुमारी सोनपाकर...आस्था को राजनीति से दूर रखने की अपील-जिला पंचायत सदस्य शिव कुमारी सोनपाकर ने कहा कि जन्माष्टमी के अवसर पर उमड़ी भीड़ और एक घंटे में एक लाख रुपये के सहयोग का दावा इस बात का संकेत है कि जनता मंदिर निर्माण को लेकर गंभीर है, उन्होंने मंदिर को आस्था का विषय बताते हुए इसे राजनीतिक विवाद में नहीं बदलने की अपील की, उनका कहना है कि मंदिर निर्माण में सहयोग करने वालों के रास्ते में राजनीति या व्यक्तिगत दावेदारी नहीं आनी चाहिए, सवाल यही है कि क्या दोनों पक्ष इस अपील को स्वीकार करेंगे? क्योंकि फिलहाल विवाद का केंद्र यही है कि आस्था की अगुवाई कौन करेगा।

सुरेश राजवाड़े बोले...जनता की भागीदारी जरूरी- युवा मोर्चा से जुड़े सुरेश राजवाड़े ने भी मंदिर निर्माण में जनता की भागीदारी को महत्वपूर्ण बताया, उनका कहना है कि महादेव का मंदिर किसी राजनीतिक प्रभाव से नहीं, बल्कि लोगों की श्रद्धा और सहयोग से बनना चाहिए, उनका यह बयान भी मूल विवाद को एक ही दिशा में ले जाता है–मंदिर का निर्माण सामूहिक हो या राजनीतिक नेतृत्व के इर्द-गिर्द? यही सवाल अब सोनहत में चर्चा का विषय बन गया है।

संदीप साहू ने कहा...विधायक के साथ है सोनहत की जनता-भाजपा नेता संदीप साहू ने कहा कि विधायक सोनहत के लोगों के साथ हैं, उन्होंने कहा कि स्थानीय लोगों ने विधायक के साथ शिवलिंग की स्थापना की है और कुछ लोग यहां राजनीति चमकाने का प्रयास कर रहे हैं, इस बयान से विवाद का राजनीतिक कोण और स्पष्ट हो जाता है, एक तरफ विधायक के समर्थन में स्थानीय लोगों की भागीदारी का दावा है, दूसरी तरफ 104 गांवों के जनसहयोग से मंदिर बनाने की बात कही जा रही है, दोनों पक्ष अपने-अपने समर्थन को जनता से जोड़ रहे हैं, लेकिन जनता के नाम पर दावा करने के बजाय यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि वास्तविक सहमति किसके साथ है और क्या सभी संबंधित पक्षों को साथ लेकर कोई औपचारिक निर्णय लिया गया है।

पुलिस ने साफ किया—धार्मिक विवाद नहीं, भाजपा के दो पक्षों का मामला- सोनहत थाना प्रभारी अनिल किंडो ने बताया कि मंदिर में पूजा-पाठ के दौरान मंदिर निर्माण की घोषणा को लेकर दो पक्षों के बीच हल्के विवाद की जानकारी मिली थी, उनके अनुसार दोनों पक्ष भारतीय जनता पार्टी से जुड़े हुए हैं, मामला किसी अन्य धर्म से संबंधित नहीं है, बल्कि आपसी मतभेद और वर्चस्व से जुड़ा हुआ है, पुलिस ने मौके पर पहुंचकर दोनों पक्षों को समझाइश दी और स्थिति नियंत्रित की। दोनों पक्षों को आपस में बैठकर समस्या का समाधान करने की सलाह दी गई, पुलिस का यह बयान महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे साफ होता है कि विवाद को किसी धार्मिक टकराव के रूप में देखने के बजाय इसे स्थानीय राजनीतिक और संगठनात्मक मतभेद के रूप में देखा जा रहा है।

महादेव के मंदिर में पहले ही 'श्रेय युद्ध' क्यों?-मंदिर निर्माण में सबसे बड़ी शक्ति श्रद्धा होती है, उसके बाद जनसहयोग,श्रम और सामूहिक इच्छा,लेकिन सोनहत का मौजूदा घटनाक्रम एक अलग तस्वीर दिखा रहा है,एक पक्ष–जनसहयोग,दूसरा पक्ष–भूमि उपलब्ध कराने में विधायक की भूमिका,एक पक्ष–सोनेश्वर महादेव, दूसरा पक्ष–कल्याणेश्वर,एक पक्ष–104 गांव, दूसरा पक्ष–विधायक और समिति,और बीच में पुलिस, यानी महादेव की स्थापना से पहले ही नामकरण और श्रेयकरण का यज्ञ शुरू हो चुका है,यह स्थिति यदि समय रहते नहीं संभाली गई तो विवाद मंदिर निर्माण की प्रक्रिया को लंबा कर सकता है।

'सोनेश्वर' और 'कल्याणेश्वर' के बीच फंसा सोनहत

सोनहत में फिलहाल असली टकराव पत्थर और ईंट का नहीं, बल्कि नाम और श्रेय का है, एक नाम को जनता की भावना से जोड़ा जा रहा है तो दूसरे नाम को समिति और विधायक की पहल से, एक पक्ष कहता है कि मंदिर किसी व्यक्ति की राजनीतिक जागीर नहीं हो सकता, दूसरा पक्ष कहता है कि कुछ लोग राजनीतिक लाभ के लिए विवाद खड़ा कर रहे हैं, दोनों पक्षों के आरोप-प्रत्यारोप के बीच एक बात समान है–दोनों मंदिर निर्माण चाहते हैं, यही वह बिंदु है जहां विवाद का समाधान भी छिपा है, यदि उद्देश्य वास्तव में मंदिर निर्माण है तो नाम पर सर्वसम्मति बनाई जा सकती है, निर्माण समिति में सभी पक्षों को शामिल किया जा सकता है, भूमि, धन और निर्माण की पूरी प्रक्रिया सार्वजनिक की जा सकती है, लेकिन यदि उद्देश्य मंदिर से ज्यादा किसने बनाया साबित करना है, तो विवाद आगे भी जारी रहने की आशंका रहेगी।

अब महादेव को राजनीति से बचाने की जिम्मेदारी किसकी?

सोनहत में मंदिर निर्माण को लेकर पैदा हुआ विवाद फिलहाल पुलिस की समझाइश के बाद शांत है, लेकिन विवाद पूरी तरह समाप्त हुआ है, ऐसा कहना जल्दबाजी होगी, क्योंकि मूल सवाल अभी भी वहीं हैं मंदिर का नाम क्या होगा? भूमि किस प्रक्रिया से मिली? निर्माण कौन करेगा?

महिला पत्रकारों से कथित मारपीट पर कांग्रेस का विरोध,अफरोज खान ने बताया लोकतंत्र पर हमला

–संवाददाता–

भटगांव/सूरजपुर,04 सितंबर 2026 (घटती-घटना)।

दिल्ली के साकेत इलाके में दो महिला पत्रकारों के साथ कथित मारपीट और हिरासत में लिए जाने का मामला राजनीतिक और पत्रकार संगठनों के बीच चर्चा का विषय बन गया है, PM News Network से जुड़ी पत्रकार शाहीन खान और नफीसा खान ने आरोप लगाया है कि एक कार्यक्रम की रिपोर्टिंग के दौरान उन्हें दिल्ली पुलिस ने हिरासत में लेकर साकेत थाने पहुंचाया, जहां उनके साथ मारपीट की गई,पत्रकारों ने यह भी आरोप लगाया कि उनकी धार्मिक पहचान सामने आने के बाद कथित दुर्व्यवहार और बढ़ गया। हालांकि,दिल्ली पुलिस ने इन आरोपों को तथ्यात्मक रूप से गलत और भ्रामक बताते हुए खारिज किया है।

इस घटना को लेकर छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी (अल्पसंख्यक विभाग) के प्रदेश महासचिव अफरोज खान ने कड़ा विरोध जताया है, उन्होंने कहा कि यदि पत्रकारों के साथ उनके आरोप के मुताबिक व्यवहार हुआ है तो यह केवल दो पत्रकारों का मामला नहीं,बल्कि पत्रकारिता की स्वतंत्रता, नागरिक अधिकारों और कानून के शासन से जुड़ा गंभीर सवाल है।

पत्रकारों का काम सवाल पूछना है- अफरोज खान ने कहा कि पत्रकार किसी कार्यक्रम में खबर जुटाने और सवाल पूछने के लिए जाते हैं, सत्ता में बैठे लोगों से सवाल करना पत्रकारिता का मूल दायित्व है, उन्होंने कहा कि किसी पत्रकार को सवाल पूछने के कारण प्रताड़ित किया जाना लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए गंभीर चिंता का विषय है, उन्होंने आरोप लगाया कि दोनों महिला पत्रकारों को पहले कार्यक्रम स्थल से हिरासत में लेकर साकेत थाने ले जाया गया और वहां उनके साथ कथित तौर पर मारपीट की गई, उन्होंने कहा कि पुलिस का दायित्व नागरिकों की सुरक्षा और कानून-व्यवस्था बनाए रखना है,न कि पत्रकारों के साथ हिंसक व्यवहार करना।

शाहीन खान और नफीसा खान ने साकेत थाने में हिरासत और मारपीट के लगाए आरोप...

दिल्ली पुलिस ने आरोपों को बताया तथ्यात्मक रूप से गलत...

धर्म पूछकर मारपीट का आरोप-मामले का सबसे गंभीर पहलू पत्रकार शाहीन खान द्वारा लगाया गया वह आरोप है जिसमें उन्होंने दावा किया कि पुलिसकर्मियों ने उनकी धार्मिक पहचान के बारे में पूछा और मुस्लिम होने की जानकारी मिलने के बाद कथित मारपीट बढ़ा दी, सोशल मीडिया पर सामने आए वीडियो में दोनों पत्रकार अपने शरीर पर चोट के निशान दिखाती नजर आईं,इन आरोपों की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं हुई है, अफरोज खान ने कहा कि यदि जांच में धर्म के आधार पर दुर्व्यवहार या हिंसा के आरोप सही पाए जाते हैं तो यह बेहद गंभीर मामला होगा,उन्होंने सवाल उठाया कि यदि किसी नागरिक को उसकी जाति,धर्म या पहचान के आधार पर कानून के रखवालों से ही भेदभाव का सामना करना पड़े तो वह न्याय की उम्मीद किससे करेगा?

अफरोज खान ने की कार्रवाई की मांग- अफरोज खान ने मांग की कि पूरे मामले की निष्पक्ष और स्वतंत्र जांच कराई जाए तथा यदि पुलिसकर्मी दोषी पाए जाते हैं तो उनके खिलाफ कठोर कानूनी कार्रवाई की जाए,उन्होंने कहा कि किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में पुलिस और पत्रकार दोनों की अपनी-अपनी संवैधानिक भूमिका है और दोनों के बीच टकराव की स्थिति में कानून के अनुसार निष्पक्ष जांच जरूरी है,उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में सवाल पूछने का अधिकार बचा रहना चाहिए,यदि पत्रकारों को सवाल पूछने से रोका जाएगा या उनके साथ कथित हिंसा होगी तो इससे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को लेकर गंभीर सवाल खड़े होंगे,उन्होंने दिल्ली पुलिस से पूरे मामले की पारदर्शी जांच कर सच्चाई सामने लाने की मांग करते हुए कहा कि दोषी कोई भी हो,कार्रवाई कानून के अनुसार होनी चाहिए,उनका कहना है कि पुलिस की निष्पक्षता और पत्रकारों की सुरक्षा पर जनता का भरोसा कायम रहना लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए बेहद जरूरी है।

दिल्ली पुलिस ने आरोपों को किया खारिज

वहीं मामले में दिल्ली पुलिस का पक्ष अलग है। दक्षिण दिल्ली के डीसीपी की ओर से जारी बयान में कहा गया कि दोनों महिलाओं ने कार्यक्रम स्थल के पास निर्धारित वीवीआईपी मार्ग पर स्कूटी खड़ी कर रास्ते को बाधित किया और बार-बार कहने के बावजूद वाहन नहीं हटाया, पुलिस के अनुसार सुरक्षा प्रोटोकॉल के तहत दोनों को आगे की पूछताछ के लिए स्थानीय थाने ले जाया गया, पुलिस ने यह भी कहा कि मुख्यमंत्री से सवाल पूछने के कारण मारपीट किए जाने के आरोप तथ्यात्मक रूप से गलत,भ्रामक और निराधार हैं, यही वजह है कि अब मामले में आरोप और पुलिस के खंडन के बीच निष्पक्ष जांच की मांग तेज हो गई है, प्रेस क्लब ऑफ इंडिया सहित कई पत्रकार संगठनों ने भी घटना पर चिंता जताते हुए कार्रवाई और निष्पक्ष जांच की मांग की है।

जिंदा आदमी की मौत,हमशक्ल की लाश और करोड़ों का बीमा,आइडिया में दम,लेकिन फिल्म पानी कम

जीवन बीमा योजन' का आइडिया दिलचस्प है और अरशद वारसी समेत कलाकारों का अभिनय मजबूत है, लेकिन कमजोर कॉमेडी, दोहराव, खिंची कहानी और अनुमानित क्लाइमैक्स फिल्म को औसत मनोरंजन से आगे नहीं बढ़ने देते। कुछ फिल्में ऐसी होती हैं जिनका बेसिक आइडिया सुनते ही लगता है कि इससे एक मजेदार और तेज-तर्रार कहानी निकाली जा सकती है। 'जीवन या बीमा कॉन' भी इसी कैटेगरी में आती है। फिल्म की शुरुआत एक ऐसी स्थिति से होती है, जहां दर्शक तुरंत जानना चाहता है कि आखिर मामला क्या है और किरदार इस अजीबोगरीब परिस्थिति तक पहुंचे कैसे। कहानी में गलत पहचान, पैसों की जरूरत, धोखे और अपराध का ऐसा मिश्रण तैयार किया गया है, जिसमें कॉमेडी की अच्छी संभावनाएं थीं। लेकिन फिल्म जितना मजबूत अपना कॉन्सेप्ट लेकर शुरू होती है, उतना प्रभावी ढंग से उसे आगे नहीं ले जा पाती। कुछ हिस्सों में हंसी आती है, कलाकार माहौल संभालते हैं,लेकिन कुल मिलाकर फिल्म एक ऐसी कॉमेडी बनकर रह जाती है जिसमें मजेदार आइडिया तो है,मगर उसे लगातार मनोरंजक बनाए रखने वाली पकड़ गायब है।

क्या है 'जीवन या बीमा कॉन' की कहानी?

फिल्म की कहानी जीवन (अरशद वारसी) और योजना (संजीदा शेख) नाम के एक शादीशुदा जोड़े के इर्द-गिर्द घूमती है। दोनों आर्थिक परेशानियों और कर्ज के बोझ से जूझ रहे हैं और इसी समस्या से निकलने के लिए एक ऐसा प्लान बनाते हैं, जो पहली नजर में उन्हें काफी चालाकी भरा समाधान लगता है। जीवन अपनी मौत का नाटक करने का फैसला करता है और उसकी जगह एक ऐसे शख्स की लाश का इस्तेमाल किया जाता है, जो शक्ल से बिल्कुल उसी जैसा दिखाई देता है। इस तरह दोनों का मकसद जीवन की बीमा राशि हासिल करना है, लेकिन किसी भी गलत तरीके से किए

गए प्लान की तरह यहां भी मामला उम्मीद के मुताबिक नहीं चलता। जिस शख्स को मृत बताकर पूरा खेल रचा गया है, वह वास्तव में भीमा है और उसका अतीत इस दंपति की कल्पना से कहीं ज्यादा पेचीदा है। भीमा का संबंध हीरों की तस्करी से है और उसके पीछे कुछ ऐसे लोग पड़े हैं, जिन्हें अपने हीरे वापस चाहिए। यहीं से जीवन और योजना के घर में मुसीबतों का सिलसिला शुरू होता है। विनायक और मनु नाम के दो लोग इस घर में पहुंचते हैं। उनका मानना है कि भीमा उनके हीरे लेकर फरार हुआ है। अब उनके सामने मौजूद शख्स कौन है, यही सवाल कहानी के हास्य और भ्रम का मुख्य आधार बनता है। क्या वह जीवन है या भीमा? जीवन और योजना अपने बीमा के पैसे तक पहुंच पाएंगे या नहीं? और गायब हीरों का क्या हुआ? फिल्म इन्हीं सवालों के जरिए अपनी कहानी को आगे बढ़ाती है। कहानी में बीमा कंपनी की जांच भी जोड़ी गई है। बीमा की बड़ी रकम हासिल करने के लिए योजना को जांच से बचना है, वहीं घर की मालकिन यशिका की अपनी अलग दिलचस्पी है। इसके साथ पुलिस और अपराधियों की एंट्री कहानी में दांव बढ़ाने की कोशिश करती है। यानी फिल्म के पास घटनाओं की कमी नहीं है, समस्या यह है कि इन सभी हिस्सों को एक मजबूत कॉमिक नैरेटिव में पिरोने का काम उतना असरदार नहीं हो पाया।

अभिनय

अभिनय के मामले में फिल्म की सबसे बड़ी ताकत अरशद वारसी हैं। डबल रोल में वह जीवन और भीमा के बीच फर्क पैदा करने की कोशिश करते हैं और दोनों किरदारों को अलग ऊर्जा देते हैं। जीवन की घबराहट, मजबूरी और अपने बनाए जाल में फंसने वाली बेचैनी अरशद के अभिनय में दिखाई देती है। वहीं भीमा के हिस्से में उनका अंदाज थोड़ा अलग है। अरशद फिल्म के कमजोर हिस्सों में भी अपनी ऊर्जा बनाए रखते हैं और कई बार ऐसा लगता है कि वह अपने अभिनय के दम पर उस दृश्य को बचाने की कोशिश कर रहे हैं, जहां लेखन उतना साथ नहीं देता। संजीदा शेख ने योजना के किरदार में अरशद का साथ दिया है। दोनों के बीच पति-पत्नी की केमिस्ट्री स्वाभाविक लगती है और कई दृश्यों में उनका तालमेल फिल्म को संभालता है। हालांकि योजना का किरदार जिस तरह लिखा गया है, उसमें उसकी समझदारी और प्लानिंग के बजाय कई बार उसके फैसले कहानी को आगे बढ़ाने का आसान जरिया लगते हैं। इससे किरदार में वह मजबूती नहीं आ पाती, जिसकी इस तरह की कहानी में जरूरत थी।विजय राज विनायक के रोल में अपने अनुभव का इस्तेमाल करते हैं। उनके किरदार में डर और हास्य दोनों को साथ रखने की कोशिश की गई है और विजय राज इसे निभाने में सक्षम भी हैं। बृजेंद्र काला के साथ उनकी जोड़ी कई जगह मजेदार लगती है। दोनों की स्क्रीन केमिस्ट्री अच्छी है, लेकिन लगातार एक जैसे कॉमिक बीट्स इस्तेमाल होने की वजह से उनका ट्रैक धीरे-धीरे दोहराव का शिकार हो जाता है। पूजा चोपड़ा यशिका के रूप में ठीक हैं, लेकिन उनका किरदार कहानी में बहुत बड़ा योगदान नहीं देता। उनके हिस्से के कुछ ट्रैक ऐसे लगते हैं जिन्हें कम या बेहतर तरीके से इस्तेमाल किया जा सकता था।

निर्देशन

अभिषेक डोगरा ने कहानी को एक सीमित लोकेशन में रखने का फैसला किया है। फिल्म का बड़ा हिस्सा एक ही घर के भीतर घटता है। ऐसा सेटअप अपने आप में समस्या नहीं है। अगर स्क्रिप्ट मजबूत हो, तो एक कमरे या घर के भीतर भी बेहतरीन कॉमेडी और थ्रिल पैदा किया जा सकता है। लेकिन यहां निर्देशक के सामने सबसे बड़ी चुनौती थी कि सीमित सेटिंग के बावजूद दर्शकों की दिलचस्पी लगातार बनी रहे।शुरुआत में फिल्म यह काम कर लेती है। फेक डेथ, डुप्लीकेट और बीमा घोटाले का सेटअप जिज्ञासा पैदा करता है। जैसे-जैसे नए किरदार घर में दाखिल होते हैं, स्थिति और उलझती है। लेकिन कुछ समय बाद कहानी उसी तरह के भ्रम और गलतफहमी को बार-बार दोहराने लगती है। निर्देशक के पास कई संभावनाएं थीं, खासकर जीवन और भीमा की पहचान को लेकर पैदा होने वाले शक को ज्यादा मजेदार और तनावपूर्ण बनाया जा सकता था। फिल्म का स्क्रीनप्ले भी कई जगह अपने ही सेटअप का फायदा नहीं उठा पाता। कहानी को लगातार नए मोड़ देने की कोशिश तो होती है, लेकिन हर मोड़ उतना प्रभाव नहीं छोड़ता। नतीजा यह होता है कि सेकंड हाफ में फिल्म की गति कम महसूस होने लगती है।

रावण और राम के किरदार को लेकर मुकेश खन्ना ने जताई बड़ी आशंका

भारतीय सिनेमा में जब भी रामायण जैसे धार्मिक और सांस्कृतिक विषयों पर फिल्म या सीरीज बनाने की बात होती है तो दर्शकों की उम्मीदें काफी बढ़ जाती हैं। भगवान राम की कथा करोड़ों लोगों की आस्था से जुड़ी हुई है। ऐसे में आने वाली फिल्म रामायण 2026 को लेकर भी लोगों में जबरदस्त उत्सुकता देखने को मिल रही है। इसी बीच अभिनेता मुकेश खन्ना का एक बयान चर्चा में आ गया है, जिसमें उन्होंने बताया कि उन्होंने अभी तक फिल्म का ट्रेलर नहीं देखा है। मुकेश खन्ना ने कहा कि रामायण केवल एक कहानी नहीं बल्कि करोड़ों लोगों की श्रद्धा और विश्वास का विषय है। इसलिए इस तरह के प्रोजेक्ट को लेकर बहुत सावधानी बरतने की जरूरत होती है। उन्होंने कहा कि अगर किसी भी तरह से प्रस्तुति में गलती हुई तो लोगों की आस्था को चोट पहुंच सकती है।

रामायण को लेकर मुकेश खन्ना की चिंता

मुकेश खन्ना भारतीय टेलीविजन के लोकप्रिय कलाकारों में शामिल हैं। उन्हें खासतौर पर 'शक्तिमान' और पुराने दौर के पौराणिक धारावाहिकों से पहचान मिली। धार्मिक और ऐतिहासिक विषयों पर उनकी अपनी अलग राय रही है। रामायण जैसे विषय पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि यह सिर्फ मनोरंजन का माध्यम नहीं है। भगवान राम का चरित्र भारतीय संस्कृति और जीवन मूल्यों से जुड़ा हुआ है। इसलिए इसे पर्दे पर दिखाने के दौरान निर्माताओं को जिम्मेदारी समझनी चाहिए।

ट्रेलर क्यों नहीं देखा?

मुकेश खन्ना ने बताया कि उन्होंने जानबूझकर फिल्म का ट्रेलर नहीं देखा। उनका कहना है कि वह पहले से कोई राय बनाना नहीं चाहते और बिना पूरी जानकारी के किसी प्रोजेक्ट पर टिप्पणी करना उचित नहीं होगा। उन्होंने यह भी कहा कि अगर किसी प्रस्तुति में रामायण के मूल भाव, मर्यादा और धार्मिक भावना से छेड़छाड़ होती है तो यह लोगों की भावनाओं को प्रभावित कर सकती है।

चिरंजीवी की काका का नया शेड्यूल 7 सितंबर से

डायरेक्टर बॉबी कोली की बहुप्रतीक्षित एक्शन एंटरटेनर फिल्म काका, जिसमें तेलुगु स्टार चिरंजीवी मुख्य भूमिका में हैं,का अगला शेड्यूल 7 सितंबर से हैदराबाद में शुरू होने वाला है। फिल्म के मेकर्स ने इसकी घोषणा की है। मेकर्स ने इंस्टाग्राम पर फिल्म के ऑफिशियल हैंडल से एक पोस्ट शेयर किया, जिसमें लिखा था,हमारा काका 7 सितंबर से हैदराबाद में फिर से एक्शन में होगा! मेगास्टार चिरंजीवी गारू और मुख्य कलाकारों के साथ एक लंबा और अहम शेड्यूल शुरू होने के लिए तैयार है। 13 जनवरी,2027 को दुनिया भर में ग्रैंड रिलीज़। याद दिला दें कि मेकर्स ने कुछ दिन पहले ही फिल्म के टाइटल की घोषणा की थी। फिल्म को प्रोड्यूस कर रहे केव्हीएन प्रोडक्शंस ने एक टाइटल टीज़र के ज़रिए टाइटल की घोषणा की थी और बताया था कि फिल्म अगले साल 13 जनवरी को रिलीज़ होगी। सोशल मीडिया पर टाइटल टीज़र शेयर करते हुए प्रोडक्शन हाउस ने लिखा, मिलिए सुपरवाइज़र सत्यम से, C/O अम्माजी एक्का इंडस्ट्रीज़, रावुलापालेम। काका टीम की ओर से मेगास्टार चिरंजीवी गारू को जन्मदिन की बहुत-बहुत बधाई। टाइटल की झलक अब सामने है। 13 जनवरी, 2027 - संक्रांति रिलीज़। टाइटल टीज़र में चिरंजीवी को अम्माजी एक्का इंडस्ट्रीज़ नाम के झींगा फार्म में काम करते हुए दिखाया गया है। फिल्म में उनका नाम सत्यम है और वह उस जगह पर सुपरवाइज़र के तौर पर काम करते हैं, जहाँ देश के अलग-अलग हिस्सों से आए लोग काम करते हैं। टाइटल टीज़र में एक कर्मचारी

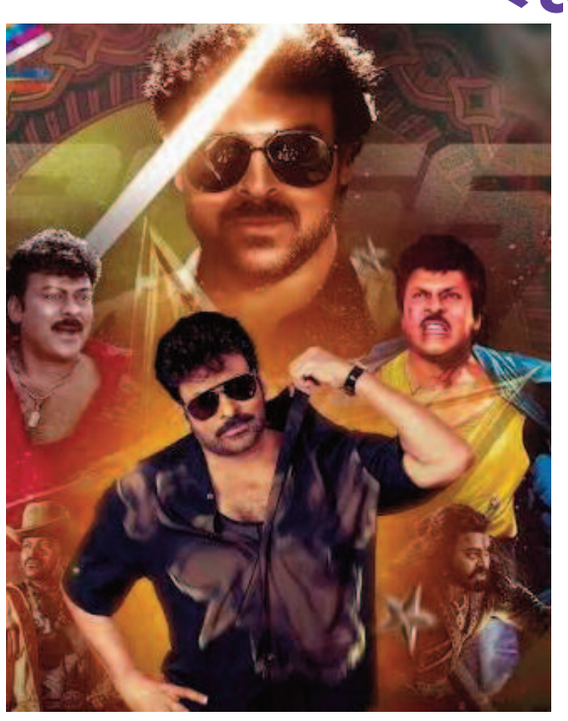

चिरंजीवी को चाबी लौटाने की कोशिश करता है,लेकिन वह चाबी झींगों से भरे पूल में गिर जाती है। इसके बाद चिरंजीवी एक बड़े इलेक्ट्रोमैग्नेट का इस्तेमाल करके चाबी निकालते हुए दिखाई देते हैं। जब से इस फिल्म की घोषणा हुई है, तभी से फैंस और फिल्म प्रेमियों में इसे लेकर काफी दिलचस्पी है और टाइटल टीज़र ने इस उत्साह को और बढ़ा दिया है। फिल्म की यूनिट से जुड़े सूत्रों का कहना है कि फिल्म का पहला हाफ एक शानदार एक्शन सीक्वेंस के साथ खत्म होता है। उनका दावा है कि हाल ही में शूट किया गया यह इंटरवल फाइट सीन फिल्म के मुख्य आकर्षणों में से एक होगा। इस एक्शन सीन को बहुत बड़े पैमाने पर तैयार और शूट किया गया है और उम्मीद है कि यह फिल्म के दूसरे हाफ से पहले एक ज़बरदस्त हाई पॉइंट साबित होगा। सूत्रों का यह भी कहना है कि शुरुआती फुटेज ने टीम का आत्मविश्वास काफी बढ़ा दिया है, क्योंकि कहानी में तीव्रता, मनोरंजन, भावना और एक्शन का सही तालमेल बना हुआ है। अनस्वरा राजन और निवेथा पेथुराज इस फिल्म में अहम भूमिकाएँ निभा रही हैं, जिसे फिलहाल संक्रांति 2027 में रिलीज़ करने की योजना है। शूटिंग के सुचारू रूप से आगे बढ़ने और पहले हाफ की एडिटिंग लगभग पूरी होने के साथ, फिल्म का प्रोडक्शन अब अगले महत्वपूर्ण चरण की ओर बढ़ रहा है। यह दूसरी बार है जब डायरेक्टर बॉबी मेगास्टार चिरंजीवी के साथ काम कर रहे हैं। इससे पहले दोनों ने एक्शन-एंटरटेनर फिल्म वाल्टेयर वीरय्या में साथ काम किया था।

बहुत तकलीफ होती थी,बेवजह फिल्मों से निकाले जाने पर तारा सुतारिया का छलका दर्द

टॉक्सिक एक्ट्रेस तारा सुतारिया ने अपने करियर के शुरुआती दिनों में फिल्मों से बिना बताए हटाए जाने के दर्द को साझा किया।

आज भी नहीं भूलीं संघर्ष के दिन

तारा सुतारिया ने आगे कहा, कई बार तो मुझे निकालने के जो कारण बताए जाते थे, वो बिल्कुल तर्कसंगत नहीं होते थे। मैं आज भी उन चीजों के बारे में सोचती हूं। आप उन घटनाओं को ऐसे चुटकियों में ही पूरी तरह से नहीं भूल सकते हैं। समय बीतने के साथ मैंने एहसास किया कि ऐसा सिर्फ मेरे साथ ही नहीं, बहुत से लोगों के साथ हुआ है।

नहीं मानी दूसरों की सलाह

तारा सुतारिया ने कहा, दूसरों लोगों के साथ भी ऐसे अनुभव रहे हैं,मैं अकेली नहीं हूं। मैंने तो उस समय खुद को निकाले जाने के कारण भी पूछे थे, लेकिन वहां तो अलग ही किस्म के खेल चल रहे थे।

खेल समाचार

टीम इंडिया पहली बार जापान के खिलाफ खेलेगी टी20 आई मैच

नई दिल्ली,04 सितम्बर 2026। बीसीसीआई ने एक बड़ा ऐलान किया है। बोर्ड ने बताया है कि टी 20 इंटरनेशनल मैच में टीम इंडिया एशियन गेम्स से पहले जापान से भिड़ने वाली है। यह मुकाबला सानो इंटरनेशनल क्रिकेट ग्राउंड में खेला जाएगा।

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने शुक्रवार 4 सितंबर को एक बड़ा ऐलान किया है। बीसीसीआई के मुताबिक, एशियन गेम्स में अपने अभियान की शुरुआत करने से पहले भारतीय मेंस क्रिकेट टीम जापान के खिलाफ एक ऐतिहासिक टी20 मैच खेलेगी। एशियन गेम्स में भारत का पहला मुकाबला 28 सितंबर को होना है और उससे ठीक 6 दिन पहले यानी कि 22 सितंबर को जापान के साथ यह मैच खेला जाएगा। मेंस क्रिकेट के इतिहास में यह पहला मौका होगा जब भारत और जापान की टीमें आपस में भिड़ेंगी।

बीसीसीआई ने सोशल मीडिया पर शेयर किया पोस्ट

बीसीसीआई ने अपने आधिकारिक एक्स (ट्विटर) हैंडल पर जानकारी दी है कि भारत और जापान के बीच रिश्तों की 75वीं सालगिरह का जश्न मनाने के लिए यह ऐतिहासिक टी20 मैच आयोजित किया जा रहा है। बोर्ड द्वारा शेयर की गई फोटो के मुताबिक यह मुकाबला मंगलवार 22 सितंबर को जापान के टोचिगी प्रीफेचर स्थित सानो इंटरनेशनल क्रिकेट ग्राउंड में खेला जाएगा। भारतीय

समयानुसार यह मैच सुबह 9:30 बजे शुरू होगा। भारत और जापान के बीच डिप्लोमैटिक रिलेशन के 75 साल पूरे हो रहे हैं। इस खास मौके का जश्न मनाने के लिए दोनों देशों की मेंस क्रिकेट टीमें 22 सितंबर 2026 को जापान के टोचिगी शहर में एक ऐतिहासिक टी 20 इंटरनेशनल मैच खेलेंगी। यह मैच स्पोर्ट 75 नाम की एक नई पहल का हिस्सा है, जिसे जापानी प्रधानमंत्री साने ताकाइची और भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बीच हुई बैठक में तय किया गया था। इसका मुख्य मकसद दोनों देशों के बीच खेल के जरिए रिश्तों और दोस्ती को और मजबूत करना है। साथ ही, यह पहल भारत के साल 2036 में ओलंपिक और पैरालंपिक गेम्स की मेजबानी करने के सपने को ध्यान में रखकर बनाई गई है, ताकि खेल के क्षेत्र में दोनों देश एक-दूसरे की मदद कर सकें।

देवजीत सैकिया ने इंडिया-जापान मैच को लेकर क्या कहा?

बीसीसीआई के सचिव देवजीत सैकिया ने कहा है कि भारतीय क्रिकेट टीम का जापान जाकर यह टी20 मैच खेलना बहुत खुशी और गर्व की बात है। उन्होंने बताया कि यह मैच क्रिकेट को जापान और पूर्वी एशिया के बाकी हिस्सों में लोकप्रिय बनाने का एक शानदार मौका है। भारत और जापान की दोस्ती सालों पुरानी और बेहद मजबूत रही है, और खेल के जरिए इस 75 साल के रिश्ते का जश्न मनाना वाकई में एक खास अनुभव होगा। एशियन गेम्स से पहले भारतीय टीम अफगानिस्तान के खिलाफ 3 मैचों की टी20 सीरीज खेलेगी। इस सीरीज के लिए हाल ही में टीम इंडिया का ऐलान किया गया था।

रियल मैड्रिड ने फर्लैंड मेंडी को किया चैंपियंस लीग के स्क्वॉड से बाहर

मैड्रिड,04 सितम्बर 2026। स्पेनिश फुटबॉल क्लब रियल मैड्रिड के डिफेंडर फर्लैंड मेंडी के भविष्य को लेकर सवाल खड़े हो गए हैं। टीम के कोच जोस मोरिन्हो ने उन्हें चैंपियंस लीग टीम में शामिल नहीं किया है। इस फैसले के बाद माना जा रहा है कि 31 वर्षीय खिलाड़ी जल्द ही क्लब से अलग हो सकते हैं। फर्लैंड मेंडी लंबे समय से चोट की समस्या से जूझ रहे हैं। दाएं पैर के टेंडन की चोट के कारण उनकी सर्जरी हुई थी और वह अभी भी मैदान से बाहर हैं। हालांकि, रियल मैड्रिड ने चोटिल एडर मिलिटाओ और रोड्रिगो को चैंपियंस लीग टीम में जगह दी है, लेकिन मेंडी को बाहर रखा गया है। टीम में मेंडी का नाम नहीं होने से उनके भविष्य को लेकर अटकलें तेज हो गई हैं।

छत्तीसगढ़ की बालिका हॉकी टीम कप के खिताबी मुकाबले में पहुंची

दिल्ली/दुर्ग,04 सितम्बर 2026। मास्टर्स हॉकी कप 2026 में छत्तीसगढ़ की महिला हॉकी टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए फाइनल में प्रवेश कर लिया है। टीम ने प्रतियोगिता में अपने बेहतरीन खेल, मजबूत तालमेल और शानदार रणनीति से सभी को प्रभावित किया है। प्रतियोगिता के पहले मुकाबले में छत्तीसगढ़ महिला हॉकी टीम ने हिमाचल प्रदेश को एकतरफा मुकाबले में 6-0 से करारी शिकस्त दी। इस मुकाबले में छत्तीसगढ़ की खिलाड़ियों ने शुरू से ही आक्रामक खेल दिखाया और विपक्षी टीम को कोई मौका नहीं दिया। हिमाचल प्रदेश के खिलाफ खेले गए मुकाबले में दीपिका,ललिता,अंकिता,बबली,योजना और रुचि ने शानदार प्रदर्शन करते हुए एक-एक गोल दागे। सभी खिलाड़ियों के सामूहिक प्रयास से छत्तीसगढ़ ने बड़ी जीत दर्ज कर टूर्नामेंट में अपनी मजबूत शुरुआत की। इसके बाद खेले गए सेमीफाइनल मुकाबले में छत्तीसगढ़ का सामना महाराष्ट्र की टीम से हुआ। यह मुकाबला काफी रोमांचक रहा, जिसमें दोनों टीमों ने शानदार खेल का प्रदर्शन किया। हालांकि छत्तीसगढ़ की खिलाड़ियों ने दबाव के बीच बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए महाराष्ट्र को 2-1 से हराकर फाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली। सेमीफाइनल मुकाबले में दीपिका और ललिता ने एक-एक गोल कर टीम की जीत में अहम

योगदान दिया। दोनों खिलाड़ियों के शानदार प्रदर्शन की बदौलत छत्तीसगढ़ ने महत्वपूर्ण मुकाबला अपने नाम किया। छत्तीसगढ़ महिला हॉकी टीम के प्रदर्शन को लेकर प्रदेश के खेल जगत में खुशी का माहौल है। खिलाड़ियों ने अपनी मेहनत,अनुशासन और टीम भावना के दम पर प्रतियोगिता में अपनी अलग पहचान बनाई है। टीम में शामिल खिलाड़ियों ने पूरे टूर्नामेंट के दौरान शानदार तालमेल दिखाया है। खिलाड़ियों का कहना है कि उनका लक्ष्य अब फाइनल मुकाबला जीतकर छत्तीसगढ़ के लिए मास्टर्स हॉकी कप 2026 का खिताब हासिल करना है। छत्तीसगढ़ की टीम में मोनिका वैरागड़े,दीपिका वैरागड़े, सविता चंद्राकर,शोभा वार्टी,सुरेखा यादव,ललिता,सुरभि मरकाम,आरती शिण्डे,अंकिता पांडे,योजना,रुचि,बबली कुमारी,हेमलता और सुमन शामिल हैं। खिलाड़ियों के शानदार प्रदर्शन पर प्रदेशवासियों ने भी खुशी जताई है। खेल प्रेमियों को उम्मीद है कि छत्तीसगढ़ की महिला हॉकी टीम फाइनल में भी इसी तरह का प्रदर्शन जारी रखते हुए खिताब अपने नाम करेगी। मास्टर्स हॉकी कप 2026 में छत्तीसगढ़ की यह सफलता प्रदेश में महिला खेल प्रतिभाओं को नई प्रेरणा देने वाली मानी जा रही है। खिलाड़ियों के इस प्रदर्शन से छत्तीसगढ़ का नाम राष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित हुआ है।

न्यायालय नजूल अधिकारी अम्बिकापुर,जिला-सरगुजा,

रा0प्र0क0/..../ 20(1)/2025-26

ईश्तहार

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक / आवेदिका जय भगवान अग्रवाल आ0 / पति स्व0 भागे राम अग्रवाल जाति निवासी देवीगंज रोड़ अम्बिकापुर,तहसील अम्बिकापुर, जिला सरगुजा छ0ग0 के द्वारा आवेदन प्रस्तुत किया गया है कि मोहल्ला-देवीगंज रोड़, शीट नम्बर - 3 नगर अम्बिकापुर स्थित नजूल प्लाट नम्बर 839/4, 840/2 रकबा 0.002,0.024 हे0 भूमि का लीज अवधि दिनांक 31.3.2026 को समाप्त हो गई है। जिस कारण आवेदक / आवेदिका द्वारा लीज अवधि बढ़ाने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है।

अतः उक्त के संबंध में यदि किसी व्यक्ति अथवा संस्था को कोई दावा अथवा आपत्ति हो तो अपना लिखित दावा / आपत्ति स्वयं अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से दिनांक- 08.09.2026 तक इस न्यायालय में उपस्थित होकर प्रस्तुत कर सकते है । नियत तिथि के बाद प्राप्त दावा / आपत्ति पर कोई बिचार नहीं किया जावेंगा ।

आज दिनांकः- 25.08.2026 को मेरे हस्ताक्षर एंव न्यायालीन पदमुद्रा से जारी ।

सील

नजूल अधिकारी ,अंबिकापुर

शिक्षक दिवस पर मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने गुरुजनों के नाम लिखा आत्मीय पत्र

स्लेट...तख्ती और चॉक से स्मार्ट क्लास तक पहुँची शिक्षा,लेकिन शिक्षक की भूमिका आज भी सबसे महत्वपूर्ण : मुख्यमंत्री साय

रायपुर,04 सितंबर 2026। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने पत्र में अपने विद्यार्थी जीवन की स्मृतियों को साझा करते हुए बचपन के संघर्ष,उस दौर में शिक्षा प्राप्त करने की कठिनाइयों और आज शिक्षा के क्षेत्र में आए व्यापक बदलाव का भावपूर्ण उल्लेख किया है। उन्होंने शिक्षकों से आह्वान किया है कि वे प्रत्येक बच्चे के भीतर छिपी संभावनाओं को पहचानें और विशेष रूप से उन बच्चों का हाथ थामें, जो अभाव,संकोच अथवा किसी अन्य कारण से पीछे छूट रहे हैं। मुख्यमंत्री साय ने लिखा है कि आज मुख्यमंत्री के दायित्व का निर्वहन करते हुए जब उन्हें प्रदेश के बच्चों के भविष्य और उनकी शिक्षा से जुड़े निर्णय लेने का अवसर मिलता है,तब अपने बचपन और विद्यार्थी जीवन के वे दिन और अधिक याद आते हैं। जीवन कितना भी आगे बढ़ जाए, अपने शिक्षकों के प्रति आदर और कृतज्ञता का भाव कभी कम नहीं होता।

स्लेट-तख्ती से स्मार्ट क्लास तक:मुख्यमंत्री ने याद किया शिक्षा का बदलता दौर

मुख्यमंत्री साय ने अपने विद्यार्थी जीवन और वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की तुलना करते हुए कहा कि आज पीछे मुड़कर देखने पर यह सुखद अनुभूति होती है कि शिक्षा की दुनिया कितनी बदल गई है। जिस समय उनकी पीढ़ी ने स्लेट, तख्ती और चॉक से पढ़ाई शुरू की थी, आज उसी छत्तीसगढ़ के बच्चे स्मार्ट क्लास में पढ़ रहे हैं। डिजिटल माध्यमों से दुनिया भर के ज्ञान तक उनकी पहुँच बनी है और वे विज्ञान एवं आधुनिक तकनीक से जुड़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि कभी दूरस्थ अंचलों में विद्यालय तक पहुँचना भी बच्चों के लिए चुनौती हुआ करता था, वहीं आज इन क्षेत्रों में बेहतर विद्यालय, आधुनिक शैक्षणिक संसाधन और नए अवसर बच्चों के द्वार तक पहुँच रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि शिक्षा में आए इस व्यापक परिवर्तन के बावजूद एक बात तब भी सत्य थी और आज भी उतनी ही सत्य है- शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण आधार शिक्षक ही है।

बगिया के छोटे से स्कूल से शुरू हुआ शिक्षा का सफर

मुख्यमंत्री साय ने पत्र में अपने बचपन को याद करते हुए बताया है कि उनका जन्म जशपुर जिले के बगिया गाँव के एक साधारण किसान परिवार में हुआ और गाँव के स्कूल से ही उनकी शिक्षा की शुरुआत हुई। जीवन ने बहुत छोटी उम्र में उनकी कठिन परीक्षा ली। जब वे लगभग दस वर्ष के थे और चौथी कक्षा में पढ़ रहे थे,तभी पिता का साया सिर से उठ गया। परिवार,खेती और छोटे भाइयों की चिंता कम उम्र में ही उनके जीवन का हिस्सा बन गई। गाँव में पाँचवीं तक पढ़ने के बाद आगे की शिक्षा के लिए उन्हें कुनकुरी जाना पड़ा। वहाँ लोयोला उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में एक छोटे से कमरे में रहकर पढ़ाई की। आगे भी पढ़ने की इच्छा थी, लेकिन पारिवारिक परिस्थितियों के कारण शिक्षा का क्रम जारी नहीं रख सके। उन्होंने खेती की जिम्मेदारी संभाली और अपने छोटे भाइयों की पढ़ाई को आगे बढ़ाया। मुख्यमंत्री ने कहा कि उस समय गाँव के एक बच्चे के लिए शिक्षा तक पहुँचना आज जितना सहज नहीं था। विद्यालय दूर होते थे,आवागमन के साधन सीमित थे, पढ़ाई के संसाधनों का अभाव था और आर्थिक कठिनाइयाँ भी कई बच्चों के सपनों की राह में बाधा बन जाती थीं।

तकनीक जानकारी दे सकती है,लेकिन शिक्षक ही बच्चे के भीतर आत्मविश्वास जगाता है

मुख्यमंत्री साय ने गुरुजनों की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि तकनीक बच्चों को जानकारी दे सकती है, पुस्तकें उन्हें ज्ञान दे सकती हैं और आधुनिक संसाधन सीखने की राह आसान कर सकते हैं, लेकिन किसी बच्चे के भीतर आत्मविश्वास जगाने, उसके संस्कार गढ़ने, उसकी प्रतिभा पहचानने और उसे एक अच्छा मनुष्य बनाने का सामर्थ्य एक संवेदनशील शिक्षक में ही होता है। उन्होंने कहा कि उनके अपने जीवन में भी गुरुजनों से मिली सीख ने कठिन परिस्थितियों में आगे बढ़ने का साहस दिया। यही कारण है कि वे शिक्षक को केवल पाठ पढ़ाने वाला नहीं, बल्कि जीवन की दिशा दिखाने वाला पथ-प्रदर्शक मानते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार का प्रयास है कि जिन अभावों और कठिनाइयों के कारण कभी किसी बच्चे की पढ़ाई रुक जाती थी, वे आज किसी बच्चे के सपनों के रास्ते में बाधा न बनें। कोई बच्चा केवल इसलिए पीछे न रह जाए कि उसका जन्म किसी छोटे गाँव, वनांचल अथवा दूरस्थ क्षेत्र में हुआ है। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि इसी सोच के साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप छत्तीसगढ़ में शिक्षा को अधिक सहज, आधुनिक, व्यावहारिक और बच्चों की प्रतिभा के अनुकूल बनाने की दिशा में काम किया जा रहा है। मातृभाषा और स्थानीय भाषाओं में सीखने के अवसर बढ़ाए जा रहे हैं। कौशल और व्यावहारिक ज्ञान को शिक्षा से जोड़ा जा रहा है तथा डिजिटल शिक्षा, स्मार्ट क्लास और आधुनिक शैक्षणिक संसाधनों का विस्तार हो रहा है। मुख्यमंत्री ने विशेष रूप से बस्तर का उल्लेख करते हुए कहा कि उन क्षेत्रों में भी विद्यालयों की घंटियाँ फिर सुनाई दे रही हैं, जहाँ परिस्थितियों के कारण वर्षों तक स्कूल बंद रहे थे। यह बदलाव केवल भवन, तकनीक और सुविधाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके केंद्र में प्रत्येक बच्चे को आगे बढ़ने का समान अवसर देने का संकल्प है।

हर बच्चे में छिपी हैं अनगिनत संभावनाएँ : मुख्यमंत्री साय ने शिक्षकों को संबोधित करते हुए कहा कि इस संकल्प को धरातल पर उतारने की सबसे बड़ी शक्ति प्रदेश के शिक्षक हैं। शिक्षक के सामने कक्षा में बैठा हर बच्चा अपने भीतर अनगिनत संभावनाएँ लेकर आता है। कोई भविष्य का वैज्ञानिक हो सकता है,कोई खिलाड़ी,डॉक्टर,किसान, शिक्षक,कलाकार या जनसेवक। उन्होंने कहा कि कई बार बच्चे को स्वयं अपनी क्षमता का पता नहीं होता,लेकिन शिक्षक की पारखी दृष्टि उसकी प्रतिभा पहचान लेती है। शिक्षक द्वारा कहा गया प्रोत्साहन का एक वाक्य भी किसी बच्चे को जीवन भर आगे बढ़ने की शक्ति दे सकता है। मुख्यमंत्री साय ने शिक्षक दिवस पर गुरुजनों से अत्यंत आत्मीय आग्रह करते हुए कहा कि हर बच्चे के भीतर छिपी संभावना को पहचानिए। विशेषकर उस बच्चे का हाथ अवश्य थामिए, जो अभाव में है, संकोच में है या किसी कारण पीछे छूट रहा है। हो सकता है आपका थोड़ा-सा विश्वास उसके पूरे जीवन की दिशा बदल दे। उन्होंने कहा कि एक शिक्षक का विश्वास किसी बच्चे के लिए जीवन की सबसे बड़ी प्रेरणा बन सकता है। इसलिए शिक्षा का उद्देश्य केवल पाठ्यक्रम पूरा करना नहीं, बल्कि बच्चे के व्यक्तित्व, आत्मविश्वास, संस्कार और उसकी क्षमताओं को विकसित करना भी है। मुख्यमंत्री साय ने अपने पत्र में अत्यंत भावपूर्ण ढंग से गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि शिक्षक दिवस पर वे मुख्यमंत्री के रूप में ही नहीं,बल्कि कभी गाँव के एक छोटे से स्कूल में पढ़ने वाले उस विद्यार्थी के रूप में भी सभी गुरुजनों के प्रति कृतज्ञ हैं, जिसने अपने शिक्षकों से मिले संस्कार और सीख को जीवन की पूँजी माना है। मुख्यमंत्री ने कहा कि समय बदल गया है,स्कूल बदल रहे हैं और पढ़ाने तथा सीखने के साधन भी बदल रहे हैं। आने वाले समय में आधुनिक तकनीक इन्हें और अधिक बदलेगी,लेकिन गुरु और शिष्य के बीच विश्वास,स्नेह और संस्कार का जो संबंध भारतीय परंपरा की आत्मा है, उसका महत्व कभी कम नहीं होगा।

हर स्कूल बने सपनों का द्वार,हर कक्षा संभावनाओं का संसार

मुख्यमंत्री साय ने प्रदेश के शिक्षकों से आह्वान किया कि हम सब मिलकर ऐसा छत्तीसगढ़ गढ़ें, जहाँ हर स्कूल सपनों का द्वार बने, हर कक्षा संभावनाओं का संसार बने और हर शिक्षक अपने विद्यार्थी के जीवन में आशा का दीप जलाए। उन्होंने कहा कि शिक्षकों के ज्ञान से बच्चों का भविष्य उज्ज्वल हो, उनके संस्कारों से समाज समृद्ध हो और उनके मार्गदर्शन से छत्तीसगढ़ की नई पीढ़ी आत्मविश्वास के साथ विकसित भारत के निर्माण में अपनी भूमिका निभाए, यही उनकी कामना है। मुख्यमंत्री साय ने शिक्षक दिवस के अवसर पर प्रदेश के सभी गुरुजनों को सादर नमन करते हुए उनके स्वस्थ, सुखी और यशस्वी जीवन की कामना की तथा सभी शिक्षकों और उनके परिवारों को हार्दिक शुभकामनाएँ दी हैं।

हाईकोर्ट बोला...बीमार मां से अलग करने का दबाव मानसिक क्रूरता

7 साल से अलग रह रही पत्नी,पति पर झूठा दहेज केस किया,तलाक मंजूर

बिलासपुर,04 सितंबर 2026। बीमार और बुजुर्ग माता-पिता से अलग रहने का दबाव बनाना और पति पर झूठा आपराधिक केस दर्ज कराना मानसिक क्रूरता की श्रेणी में आता है। शादी एक नया परिवार बनाती है, पति का अपनी बीमार मां को छोड़ने से इनकार करना बिल्कुल स्वाभाविक है।' छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट के जस्टिस एनके चंद्रवंशी ने वैवाहिक विवाद के मामले में अहम फैसला सुनाते हुए यह टिप्पणी की है। इस आधार पर हाईकोर्ट ने पति की तलाक की अर्जी को मंजूर करते हुए पेंड्रा रोड लोअर कोर्ट के फैसले को रद्द कर दिया है। पहले लोअर कोर्ट ने पति को तलाक देने से इनकार कर दिया था। उत्तरप्रदेश के इटावा निवासी विवेक अग्रवाल की शादी 12 दिसंबर 2014 को पेंड्रारोड निवासी महिला से हुई थी। दोनों का एक बेटा भी है। पति का आरोप था कि, पत्नी अक्सर छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा करती थी। उसकी बुजुर्ग और बीमार मां को छोड़कर अलग बड़े घर में रहने का दबाव बनाती थी। जब पति ने अपनी बीमार मां को बेसहारा छोड़ने से इनकार किया, तो विवाद बढ़ गया। 11 अगस्त 2019 को पत्नी बिना सहमति के घर से गहने और कैश लेकर मायके पेंड्रारोड आ गई। बच्चे को इटावा में ही छोड़ दिया। ससुराल नहीं लौटने पर पति ने पेंड्रारोड

के कोर्ट में तलाक की मांग करते हुए आवेदन पेश किया। पति ने क्रूरता के आधार पर तलाक पाने के लिए साल 2022 में पेंड्रारोड के कोर्ट में याचिका लगाई थी। इस मामले में सुनवाई पूरी होने के बाद निचली अदालत ने 18 फरवरी 2025 को अपना फैसला सुनाते हुए पति की तलाक की अर्जी को खारिज कर दिया था। अदालत ने अपने फैसले में माना था कि,पति अपनी पत्नी के खिलाफ लगाए गए क्रूरता के आरोपों को साबित नहीं कर सका है। पेंड्रारोड कोर्ट के इसी फैसले को पति ने हाईकोर्ट में चुनौती दी थी। इस मामले की सुनवाई करते हुए हाईकोर्ट ने कहा कि,शादी एक नया परिवार बनाती है,लेकिन यह व्यक्ति को अपने वृद्ध या बीमार माता-पिता के प्रति नैतिक और कानूनी जिम्मेदारियों से मुक्त नहीं करती।

आम आदमी पार्टी कार्यकारी अध्यक्ष उत्तम जायसवाल ने दिया इस्तीफा

दिल्ली से फैसले थोपने और प्रदेश संगठन की अनदेखी का लगाया आरोप

रायपुर,04 सितंबर 2026। आम आदमी पार्टी के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष उत्तम जायसवाल ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने इस्तीफा पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल और छत्तीसगढ़ प्रभारी मुकेश अहलावत को भेजा है। जायसवाल ने इस्तीफे में पार्टी की मौजूदा कार्यप्रणाली पर नाराजगी जताई है। उनका कहना है कि प्रदेश संगठन और जमीनी कार्यकर्ताओं की राय को नजरअंदाज किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि ऐसी परिस्थितियों में पार्टी के जरिए छत्तीसगढ़ के लिए काम करने का उनका उद्देश्य पूरा होता नहीं दिख रहा।

8 बार जेल गए,विधानसभा से प्रदेश तक संभाली जिम्मेदारी : उत्तम जायसवाल ने कहा कि उन्होंने राजनीतिक सफर एक सामान्य कार्यकर्ता के तौर पर शुरू किया था। संगठन में काम करते हुए विधानसभा और जिला स्तर से लेकर प्रदेश स्तर तक जिम्मेदारियां मिलीं। प्रदेश महासचिव समेत पार्टी की अलग-अलग जिम्मेदारियां उन्होंने निभाईं। उन्होंने इस्तीफे में पार्टी के आंदोलनों और संघर्षों का भी जिक्र किया। उनका दावा है कि आंदोलन के दौरान वे 8 बार जेल गए।

दिल्ली से फैसले, प्रदेश संगठन की राय की अनदेखी का आरोप : जायसवाल ने आरोप लगाया कि छत्तीसगढ़ में संगठन का आंतरिक संवाद कमजोर हुआ है। उनका कहना है कि दिल्ली से आने वाले कुछ लोगों की पसंद-नापसंद के आधार पर फैसले लिए जा रहे हैं, जबकि प्रदेश संगठन और जमीनी कार्यकर्ताओं से पर्याप्त चर्चा नहीं होती। उन्होंने कहा कि महत्वपूर्ण फैसलों में प्रदेश संगठन को भरोसे में नहीं लेने से कार्यकर्ताओं में निराशा और असंतोष बढ़ रहा है।

2023 की गलतियों से भी सबक नहीं लेने का आरोप : जायसवाल ने 2023 विधानसभा चुनाव का हवाला देते हुए कहा कि उस समय पार्टी के पुराने और संघर्षशील कार्यकर्ताओं ने खुद को उपेक्षित और अपमानित महसूस किया था। उन्हें उम्मीद थी कि पार्टी इस अनुभव से सीख लेकर आगे अपनी कार्यप्रणाली बदलेगी। उनका आरोप है कि आने वाले चुनावों की तैयारियों में भी परिस्थितियां उसी दिशा में जाती नजर आ रही हैं।

बोले...सिर्फ पद पर बने रहना मेरे लिए राजनीति नहीं

इस्तीफे में जायसवाल ने कहा कि प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष जैसे महत्वपूर्ण पद पर रहने के बावजूद उन्हें छत्तीसगढ़ को लेकर पार्टी का स्पष्ट रोडमैप, लंबी अवधि की राजनीतिक रणनीति और सकारात्मक विजन नजर नहीं आ रहा। उन्होंने कहा...'केवल पद पर बने रहना मेरे लिए राजनीति नहीं है। पद से अधिक मेरे लिए आत्मसम्मान,मेरा संघर्ष और वर्षों से मेरे साथ खड़े कार्यकर्ताओं का सम्मान महत्वपूर्ण है। 'उन्होंने यह भी कहा कि इस्तीफा किसी व्यक्ति विशेष के विरोध या व्यक्तिगत नाराजगी के कारण नहीं है, बल्कि लंबे राजनीतिक अनुभव और पार्टी की मौजूदा कार्यप्रणाली से पैदा हुई निराशा का परिणाम है। जायसवाल ने कहा कि किसी भी राजनीतिक दल की असली ताकत उसके बड़े पदाधिकारी नहीं, बल्कि जमीन पर काम करने वाले कार्यकर्ता होते हैं। अगर कार्यकर्ताओं का सम्मान और भरोसा खत्म हो जाए तो संगठन की मजबूती सिर्फ कागजों तक सीमित रह जाती है।

शिक्षिका को मिली अंतरिम राहत...बिना सहमति म्यूचुअल ट्रांसफर,तबादला आदेश पर हाई कोर्ट ने लगाई अंतरिम रोक

बिलासपुर,04 सितंबर 2026। छत्तीसगढ़ बिलासपुर हाई कोर्ट ने बिना सहमति म्यूचुअल ट्रांसफर के आधार पर किए गए शिक्षिका के तबादले पर अंतरिम रोक लगा दी है। कोर्ट ने कहा कि याचिकाकर्ता की ओर से यह स्पष्ट दावा किया गया है कि उसने म्यूचुअल ट्रांसफर के लिए न तो आवेदन दिया और न ही सहमति दी। इसके बावजूद तबादला आदेश में 'म्यूचुअल ट्रांसफर' दर्ज किया गया है। कोर्ट ने 25 अगस्त 2026 के ट्रांसफर-कम-डेपुटेशन आदेश के प्रभाव और संचालन पर अगली सुनवाई तक रोक लगाते हुए शिक्षिका को वर्तमान पदस्थापना स्थल पर ही काम जारी रखने की अनुमति दी है। याचिका की अगली सुनवाई के लिए 1 अक्टूबर 2026 को होगी। याचिकाकर्ता राजकुमारी सोनी ने अधिवक्ता ज्ञान प्रकाश शुक्ला के जरिए छत्तीसगढ़ बिलासपुर हाई कोर्ट में याचिका दायर की थी। याचिका में बताया है, वह वर्तमान में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पीडब्ल्यूडी रामपुर, विकासखंड कोरबा में पदस्थ है। 25 अगस्त 2026 को जारी आदेश के तहत उनका तबादला-कम-प्रतिनियुक्ति स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट हिंदी माध्यम विद्यालय, चैतमा, विकासखंड पाली, जिला कोरबा कर दिया गया। वर्तमान पदस्थापना भी उन्हें हाल ही में दिसंबर 2025 में मिली थी। यह पदस्थापना पूर्व 2012 और 2024 से संबंधित न्यायिक कार्यवाही के बाद हुई थी। इसके करीब आठ महीने बाद ही उनका तबादला कर दिया गया। याचिका की सुनवाई जस्टिस बीडी गुरु के सिंगल बेंच में हुई। याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता ज्ञान प्रकश शुक्ला ने कहा, 25 अगस्त के तबादला आदेश में स्थानांतरण का कारण 'म्यूचुअल ट्रांसफर' बताया गया है। जबकि याचिकाकर्ता ने इस प्रकार के पारस्परिक स्थानांतरण के लिए कोई आवेदन नहीं दिया था और न ही तबादले के लिए अपनी सहमति दी थी।

वन तस्करी के सिंडिकेट का भंडाफोड़...तीन आरोपी गिरफ्तार

ओडिशा,एमपी और हरियाणा तक फैला था लकड़ियों का अवैध कारोबार

रायगढ़,04 सितंबर 2026। जिले के वन क्षेत्र से खैर एवं तेंदू प्रजाति के लड़कियों की कटाई और उनके अवैध भंडारण के एक बड़े सिंडिकेट का खुलासा हुआ है। धोखाधड़ी, भारतीय वन अधिनियम और संगठित अपराध की गंभीर धाराओं के तहत तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। यह सिंडिकेट ओड़िशा, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश तक लकड़ियों की कटाई और तस्करी को अंजाम देता था। जिला रायगढ़ के धरमजयगढ़, घरघोड़ा, तमनार वन परिक्षेत्र में ग्रामीणों को पैसों का लालच देकर उनसे पेड़ों की अवैध कटाई कराया जा रहा था। लकड़ियों को रोहित मित्तल अपने गढउमरिया स्थित गोदाम में डंप कर अपने सहयोगी मनीष अग्रवाल के साथ वाहन

मालिक भरत कुमार मेश्राम और सलाउद्दीन खान के साथ इन बेसकीमती लड़कियों को हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और अन्य राज्यों में अधिक मूल्य में ट्रांसपोर्टिंग के जरिए खपाया जा रहा था। आरोपियों ने लड़कियों की अवैध तस्करी को वैध दिखाने के लिए फर्जी तरीके से ट्रांसपोर्ट परमिट (टीपी) बनने और बड़ी चालाकी से राज्य के बाहर बेचकर मुनाफा कमा रहे थे। इस इंटर स्टेट सिंडिकेट का वन विभाग रायगढ़ और जिला पुलिस रायगढ़ ने खुलासा किया है और सिंडिकेट में शामिल मुख्य आरोपी मनीष अग्रवाल, रोहित मित्तल और सलाउद्दीन खान के खिलाफ थाना जूमिल में धोखाधड़ी और वन अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर रिमांड पर भेजा गया। आरोपी भरत कुमार मेश्राम फरार है, जिसकी तलाश में पुलिस जुटी है। जानकारी के अनुसार पिछले वर्ष मई में वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों को सूचना मिली थी कि थाना जूटमिल क्षेत्र अंतर्गत जामटीकरा (गढ़उमरिया) स्थित नरेश वल्द बजरंगलाल अग्रवाल सा. कबीर चौक रायगढ़ के गोदाम को रोहित मित्तल निवासी अग्रसेन कॉलोनी विकास नगर कोतरा रोड रायगढ़ द्वारा किराये पर लिया गया है। आसपास के वनक्षेत्रों से खैर एवं तेंदू प्रजाति के लकड़ियों को कटवाकर गढ़उमरिया स्थित गोदाम में ट्रैक्टर एवं पीकप के माध्यम से अवैध भंडारण किया गया था।

मटकी फोड़ के दौरान नोटों की बारिश युवाओं पर लुटाए गए सवा लाख रुपये!

बिलासपुर,04 सितंबर 2026। छत्तीसगढ़ की न्यायधानी बिलासपुर में कृष्ण जन्माष्टमी के मौके पर मटकी फोड़ कार्यक्रम का आयोजन उत्साह और धूमधाम के साथ किया गया। कार्यक्रम के दौरान युवाओं की टोली पर जमकर नोट बरसाए गए। नोट लुटाए जाने का नजारा देखने और लूटने के लिए बड़ी संख्या में लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी।

सवा लाख रुपये लुटाए जाने की खबर : बताया जा रहा है कि के गोंड़पारा में मटकी फोड़ कार्यक्रम के दौरान करीब सवा लाख रुपये लुटाए गए। जैसे ही युवाओं की टोली मटकी फोड़ने पहुंची, वहां मौजूद लोगों ने उन पर नोटों की बारिश कर दी। इस दौरान पूरे इलाके में उत्साह और जश्न का माहौल देखने को मिला।

नोट लुटाने का वीडियो आया सामने : कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में युवाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। मटकी फोड़ और नोट लुटाने का वीडियो भी सामने आया है, जिसमें बड़ी संख्या में लोग कार्यक्रम का आनंद लेते नजर आ रहे हैं।

रायपुर को सीवेज-ड्रेनेज के लिए मिलेंगे 3500 करोड़ : पहले प्रोजेक्ट बनाकर देना होगा, 16वें वित्त आयोग की योजना में देश के 22 शहर शामिल...

रायपुर,04 सितंबर 2026। रायपुर में सीवेज, नालियों और गंदे पानी की समस्या दूर करने के लिए बड़े प्रोजेक्ट की उम्मीद जगी है। 16वें वित्त आयोग ने रायपुर को देश के 22 शहरों में शामिल किया है, जिन्हें वेस्टवॉटर मैनेजमेंट के लिए स्पेशल इंफ्रास्ट्रक्चर फंड मिलेगा। रायपुर में अधिकतम 3500 करोड़ रुपए तक का प्रोजेक्ट तैयार किया जा सकता है। इसमें

60% यानी 2100 करोड़ रुपए केंद्र सरकार दे सकती है। बाकी 40% यानी 1400 करोड़ रुपए राज्य सरकार और नगर निगम को मिलकर लगाने होंगे। ध्यान रखने वाली बात यह है कि अभी रायपुर को 3500 करोड़ रुपए मंजूर नहीं हुए हैं। यह सिर्फ प्रोजेक्ट की अधिकतम सीमा है। कितनी राशि मिलेगी, यह डीपीआर और प्रोजेक्ट की मंजूरी के बाद तय होगा। इस फंड का इस्तेमाल सामान्य विकास कार्यों में नहीं किया जाएगा। इसका मुख्य फोकस गंदे पानी की निकासी और ट्रीटमेंट पर रहेगा। रायपुर में इससे सीवेज लाइन का नेटवर्क बढ़ाने, गंदे पानी के ट्रीटमेंट प्लांट, ड्रेनेज सिस्टम सुधारने और बारिश के पानी की निकासी से जुड़े काम किए जा सकते हैं। यानी अलग-अलग जगह छोटे काम करने के बजाय पूरे शहर का वेस्टवॉटर सिस्टम बेहतर करने की योजना बनाई जा सकेगी। 16वें वित्त आयोग की गाइडलाइन में आबादी के आधार पर शहरों को इस योजना में शामिल किया गया है। रायपुर को भी पात्र शहरों की सूची में रखा गया है। 15 लाख से कम आबादी वाले पात्र शहरों के लिए 3500 करोड़ रुपए तक के प्रोजेक्ट की सीमा तय की गई है। इसी आधार पर रायपुर के लिए भी अधिकतम सीमा 3500 करोड़ रुपए है। 2026-27 से 2030-31 तक 16वें वित्त आयोग ने देश के शहरी निकायों के लिए कुल 3.56 लाख करोड़ के अनुदान की सिफारिश की है।

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा सांई ऑफ्सेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050,डॉक रजिस्टर्ड क्र.:-13/सरगुजा/डीएन/2026-2028-मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)